॥ श्रीः ॥

इस ग्रन्थको श्री १०८ श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य योगिराज, पूज्यपाद श्री ६ महाराज स्वामी मनीष्यानन्द तीर्थपादपद्ममें ज्योतिष शास्त्रादि प्रमाण पारावारीण धुरीण सर्व्वपारीण नाथपुराधिष्ठित पाण्डेय कुलभूषण पण्डित श्री ६ गङ्गाप्रसाद तनूज ज्योतिषशास्त्रादि प्रवीण पण्डित श्री काशीप्रसाद पाण्डेय तथा परम शास्त्रप्रवीण सकल कार्य्य-दक्ष पण्डित श्री भैरवप्रसाद पाण्डेय तथा परम पटु पण्डित श्री हनु-मानप्रसाद पाण्डेय तत् कनिष्ठानुज श्री परमेश्वरदत्त पाण्डेयने रचना-कर उपहार किया.

समालोचना.

—: ० :—

यह बात सबको भलीभांति विदित है, कि सब भाषाओंका व्याकरण कठिन है, परंतु संस्कृत भाषामें संस्कृत व्याकरण होनेसे संस्कृतके अन-भिज्ञ बालकों को औरभी परम कठिनता होती है ॥ इस हेतु यद्यपि बहुत से सत्पुरुषोंने बहुत कुछ सुगमता के उपाय किये हैं. अर्थात् शब्द रूपावली, धातुरूपावली, समासचक्र, प्रबोधचन्द्रिका, शब्दार्थरत्न, धातु मंजरी, उपक्रमणिका आदि नानाप्रकार की पुस्तकें बनाई हैं. तथापि ऐसी पुस्तक आजतक कोई नहीं देखने में आई है जिसमें कि, प्रचलित भाषामें संक्षेप और सरलरीतिसे व्याकरणके सब विषयोंका पूर्ण रूपसे संग्रह होवे ॥ और बिना ऐसी पुस्तकके प्रथम संस्कृत भाषाके प्रयोग बालकोंको बोध कराना बहुत कठिन पड़ता है ॥ इतना ही नहीं, किन्तु यह भी है कि जो मनुष्य पहिले पहिले केवल वैद्यक, तन्त्र, वेद, आदि शास्त्रभी पढ़ जाते हैं । पर बिना व्याकरणके जाने शास्त्रके आनन्दको नहीं पाते इन सब कारणोंसे सब प्राचीन तथा नवीन ग्रंथोंको भलीभांति देखकर यह " प्रबोधिका " नामकी छोटीसी पुस्तक सब छात्रोंके प्रबो-धार्थ हमारे श्री पण्डित परमेश्वरदत्त पाण्डेयजीने बनाई ।" और इस छो-

टीसी पुस्तकमें व्याकरणके सब विषय हैं अर्थात् वर्णज्ञान, सन्धि, षत्व
णत्व, प्रकरण, शब्दरूप, अव्यय, धातुके दशोंगणोंके रूप, कर्मवाच्य
भाववाचक, सनन्त, यङन्त, यङ्लुगन्त, नामधातु, लकारार्थ, कृदन्त
तद्धित, स्त्रीप्रत्यय, समास, श्लोकान्वय प्रकार, पाठ. आदि.

हरि इच्छासे यह छोटीसी पुस्तक ऐसी बनी है किजो मनुष्य श्रद्धा
श्रमपूर्वक केवल इसी प्रवेशिकाको उपस्थित करेगा उसे व्याकरणके
विषयोंका बोध यहांतक हो जायगा कि वह पुरुष संस्कृतके काव्य कोश
पुराण इतिहास आदिको भलीभांति समझ सकेगा. वर्तमानमें ऐसी पुस्त
की मुझे औरभी आवश्यकता दीख पडती है कि, इलाहाबाद, यु.
वर्सिटीमें संस्कृत अधिक है सो यदि इस " प्रवेशिका " का प्रवेश मिडि
लक्लासके कोर्समें किया जाय तो ऊपरके क्लासके विद्यार्थियोंको बहुत
सहायता तथा सुगमता हो जायगी ॥

वर्तमान समयमें संस्कृत इतिहासका बहुतही कम प्रचार होनेसे हमा
देशके विद्यारसिकोंको यह भी सन्देह होने लगा है, कि अमेरिका आ
देश पूर्वमें ज्ञात न थे । उन्हें यूरोपके निवासियोंने ढूंढ निकाले हैं,उनके
संशय दूर करनेके हेतु श्रीपण्डित परमेश्वरदत्तजीने महाभारत आ
प्राचीन सद् ग्रंथोंसे देशोंके प्राचीन नाम मात्र निकालकर "भूगोल न
मावली" भी इसी प्रवेशिका के अन्तमें प्रवेश कर दी है । जिसमें कि स
कल साधारण जनोंको विस्पष्ट रीतिसे प्राचीन तथा नवीन देशोंके ना
ज्ञात होनेसे उक्त सन्देह आपही न रहे ॥ इस पुस्तकके कर्ता व्याक
ण शास्त्रके पूर्ण ज्ञाता होनेसे, हमारे देशके बालकोंका इस पुस्तक
बहुत कुछ उपकार होगा इसमें कुछ संदेह नही है ॥

नाथूराम गुप्त.
असिस्टेन्ट मास्टर हाईस्कूल.
(होशंगाबाद)

इत्यनुक्रमणिका.

विवाह पद्धति भाषा टीका छपती है ।

वर्षज्ञान भाषाटीका तेजी मंदी वगैरह देखने और नक्षत्रों ग्रहों विचार किं० ८ आ. मा. २ आ.

वैद्यविनोद मूल और भाषा टीका सहित.

" यथानाम तथा गुण " की बात इसही ग्रन्थमें पाई जाती क्यों कि सचमुच इस ग्रन्थमें वे वे परमोपयोगी और अवश्य ज्ञात विषय लिखे गये है जिन्हें देखकर वैद्यको विनोद होता है इस चुटकले तथा अन्य अन्य बातें सर्वदा कंठस्थ रखनेके योग्य हैं. ए वार अवश्य मंगाकर देखिये मूल्य २ रु. डा म. ६ आणे.

वर्षप्रबोध मूल और भाषाटीका सहित.

यह ग्रन्थ ज्योतिषियोंको तेजी मंदी बतानेके लिये परमोपयोगी है इसमें सालभरका सब वृत्तान्त बहुत पूर्ण रीतिसे लिखागया है इस ग्रन्थमें संवत्सर फल, मास, दिन, संक्रान्ति, उत्पात, ग्रहोंकी गति, वक्रता, उदय, अस्त, राशिगमन, भूकम्प तिथियोके अनुसार वर्षाकाज्ञान, मेघोंके आवाहन और बिदाईके मंत्र, मेघशकुन, वायसप्रश्न, इत्यादि वर्षाके जाननेके अनेक उपयोगी विषय लिखे गये हैं. और सब प्रकारके अन्न,धान्य, धातू, कपडा आदिके तेज मंदे होनेका सविस्तार वर्णन है, । बहुत कहां तक कहैं ब्राह्मण लोग इसके अनुसार फल कहकर सिद्ध कहलावेंगे, और व्यापारी अपने क्रय विक्रमें अमित लाभ उठावेंगे । इस ग्रन्थका मूल्य ॥।) डा. म. २)

पं० श्रीधर शिवलालजीने

अपने "ज्ञानसागर" छापखानेमें छापकर प्रसिद्ध

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ प्रवेशिका।

अथ वर्णभेद.

नारायणं नमस्कृत्य कुरुते वै प्रवेशिकाम् ।
बालानां सुखबोधाय दत्तान्तो परमेश्वरः ॥ १ ॥

१. क, अ, इत्यादि हरएक चिन्हों को वर्ण कहते हैं.

२. अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ, इन नव वर्णों-को मूल स्वर कहते हैं.

३. अ, इ, उ, ऋ, ये चार वर्ण ऱ्हस्व और दीर्घ प्लुत अर्थात् एकमात्रक, द्विमात्रक, त्रिमात्रक भेदसे हर एक तीन ३ प्रकारके होते हैं.

४. ऌ ऱ्हस्व प्लुत भेदसे दो ही प्रकारका होता है.

५. ए, ऐ, ओ, औ, ये चारों दीर्घ और प्लुत भेदसे दो २ प्रकारके होते हैं.

६. ऊपर कहे हुये स्वरों को अच् भी कहते हैं.

७. क, ख, ग, घ, ङ कवर्ग—च, छ, ज, झ, ञ
ट, ठ, ड, ढ, ण टवर्ग—त, थ, द, ध, न तवर्ग—प, फ
भ, म, पवर्ग—इन पचीस वर्णों को स्पर्श कहते हैं.

८. य, र, ल, व, इन चार वर्णों को **अन्तस्थ** कहते

९. श, ष, स, ह, इन को **ऊष्मा** कहते हैं.

१०. स्पर्श, अन्तस्थ और ऊष्मा नाम के तेंतीस
र्णोको **व्यंजन** कहते हैं, और अच्रहित व्यंजनों
हल् कहते हैं.

११. स्वर और व्यंजन का यह भेद है कि, स्व
उच्चारण, विना सहायताके होता है, और व्यंजन क
च्चारण, किसी स्वरकी सहायताविना नहीं हो सकता.

१२. य, व, ल, ये तीन वर्ण अनुनासिक, तथा ि
नुनासिक भेदसे दो प्रकारके होते हैं.

१३. स्वरके ऊपरकी एक विन्दु को **अनुस्वार** और
रके आगेके दो विन्दुओं को **विसर्ग** कहते हैं, यथा अं

१४. अ, आ, अ ३, क, ख, ग, घ, ङ और ह
का उच्चारणस्थान कण्ठ है इस लिये ये कण्ठ्य कहा

१५. इ, ई, इ, ३, च, छ, ज, झ, ञ, य, श, इनका उच्चारणस्थान तालु है इस लिये ये **तालव्य** कहाते हैं.

१६. ऋ, ॠ, ऋ ३, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष, इनका उच्चारणस्थान मूर्द्धा है इस लिये ये **मूर्द्धन्य** कहाते हैं.

१७. ऌ, ॡ, ३, त, थ, द, ध, न, ल, स, इनका उच्चारणस्थान दन्त है इस लिये ये **दन्त्य** कहाते हैं.

१८. उ, ऊ, उ, ३, प, फ, ब, भ, म, इनका उच्चारणस्थान ओष्ठ है इस लिये ये **ओष्ठ्य** कहाते हैं.

१९. ए, ए ३, ऐ, ऐ ३, इनका उच्चारणस्थान कण्ठ–तालु है इस लिये ये **कण्ठ्यतालव्य** कहाते हैं.

२०. ओ, ओ ३, औ, औ ३, इनका उच्चारणस्थान कण्ठ–ओष्ठ है इस लिये ये **कण्ठ्यओष्ठ्य** कहाते हैं.

२१. व का उच्चारणस्थान दन्त–ओष्ठ है इस लिये यह **दन्त्य–ओष्ठ्य** कहाता है.

२२. अनुस्वार का उच्चारणस्थान नासिका है इस लिये इसे **आनु–नासिक्य** कहते हैं.

२१. विसर्ग जिस वर्ण के आगे रहे, उस वर्ण का जो उच्चारणस्थान सो विसर्गों का भी उच्चारणस्थान होता है.

२४. ङ, ञ, ण, न, म, इन का उच्चारणस्थान न का है इस लिये ये आनुनासिक्य कहाते हैं.

ङ का कण्ठ, ञ का तालु, ण का मूर्द्धा, न का

म का ओष्ठ भी उच्चारणस्थान हैं.

अथ प्रयत्नज्ञान।

२५. वर्णों के उच्चारण करने में दो प्रकार के यत्न हैं; (पहिला) वर्णोंके उत्पन्न होनेके पहिले उसको

न्तर कहते हैं; (दूसरा) बाह्य अर्थात् वर्णोंके

होनेके समय जो यत्न होता है.

२६. आभ्यन्तर प्रयत्न पांच प्रकारके हैं, यथा— ईषत्स्पृष्ट, विवृत, ईषद्विवृत, संवृत. बाह्य प्रयत्न प्रकारके हैं, यथा—विवार, संवार, श्वास, नाद, अघोष, अल्पप्राण और महाप्राण.

२७. स्पर्श वर्णों का स्पृष्ट प्रयत्न है. अन्तस्थ वर्णों का ईषत्स्पृष्ट है. स्वरों का विवृत प्रयत्न है. ऊष्मा वर्णों का ईषद्विवृत प्रयत्न है. के ह्रस्व अकार का संवृत प्रयत्न है.

क, च, ट, त, प, इनका विवार, श्वास, अघोष, अ प्राण, प्रयत्न हैं

ख, छ, ठ, थ, फ, श, ष, स, इनका विवार, श्वास, ग्घोष और महाप्राण प्रयत्न है.

घ, झ, ढ, ध, भ, ह, इनका सम्वार, नाद, घोष, महाप्राण प्रयत्न है.

ज, ड, द, ग, ब, ङ, ञ, ण, न, म, य, र, ल, व, इनका सम्वार, नाद, घोष और अल्पप्राण प्रयत्न है. ये सब बाह्य प्रयत्न के भेद हैं.

२८. जिन जिन वर्णोंका कण्ठ आदि स्थान और आभ्यन्तरप्रयत्न तुल्य होवे वे परस्पर सवर्ण कहाते हैं और सवर्ण वर्णों में यदि एक का भी उच्चारण करें तो बाकी सवर्णियों का भी बोध होता है.

२९. वर्णों का उच्चारण स्पष्ट और निज २ स्थानसे करना चाहिये.

इतिवर्णभेदः ।

अथ संधिप्रकरणम्.

१. वर्ण अत्यन्त निकट होने से परस्पर मिल जाते हैं; उनके मिलनेसे जो कुछ विकार होता है उस को संधि कहते हैं.

२. संधि तीन प्रकारकी होती है; अर्थात् स्वरसंधि, व्यंजन संधि और विसर्गसंधि.

३. स्वर का स्वर के साथ जो संयोग, उसे स्वरसंधि

कहते हैं. स्वर का स्वर के साथ संधि न होने को प्रकृ
भाव कहते हैं.

४. व्यंजन का स्वर के साथ अथवा व्यंजन के स
जो संयोग होता है उसे **व्यंजनसंधि** कहते हैं.

५. स्वर अथवा व्यंजन के साथ जो विसर्गका संयो
उसे **विसर्गसंधि** कहते हैं.

स्वरसंधि.

अत्यौदार्य्यम् । नदी + अम्बु = नद्यम्बु । देवी + आगता = देव्यागता । गर्मी + उत्तम = सत्युत्तम । शशी + ऊर्ध्वगः = शश्यूर्ध्वगः । वही + प्रगमः = वल्पगमः । गोपी + एषा = गोप्येषा । वही + ऐरावतः = वल्यैरावतः । सरसी + ओघः = सरस्योघः । वाणी + औचित्यम् = वाण्यौचित्यम् । मधु + अरिः = मध्वरिः । सु + आगतम् = स्वागतम् । अनु + इत = अन्वित । साधु + ईरितम् = साध्वीरितम् । भानु + ऋते = भान्वृते । अनु + एषणम् = अन्वेषणम् । मधु + ऐधिष्ट = मध्वैधिष्ट । भवतु + ओदनम् = भवत्वोदनम् । ददातु + औषधं = ददात्वौषधम् । सरयु + अम्बु = सरय्वम्बु । वधू + आदि = वध्वादि । तनु + इन्द्रियम् = तन्विन्द्रियम् । तनु + ईपः = तन्वीपः । वधू + ऐक्षत = वध्वैक्षत । सरयू + ओघः = सरय्वोघः । वधू + औदार्य्यम् = वध्वौदार्य्यम् । पितृ + अनुमति = पित्रनुमति । मातृ + आदेशः = मात्रादेशः । धातृ + इच्छा = धात्रिच्छा । मातृ + उपदेशः = मात्रुपदेशः । पितृ + ऊढः = पित्रूढः । पितृ + एषणा = पित्रेषणा । धातृ + ऐश्वर्यम् = धात्रैश्वर्यम् । लृ + आकृतिः = लाकृतिः

१२. ए, ऐ, ओ, औ, इनसे यदि कोई भी स्वर परे रहे तो क्रमसे ए को अय्, ओ को अव्, ऐ को आय् और औ को आव् होता है, यथा;—

[illegible] + अति = जयति । ने + अनं = नयनम् । शे + इतः = [illegible] पो + अनः = पवनः । पो + इत्रं = पवित्रं । गौ[illegible] [illegible]ः । पौ + अकः = पावकः । भौ + उकः = भा[illegible] [illegible]कः = नायकः । विनै + अकः = विनायकः ।

दीर्घ[illegible] ए, अ[illegible] अर् होते[illegible]

१३. यदि ह्रस्व अकार परे रहते पदके अन्तमें एकार
किंवा ओकार रहें तो अकार ए में तथा ओ में मिल जाता
है, और मिलने पर अकार का रूप ऐसा ऽ (अवग्रह)रह
जाता है यथा;—

सखे + अर्पय = सखेऽर्पय। विष्णो + अव=विष्णोऽव। गुरो +
अनुमन्यस्व=गुरोऽनुमन्यस्व।

१४. यदि आगे स्वर पर रहे तो पदान्त में वर्तमान गो
शब्दके ओकार के स्थान में अव् आदेश होता है, यथा;—

गो + अग्रम् = गव + अग्रम् = गवाग्रम्। गो + इन्द्रः=गव+
इन्द्रः = गवेन्द्रः। गो + अक्षः = गव + अक्षः = गवाक्षः।

१५. आह्वान वाक्य के अन्त्य स्वरको प्लुत होता है और
प्लुत के स्थानमें प्रकृतिभाव होता है अर्थात् कोई भी संधि-
कार्य नहीं होते हैं और हे, है, भो, ये सम्बोधनसूचक पद
वाक्य के पूर्व या परमें लगाये जाते हैं, यथा;—

हे राम अत्र एहि हे राम ३ अत्र एहि। हे देव एहि हे देव ३
एहि। भो नारायण अत्र आगच्छ भो नारायण ३ अत्र आगच्छ।
हे शिव हे शिव ३। राम है राम है ३।

१६. स्वर परे रहे तो ईकारान्त वा ऊकारान्त वा एका-
रान्त द्विवचनको प्रकृतिभाव होता है, यथा;—

हरी + एतौ = हरी एतौ। गंगे + अमू = गंगे अमू। विष्णू + -
= विष्णू इमौ। इमौ + एधेते = इमौ एधेते। अमू + आसाते =
आसाते। पचेते + इमौ = पचेते इमौ।

१७. यदि स्वर परे रहे तो अदस् शब्दका द्विवचन
हुवचन ई ऊ को प्रकृतिभाव होता है, यथा;—

अमी + ईशाः = अमी ईशाः। अमू + आसाते = अमू आसा

इति स्वरसंधिः।

अथ व्यंजनसंधिः।

(व्यंजन संधिमें जो वर्ण लिखा है सो सब व्यंजन समझना.)

१८. यदि सकार वा त, थ, द, ध, न, इन वर्णों को श वा च, छ, ज, झ, ञ, इनका योग हो तो स के स्थान में श और त, थ, द, ध, न, के स्थान में क्रमसे च, छ, ज, झ, ञ, होते हैं, यथा;—

हरिस् + शेते = हरिश्शेते, रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति, सत् + चित् = सच्चित्, भवत् + चरणम् = भवच्चरणम्, तत् + छलनम् = तच्छलनम्, सरित् + जालम् = सरिज्जालम्, महत् + झनत्कारः = महज्झनत्कारः, भवान् + जीवतु = भवाञ्जीवतु, शार्ङ्गिन् + जय = शार्ङ्गिञ्जय।

१९. यदि सकार वा त, थ, द, ध, न, इन वर्णों को षकार और ट, ठ, ड, ढ, ण, इन वर्णों का योग हो तो स

के स्थानमें प और त, थ, द, ध, न, के स्थानमें क्रमसे ट, ठ, ड, ढ, ण, होते हैं. यथा;—

रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः, रामस् + टीकते = रामष्टीकते, पेष् + ता = पेष्टा, तत् + टीका = तट्टीका, एतत् + टक्कुरः = एतट्टक्कुरः, उत् + डीनम् = उड्डीनम्, चक्रिन् + ढौकते = चक्रिण्ढौकते।

२०. यदि पदके अन्त्यमें क, च, ट, त, प, ये वर्ण रहें तो इनको क्रमसे ग,ज,ड,द,ब, ये आदेश होते हैं. यथा;—

दिक् + गज = दिग्गज, वाक् + ईशः = वागीशः, धिक् + याचना = धिग्याचना, निच् + सु = निज्सु, षट् = षड्, तत् = तद्, अप् + जा = अब्जा।

२१. यदि ङ, ञ, ण, न, म, ये वर्ण पर में रहें तो पदके अन्तके स्पर्श वर्णों के स्थानमें स्पर्श वर्ण के स्थानवाला ङ, ञ, न, म, वर्ण होता है. यथा;—

प्राक् + मुख = प्राङ्मुख, वाक् + मयं = वाङ्मयं, जगत् + नाथ = जगन्नाथ, उत् + मत्त = उन्मत्त, चित् + मयं = चिन्मयं।

२२. यदि ह्रस्व स्वर से परे छ होवे तो उसे चसहित छ होता है, और कहीं दीर्घ स्वरसे परे भी चसहित छ होता है, यथा;—

हरि + छाया = हरिच्छाया, अव + छेद = अवच्छेद, गृह + छिद्र = गृहच्छिद्र, लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया।

२३. यदि पदके अन्त्य त, द वा न से परे शकार हो तो श का छ होता है और त वा द के स्थानमें च और न के स्थानमें ञ होता है. यथा;—

सत् + शास्त्रम् = सच्छास्त्रम्, उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट, तद् + शरीरम् = तच्छरीरम्, महान् + शब्दः = महाञ्छब्दः, धावत् + शशः = धावच्छशः ।

२४. यदि त,द,न से परे ल होवे तो त, द के स्थानमें ल होता है और न के स्थानमें अनुनासिक लँ होता है.यथा;-

तत् + लयः = तल्लयः, उत् + लिखति = उल्लिखति, तद् + लीलायितं = तल्लीलायितं, महान् + लाभः = महाँल्लाभः, भवान् + लिखति = भवाँल्लिखति ।

२५. यदि न से त अथवा थ परे होवे तो पद के अन्त्यस्थित न के स्थानमें स होता है, और उस के पूर्वस्वर को अनुस्वार अथवा अनुनासिक होता है. यथा;—

पतन् + तरुः = पतँस्तरुः, महान् + तडागः = महाँस्तडागः, चक्रिन् + तारय = चक्रिँस्तारय ।

२६. ह्रस्व वर्णसे परे यदि ङ,ण, न, होवे और उनसे फिर स्वर हो तो ये तीनों वर्ण द्वित्व हो जाते हैं. यथा;—

प्रत्यङ् + आत्मा = प्रत्यङ्ङात्मा, सुगण + ईशः = सुगण्णी-

गः, मन् + अच्युतः = मन्नच्युतः, स्मरन् + उवाच= स्मरन्नुवाच, सुजन् + एपने = सुजन्नेपने।

२७. यदि पद के अन्त्य के क, च, ट, त, प. से परे ह रहे तो ह के स्थानमें पूर्व वर्ग का चौथा वर्ण होता है, और क,च,ट,त,प के स्थानमें क्रमसे ग,ज,ड,द,ब,होते हैं.यथा;—

वाक् + हरिः = वाग्घरिः, स्वच् + हननम् = स्वज्झननम्, उत् + हरणं = उद्धरणम्, तत् + हितम् = तद्धितम्, अप् + हसति= अब्भसति।

२८. स्पर्श वर्ण पर रहे तो न् वा म् के स्थान में अनुस्वार होता है यथा;—

किम् + करोषि = किंकरोषि, गृहम् + गच्छ = गृहंगच्छ, क्षिप्रम् + चलति = क्षिप्रंचलति, शत्रुम् + जहि = शत्रुंजहि, नदीम् + तरति = नदींतरति, चन्द्रम् + पश्यति = चंद्रंपश्यति, शान् + तः = शान्तः, पयान् + सि = पयांसि।

२९. यदि स्पर्श वर्ण अनुस्वार से परे रहें तो अनुस्वार के स्थानमें पर वर्गका पांचवा वर्ण होता है, यथा;—

अहं + कारः = अहङ्कारः, सं + तोष = सन्तोष, किं + चित् = किञ्चित्, सं + गम = सङ्गम, सं + चय = सञ्चय, धनं + ददाति= धनन्ददाति, स्तनं + धयति = स्तनन्धयति, गुरुं + नमति = गुरुन्नमति, सं + पत् = सम्पत्, किं + फलम् = किम्फलम्, शास्त्रं + मीमांसते = शास्त्रम्मीमांसते।

अथ विसर्गसन्धिः ।

३०. स्वर वा व्यंजन परे रहते जो विसर्ग में विकार होता है उसे **विसर्गसंधि** कहते हैं ।

३१. यदि इकार वा उकारपूर्वक **विसर्ग** से परे **कवर्ग** अथवा **पवर्ग** रहें तो विसर्ग के स्थानमें प्रायः **षकार** होता है, यथा;—

निः + कारणम् = निष्कारणम्, निः + पतति = निष्पतति, निः + फलम् = निष्फलम् ।

३२. यदि विसर्ग से परे च वा छ रहे तो विसर्ग को श, और ट, ठ, परे रहे तो ष, और त, थ, परे रहे तो स होजाता है, यथा;—

निः + चल = निश्चल, निः + छलम् = निश्छलम्, धनुः + टंकारः = धनुष्टंकारः, भग्नः + ठक्कुरः = भग्नष्ठक्कुरः ।

३३. यदि विसर्ग से परे ग, घ, ज, झ, ड, ढ, द, ध, ब, भ, ङ, ञ, ण, न, म, य, र, ल, व, ह, ये वर्ण होवें तो **विसर्ग** के स्थानमें उ होजाता है और फिर अ और उ मिलकर **ओ** होजाता है यथा;—

शोभनः + गन्धः = शोभनोगंधः, नूतनः + घटः = नूतनोघटः, सद्यः + जातः = सद्योजातः, मधुरः + झनत्कारः = मधुरोझन-

स्कारः, नवः + डमरुः = नवोडमरुः, गजः + ढौकते = गजोढौकते, मूर्द्धन्यः + नकारः = मूर्द्धन्योनकारः, निर्वातः + दीपः = निर्वातोदीपः, अश्वः + धावति = अश्वोधावति, उन्नतः + नगः = उन्नतोनगः, दृढः + बन्धुः = दृढोबन्धुः —, कुतः + भयम् = कुतोभयम्, अतीतः + मासः = अतीतोमासः, कृतः + यत्नः = कृतोयत्नः, शीतः + वायुः = शीतोवायुः, वामः + हस्तः = वामोहस्तः, मनः + हरति = मनोहरति ।

३४. यदि अ अथवा आ से परे विसर्ग रहे और विसर्ग से परे स्वर अथवा व्यंजन रहे तो विसर्ग का लोप होता है और लोप होने पर फिर सन्धि नहीं होती, यथा;—

कुतः + आगतः = कुतआगतः, नरः + इव = नरइव, कः + ईहते = कईहते, चन्द्रः + उदेति = चन्द्रउदेति, इतः + ऊर्द्धम् = इतऊर्द्धम्, देवः + ऋषिः = देवऋषिः, कः + एषः = कएषः, कुतः + ऐक्यम् = कुतऐक्यम्, रक्तः + ओष्टः = रक्तओष्टः, राज्ञः + औदार्य्यम् = राज्ञऔदार्य्यम्, अश्वाः + अमी = अश्वाअमी, गजाः + इमे = गजाइमे, ताराः + उदिताः = ताराउदिताः, ऋषयः + आगताः = ऋषयआगताः, नराः + एते = नराएते, हताः + गजाः = हतागजाः, श्रीताः + पटाः = श्रीतापटाः पुत्राः + जाताः = पुत्राजाताः = नवाः + डमरवः = नवाडमरवः, निर्वानाः + दीपाः = निर्वानादीपाः, अश्वाः + धावन्ति = अश्वाधावन्ति, उन्नताः + नगाः = उन्नतानगाः, दृढाः + बन्धाः = दृढाबन्धाः, नराः +

भीताः = नराभीताः, अतीताः + मासाः = अतीतामासाः = रथाः + एताः = रथाएताः, वराः + लभन्ते = वरालभन्ते, वाताः + वान्ति = वातावान्ति, बालकाः + हसन्ति = बालकाहसन्ति ।

३५. अ से परे जो विसर्ग उसको उ होता है. यदि विसर्ग से परे ह्रस्व अकार रहे तो और फिर अ और उ मिलकर ओ हो जाता है और पर अ ओ में मिलजाता है और उसका स्वरूप (ऽ अवग्रह) ऐसा रह जाताहै यथा;—

शिवः + अर्च्यः = शिवउअर्च्यः = शिवो + अर्च्यः = शिवोऽर्च्यः, नवः + अङ्कुरः = नवउअङ्कुरः नवो + अङ्कुर = नवोऽङ्कुरः, नरः + अयनम् = नरउअयनम् नरो + अयनम् = नरोऽयनम्, वेदः + अधीतः = वेदउअधीतः वेदो + अधीतः = वेदोऽधीतः ।

३६. अ आ को छोडकर अन्य स्वर से परे जो विसर्ग उसके स्थान में र् होताहै यदि स्वर अथवा ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म ये वर्ण परे रहें तो यथा;—

कविः + अयम् = कविरयम्, गतिः इयम् = गतिरियम्, रविः + उदेति = रविरुदेति, श्रीः + असौ = श्रीरसौ, सुधीः + एषः = सुधीरेषः, बन्धुः + आगतः = बन्धुरागतः, गुरुः + उवाच = गुरुरुवाच, भूः + इयम् = भूरियम्; रवेः + उदयः = रवेरुदयः, तैः + उक्तम् = तैरुक्तम्, विधोः + अस्तगमनम् = विधोरस्तगमनम्, प्रभोः आदेशः = प्रभोरादेशः, गौः + अयनम् = [illegible], रविः +

णम् = हविर्भ्राणम्, गुरुः + जयति = गुरुर्जयति, रवेः + दर्शनम् = रवेर्दर्शनम्, निः + धनम् = निर्धनम्, दुः + नीतिः = दुर्नीतिः, निः + बन्धुः = निर्बन्धुः, निः + भयः = निर्भयः, बहिः + योगः = बहिर्योगः, विधुः + लीयते = विधुर्लीयते, वायुः + वाति = वायुर्वाति, शिशुः + हसति = शिशुर्हसति।

३७. रेफ से परे यदि रेफ रहे तो पूर्व रेफ का लोप होता है और रेफ के पूर्व यदि अ, इ, उ, ये स्वर रहें तो इनको दीर्घ होता है यथा;—

पुनर् + रमते = पुनारमते, हरिर् + रम्यः = हरीरम्यः, निर् + रोगः = नीरोगः, विधुर् + राजते = विधूराजते, मातुर् + रोदनम् = मातूरोदनम्, पितर् + रक्ष = पितारक्ष।

३८. यदि स और एष शब्दों के विसर्ग से परे अकार को छोडकर कोई स्वर वा व्यंजन होवें तो स और एष शब्दों से परे जो विसर्ग उसका लोप होता है और लोप होने पर फिर संधि नहीं होती है, यथा;—

सः + आगतः = सआगतः, सः + इच्छति = सइच्छति, सः + ईहते = सईहते, सः + उवाच = सउवाच, सः + करोति = सकरोति, सः + चलति = सचलति, सः + हसति = सहसति, एषः + आयाति = एषआयाति, एषः + एति = एषएति, एषः + वदति = एषवदति, एषः + शेते = एषशेते, एषः + हसति = एषहसति।

३९. यदि स्वर परे रहे तो सः शब्द के विसर्ग का

लोप होता है और लोप होने पर यथाप्राप्त संधि भी होती है, यदि श्लोक के पाद की पूर्णता होती हो तो. यथा;—

सः + एषदाशरथीरामः = सैषदाशरथीरामः, सः + एष राजायुधिष्ठिरः = सैषराजायुधिष्ठिरः, सः + एष कर्णो महा त्यागी = सैष कर्णो महा त्यागी, सः+ एष भीमो महाबली = सैष भीमो महाबली, सः + अहमाजन्मशुद्धानाम् = सोऽहमाजन्मशुद्धानाम् ।

अथ षत्व णत्व प्रकरणम्.

१. यदि अ आ को छोडकर किसी स्वर वा कवर्ग वा ह य व र ल से परे पदान्त स् अथवा आदेश का स अथवा प्रत्यय का अवयव् जो स् उसके स्थानमें ष् होता है. यथा;

मुनि + सु = मुनिषु, नदी + सु = नदीषु, गुरु + सु = गुरुषु, वधू + सु = वधूषु, दातृ + सु = दातृषु, शक्ल + सु = शक्लृषु, नरे + सु = नरेषु, गो + सु = गोषु, ग्लौ + सु = ग्लौषु, दिक् + सु = दिक्षु, गी + र्सु = गीर्षु, कमल् + सु = कमल्षु ।

२. अनुस्वार और विसर्ग मध्य में रहने से भी स के स्थानमें ष होता है, यथा;—

हवीं+सि = हवींषि, धनूं + सि = धनूंषि, आसीः+ सु=आसीःषु

३. यदि स्वर अथवा कवर्ग, पवर्ग वा ह य व र इन वर्णोंमेंसे किसी एक या दो के मध्य में रहने पर भी रेफ वा ष से परे जो नकार उसको ण होता है, यथा;—

रामा + नाम् = रामाणाम्, चतु + र्नाम् = चतुर्णाम्, पूष् + ने = पूष्णे, हरी + नाम् = हरीणाम्, गुरु + ना = गुरुणा, पितृ + नाम् = पितृणाम्, नृ + नाम् = नृणाम्, मृगेन = मृगेण, अर्केन = अर्केण, रेफेन = रेफेण, दर्भेन = दर्भेण, द्रुमेन = द्रुमेण, रयेन = रयेण, गर्व्वेन = गर्व्वेण।

यदि पद के अन्त्यमें न होवे तो ण नहीं होता, यथा;—
रामान्, हरीन्, गुरून्, पितॄन्, साधून्।

इति संधिप्रकरणम्.

अथ सुबन्तप्रकरणम्.

१. शब्दसाधन उसे कहते हैं जिसमें शब्दों के भेदव्यवस्था और व्युत्पत्ति का वर्णन होता है.

२. कान से जो सुनाई देता है उसे शब्द कहते हैं, परन्तु व्याकरण में उन शब्दों का विचार किया जाता है जिनका कुछ अर्थ होता है.

३. विभक्तिहीन शब्दों को नाम वा प्रातिपदिक कहते हैं.

४. विभक्तिसहित शब्द को पद वा सुबन्त कहते हैं.

५. विभक्ति आठ प्रकार की है. यथा;—
प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, सम्बोधन.

६. एक २ विभक्ति में तीन २ रूप होते हैं एकवचन, द्विवचन और बहुवचन.

७. शब्द में एकवचन की विभक्ति होने से एक वस्तु का बोध, द्विवचन की विभक्ति होने से दो वस्तुओंका और बहुवचन की विभक्ति होने से अनेक वस्तुओंका बोध होता है.

विभक्तिके रूप.

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
स्	औ	अः	प्रथमा.
अम्	औ	अः	द्वितीया.
आ	भ्याम्	भिः	तृतीया.
ए	भ्याम्	भ्यः	चतुर्थी.
अः	भ्याम्	भ्यः	पंचमी.
अः	ओः	आम्	षष्ठी.
इ	ओः	सु	सप्तमी.

सम्बोधन में प्रथमा कारक होता है परन्तु एक वचन के रूपमें भेद होता है.

अथ अकारान्त पुंलिंग राम शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
रामः	रामौ	रामाः	प्रथमा.
रामम्	रामौ	रामान्	द्वितीया.
रामेण	रामाभ्याम्	रामैः	तृतीया.
रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः	चतुर्थी.
रामात्, रामाद्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः	पंचमी.
रामस्य	रामयोः	रामाणाम्	षष्ठी.
रामे	रामयोः	रामेषु	सप्तमी.
हे राम	हे रामौ	हे रामाः	सम्बोधनम्.

इसी प्रकार अनिल, घट, पट, दिवाकर, कुबेर, खगे

धर, अमीर, शैल, देव, अमर इत्यादि और शब्दभी जानना.

आकारान्त शब्द दो प्रकार के हैं एक धातु से बनाया जाता है और दूसरे आपही सिद्ध हैं.

धातु से बने हुये शब्दों से यदि अस् आदि अजादि विभक्ति परमें रहें तो आ का लोप होकर पूर्व व्यंजन परस्वरमें मिल जाता है. अथ धातुसिद्ध आकारान्त पुंलिंग विश्वपाशब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	वहुवचन.	कारक.
विश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपाः	प्रथमा.
विश्वपाम्	विश्वपौ	विश्वपः	द्वितीया.
विश्वपा	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभिः	तृतीया.
विश्वपे	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः	चतुर्थी.
विश्वपः	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः	पंचमी.
विश्वपः	विश्वपोः	विश्वपाम्	षष्ठी.
विश्वपि	विश्वपोः	विश्वपासु	सप्तमी.
हे विश्वपाः	हे विश्वपौ	हे विश्वपाः	सम्बोधनम्.

इसी प्रकार सोमपा, वायुवा, अनिलमा, कीलालपा, शंखध्मा, वाणला, कुटिलद्रा, तण्डुलस्ना, इत्यादि और भी आकारान्त शब्द जानना.

आपही सिद्ध आकारान्त शब्दका रूप.

एकवचन.	द्विवचन.	वहुवचन.	कारक.

हाहाः	हाहौ	हाहाः	प्रथमा.
हाहाम्	हाहौ	हाहान्	द्वितीया.
हाहा	हाहाभ्याम्	हाहाभिः	तृतीया.
हाहे	हाहाभ्याम्	हाहाभ्यः	चतुर्थी.
हाहाः	हाहाभ्याम्	हाहाभ्यः	पञ्चमी.
हाहाः	हाहौः	हाहाम्	षष्ठी.
हाहे	हाहौः	हाहासु	सप्तमी.
हे हाहाः	हे हाहौ	हे हाहाः	सम्बोधनम्.

इसी प्रकार और भी जानना.

इकारान्त मुनिशब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
मुनिः	मुनी	मुनयः	प्रथमा.
मुनिम्	मुनी	मुनीन्	द्वितीया.
मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः	तृतीया.
मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः	चतुर्थी.
मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः	पञ्चमी.
मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्	षष्ठी.
मुनौ	मुन्योः	मुनिषु	सप्तमी.
हे मुने	हे मुनी	हे मुनयः	सम्बोधनम्.

पति और सखिशब्दभिन्न समस्त इकारान्त पुंलिङ्ग मुनि शब्दके सदृश होते हैं यथा;—हरि, कवि, अग्नि, रवि, श्रीपति,भूपति,उपपति,उमापति,गिरि,इन्दुपति इत्यादि.

पतिशब्दः-

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
पतिः	पती	पतयः	प्रथमा.
पतिम्	पती	पतीन्	द्वितीया.
पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः	तृतीया.
पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः	चतुर्थी.
पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः	पञ्चमी.
पत्युः	पत्योः	पतीनाम्	षष्ठी.
पत्यौ	पत्योः	पतिषु	सप्तमी.
हे पते	हे पती	हे पतयः	सम्बोधनम्

सखिशब्दः-

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
सखा	सखायौ	सखायः	प्रथमा.
सखायम्	सखायौ	सखीन्	द्वितीया.
सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः	तृतीया.
सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः	चतुर्थी.
सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः	पञ्चमी
सख्युः	सख्योः	सखीनाम्	षष्ठी.
सख्यौ	सख्योः	सखिषु	सप्तमी.
हे सखे	हे सखायौ	हे सखाय	संबोधनम्

ईकारान्त सुधी शब्दः-

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.

सुधीः	सुधियौ	सुधियः	प्रथमा.
सुधियम्	सुधियौ	सुधियः	द्वितीया.
सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः	तृतीया.
सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः	चतुर्थी.
सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः	पंचमी.
सुधियः	सुधियोः	सुधियाम्	षष्ठी.
सुधियि	सुधियोः	सुधीषु	सप्तमी.
हे सुधीः	हे सुधियौ	हे सुधियः	संबोधनम्.

प्रायः अनेक पुंलिंग दीर्घ ईकारान्त शब्द सुधी शब्द के सदृश हैं यथा,

प्रधी, पपी, यवी, वातप्रमी, इत्यादि.

उकारान्त साधु शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
साधुः	साधू	साधवः	प्रथमा.
साधुम्	साधू	साधून्	द्वितीया.
साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः	तृतीया.
साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः	चतुर्थी.
साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः	पंचमी.
साधोः	साध्वोः	साधूनाम्	षष्ठी.
साधौ	साध्वोः	साधुषु	सप्तमी.
हे साधो	हे साधू	हे साधवः	सम्बोधनम्.

प्रायः समस्त उकारान्त पुंलिंग शब्द साधु शब्द के

सदृश होते हैं यथा:—गुरु·भानु·विष्णु·अंशु·वायु·वटु·पटु·दस्यु·पृथु·पशु आदि·

ऊकारान्त हूहू शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
हूहूः	हूह्वौ	हूह्वः	प्रथमा.
हूहूम्	हूह्वौ	हूहून्	द्वितीया
हूह्वा	हूहूभ्याम्	हूहूभिः	तृतीया.
हूह्वे	हूहूभ्याम्	हूहूभ्यः	चतुर्थी.
हूह्वः	हूहूभ्याम्	हूहूभ्यः	पंचमी.
हूह्वः	हूह्वोः	हूह्वाम्	षष्ठी.
हूह्वि	हूह्वोः	हूहूषु	सप्तमी.
हे हूहूः	हे हूह्वौ	हे हूह्वः	सम्बोधनम्.

प्रायः समस्त ऊकारान्त पुंलिंग शब्द हूहू शब्द के तुल्य होते हैं.

ऋकारान्त दातृ शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
दाता	दातारौ	दातारः	प्रथमा.
दातारम्	दातारौ	दातॄन्	द्वितीया.
दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः	तृतीया.
दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः	चतुर्थी.
दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः	पञ्चमी.

दातुः	दात्रोः	दातॄणाम्	पष्ठी.
दातरि	दात्रोः	दातृषु	सप्तमी.
हे दातः	हे दातारौ	हे दातारः	सम्बोधनम्.

भ्रातृ, पितृ, जामातृ, नृ, आदि सिवाय समस्त ऋकारान्त पुंलिंग शब्द प्रायः दातृ शब्द के सदृश होते हैं यथा,—नप्तृ, नेष्टृ, त्वष्टृ, होतृ, पोतृ, प्रशास्तृ, धातृ, कर्तृ, उद्गातृ, हर्तृ, इत्यादि.

भ्रातृ शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
भ्राता	भ्रातरौ	भ्रातरः	प्रथमा.
भ्रातरम्	भ्रातरौ	भ्रातॄन्	द्वितीया.
भ्रात्रा	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभिः	तृतीया.
भ्रात्रे	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभ्यः	चतुर्थी.
भ्रातुः	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभ्यः	पञ्चमी.
भ्रातुः	भ्रात्रोः	भ्रातॄणाम्	षष्ठी.
भ्रातरि	भ्रात्रोः	भ्रातृषु	सप्तमी.
हे भ्रातः	हे भ्रातरौ	हे भ्रातरः	सम्बोधनम्.

प्रायः समस्त ऋकारान्त पुंलिंग शब्द भ्रातृ शब्द के सदृश होते हैं यथा,—पितृ, जामातृ, मंतृ, हन्तृ, देवृ, स्तोतृ, संस्तृ, इत्यादि; और नृ शब्द का भी भ्रातृ शब्द

के समान रूप होता है परन्तु षष्ठी के बहुवचनमें नृणाम्
नॄणाम् दो रूप होते हैं.

एकारान्त पुंलिङ्ग से शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक
सेः	सयौ	सयः	प्रथमा
सयम्	सयौ	सयः	द्वितीया
सया	सेभ्याम्	सेभिः	तृतीया
सये	सेभ्याम्	सेभ्यः	चतुर्थी
सयः	सेभ्याम्	सेभ्यः	पञ्चमी
सयः	सयोः	सयाम्	षष्ठी
सयि	सयोः	सेषु	सप्तमी
हे सेः	हे सयौ	हे सयः	सम्बोधनम्

ऐकारान्त पुंलिङ्ग रै शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
राः	रायौ	रायः	प्रथमा
रायम्	रायौ	रायः	द्वितीया
राया	राभ्याम्	राभिः	तृतीया
राये	राभ्याम्	राभ्यः	चतुर्थी
रायः	राभ्याम्	राभ्यः	पञ्चमी
रायः	रायोः	रायाम्	षष्ठी
रायि	रायोः	रासु	सप्तमी
हे राः	हे रायौ	हे रायः	सम्बोधनम्

ओकारान्त गो शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
गौः	गावौ	गावः	प्रथमा.
गाम्	गावौ	गाः	द्वितीया.
गवा	गोभ्याम्	गोभिः	तृतीया.
गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः	चतुर्थी.
गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः	पंचमी.
गोः	गवोः	गवाम्	पष्ठी.
गवि	गवोः	गोषु	सप्तमी.
हे गौः	हे गावौ	हे गावः	सम्बोधनम्.

ओकारान्त पुंलिंग शब्द सकल इसी प्रकार के होते हैं.

औकारान्त पुंलिङ्ग ग्लौ शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
ग्लौः	ग्लावौ	ग्लावः	प्रथमा.
ग्लावम्	ग्लावौ	ग्लावः	द्वितीया.
ग्लावा	ग्लौभ्याम्	ग्लौभिः	तृतीया.
ग्लावे	ग्लौभ्याम्	ग्लौभ्यः	चतुर्थी.
ग्लावः	ग्लौभ्याम्	ग्लौभ्यः	पंचमी.
ग्लावः	ग्लावोः	ग्लावाम्	पष्ठी.
ग्लावि	ग्लावोः	ग्लौषु	सप्तमी.
हे ग्लौः	हे ग्लावौ	हे ग्लावः	सम्बोधनम्.

और भी औकारान्त पुंलिंग शब्द ग्लौ शब्द के तुल्य जानना.

इति अजन्त पुंलिंग —

अथ स्वरान्त स्त्री लिङ्गः ।

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग लता शब्दः–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
लता	लते	लताः	प्रथमा.
लताम्	लते	लताः	द्वितीया.
लतया	लताभ्याम्	लताभिः	तृतीया.
लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः	चतुर्थी.
लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः	पंचमी.
लतायाः	लतयोः	लतानाम्	षष्ठी.
लतायाम्	लतयोः	लतासु	सप्तमी.
हे लते	हे लते	हे लताः	संबोधनम्.

प्रायः समस्त आकान्त स्त्रीलिंग शब्द इसी प्रकार के होते हैं यथा,–रमा, धिषणा, धाना, लक्ष्मणा, विद्या, मेधा, गदा, सेना, निद्रा, तृष्णा, वीणा, तन्द्रा, बाला इत्यादि.

इकारान्त मति शब्दः–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
मतिः	मती	मतयः	प्रथमा.
मतिम्	मती	मतीः	द्वितीया.
मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः	तृतीया.
मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः	चतुर्थी.
मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः	पंचमी.
	मत्योः	मतीनाम्	षष्ठी.

मत्याम्, मतौ मत्योः		मतिषु	सप्तमी.
हे मते	हे मती	हे मतयः	सम्बोधनम्.

और भी इकारान्त स्त्रीलिंग शब्द इसी प्रकार होते यथा,—श्रुति, स्मृति, बुद्धि, धृति, ऋद्धि, सिद्धि, शु युवति इत्यादि.

ईकारान्त नदी शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
नदी	नद्यौ	नद्यः	प्रथमा.
नदीम्	नद्यौ	नदीः	द्वितीया.
नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः	तृतीया.
नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः	चतुर्थी.
नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः	पंचमी.
नद्याः	नद्योः	नदीनाम्	षष्ठी.
नद्याम्	नद्योः	नदीषु	सप्तमी.
हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः	सम्बोधनम्.

प्रायः समस्त ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द नदी शब्द के तुल्य होते हैं यथा,—परिपाटी, कल्याणी, नगरी, देवी, सरस्वती, ब्रह्माणी, सुमङ्गली, कौमुदी, नर्त्तकी, आदि.

श्री शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
श्रीः	श्रियौ	श्रियः	प्रथमा.

श्रियम्	श्रियौ	श्रियः	द्वितीया.
श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः	तृतीया.
श्रियै, श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः	चतुर्थी.
श्रियाः, श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः	पंचमी.
श्रियाः, श्रियः	श्रियोः	श्रीणाम्, श्रियाम्	षष्ठी.
श्रियाम्, श्रियि	श्रियोः	श्रीषु	सप्तमी.
हे श्रीः	हे श्रियौ	हे श्रियः	सम्बोधनम्.

दीर्घ ईकारांत स्त्रीलिंग शब्द के मध्यमें अवी, तन्त्री, तरी, लक्ष्मी, ह्री, धीः आदि शब्द श्री शब्द के समान जानना; और सम्पूर्ण नदीशब्दसदृश किन्तु केवल स्त्री शब्द के रूपमें भेद है यथाः–

स्त्री शब्दः–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः	प्रथमा.
स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः, स्त्रीः	द्वितीया.
स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः	तृतीया.
स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः	चतुर्थी.
स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः	पंचमी.
स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्	षष्ठी.
स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु	सप्तमी.
हे स्त्रि	हे स्त्रियौ	हे स्त्रियः	सम्बोधनम्.

उकारान्त धेनुशब्दः–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
धेनुः	धेनू	धेनवः	प्रथमा.

धेनुम्	धेनू	धेनूः	द्वितीया.
धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः	तृतीया.
धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः	चतुर्थी.
धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः	पंचमी.
धेन्वाः, धेनोः	धन्वोः	धनूनाम्	षष्ठी.
धन्वाम्, धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु	सप्तमी.
हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः	सम्बोधनम्.

सकल ह्रस्व उकारान्त स्त्रीलिंग शब्द इसी प्रकार होते हैं यथा;—रज्जु, तनु, रेणु, आदि.

ऊकारांत वधू शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
वधूः	वध्वौ	वध्वः	प्रथमा.
वधूम्	वध्वौ	वधूः	द्वितीया.
वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः	तृतीया.
वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः	चतुर्थी.
वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः	पंचमी.
वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्	षष्ठी.
वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु	सप्तमी.
हे वधु	हे वध्वौ	हे वध्वः	सम्बोधनम्.

दीर्घ ऊकारान्त स्त्री लिंग शब्द कुछ वधू शब्द के सदृश होते हैं,—यथा तर्दू, चमू, सरयू, श्वश्रू, दर्दू, [illegible] आदि.

भ्रू शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
भ्रूः	भ्रुवौ	भ्रुवः	प्रथमा.
भ्रुवम्	भ्रुवौ	भ्रुवः	द्वितीया.
भ्रुवा	भ्रूभ्याम्	भ्रूभिः	तृतीया.
भ्रुवे, भ्रुवे	भ्रूभ्याम्	भ्रूभ्यः	चतुर्थी.
भ्रुवाः, भ्रुवः	भ्रूभ्याम्	भ्रूभ्यः	पञ्चमी.
भ्रुवाः, भ्रुवः	भ्रुवोः	भ्रूणाम्ः भ्रुवाम्	षष्ठी.
भ्रुवाम्, भ्रुवि	भ्रुवोः	भ्रूषु	सप्तमी.
हे भ्रूः	हे भ्रुवौ	हे भ्रुवः	सम्बोधनम्.

दीर्घ ऊकारान्त स्त्री लिंग शब्दों के मध्यमें कुछ शब्द भ्रू शब्द के सदृश होते हैं और कुछ वधू शब्द के सदृश.

ऋकारान्त दुहितृ शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
दुहिता	दुहितरौ	दुहितरः	प्रथमा.
दुहितरम्	दुहितरौ	दुहितॄः	द्वितीया.
दुहित्रा	दुहितृभ्याम्	दुहितृभिः	तृतीया.
दुहित्रे	दुहितृभ्याम्	दुहितृभ्यः	चतुर्थी.
दुहितुः	दुहितृभ्याम्	दुहितृभ्यः	पञ्चमी.
दुहितुः	दुहित्रोः	दुहितॄणाम्	षष्ठी.
दुहितरि	दुहित्रोः	दुहितृषु	सप्तमी.
हे दुहितः	हे दुहितरौ	हे दुहितरः	सम्बोधनम्.

स्वसृ शब्द के सिवाय समस्त ऋकारान्त स्त्रीलिंग शब्द इसी प्रकार हैं

स्वसृशब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः	प्रथमा.
स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसॄः	द्वितीया.

इन के सिवाय समस्त रूप दुहितृ शब्द के सदृश होते हैं.

ओकारान्त स्त्रीलिङ्ग द्यो शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
द्यौः	द्यावौ	द्यावः	प्रथमा.
द्याम्	द्यावौ	द्याः	द्वितीया.
द्यवा	द्योभ्याम्	द्योभिः	तृतीया.
द्यवे	द्योभ्याम्	द्योभ्यः	चतुर्थी.
द्योः	द्योभ्याम्	द्योभ्यः	पञ्चमी.
द्योः	द्यवोः	द्यवाम्	षष्ठी.
द्यवि	द्यवोः	द्योषु	सप्तमी.
हे द्यौः	हे द्यावौ	हे द्यावः	सम्बोधनम्.

और भी ओकारान्त स्त्रीलिंग शब्द द्यो के सदृश हैं.

औकारान्त स्त्रीलिङ्ग नौ शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
नौः	नावौ	नावः	प्रथमा.
नावम्	नावौ	नावः	द्वितीया.
नावा	नौभ्याम्	नौभिः	तृतीया

नावे	नौभ्याम्	नौभ्यः	चतुर्थी.
नावः	नौभ्याम्	नौभ्यः	पंचमी.
नावः	नावोः	नावाम्	षष्ठी.
नावि	नावोः	नौषु	सप्तमी.
हे नौः	हे नावौ	हे नावः	सम्बोधनम्.

और भी औकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप नौ शब्द के सदृश होते हैं. इति अजन्त स्त्रीलिंगः

अथ स्वरान्त नपुंसकलिङ्गः—

अकारान्त नपुंसक लिङ्ग फल शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
फलम्	फले	फलानि	प्रथमा.
फलम्	फले	फलानि	द्वितीया.

और विभक्ति का रूप पुंलिङ्ग अकारान्त शब्दके सदृश होते हैं. समस्त अकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द इसी प्रकार के होते हैं यथा,—ज्ञान, गगन, भुवन, धन, रूप, शष्प, भवन, स्तोत्र, जल, बाष्प, आदि.

इकारान्त वारिशब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
वारि	वारिणी	वारीणि	प्रथमा.
वारि	वारिणी	वारीणि	द्वितीया.
वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः	तृतीया.

वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः	चतुर्थी.
वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः	पञ्चमी.
वारिणः	वारिणोः	वारिणाम्	षष्ठी.
वारिणि	वारिणोः	वारिषु	सप्तमी.
हे वारे, हे वारि, हे वारिणी		हे वारीणि	सम्बोधनम्.

दधि आदि कई एक शब्दभिन्न समस्त ऱ्हस्व इकारान्त नपुंसक लिं शब्द इसी प्रकार के होते हैं.

दधिशब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
दधि	दधिनी	दधीनि	प्रथमा.
दधि	दधिनी	दधीनि	द्वितीया.
दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः	तृतीया.
दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः	चतुर्थी.
दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः	पञ्चमी.
दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्	षष्ठी.
दध्नि, दधनि	दध्नोः	दधिषु	सप्तमी.
हे दधे, हे दधि	हे दधिनी	हे दधीनि	सम्बोधनम्.

आक्षि, अस्थि, और सक्थि, शब्द भी इसी प्रकारके होते हैं.

उकारान्त मधु शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
मधु	मधुनी	मधूनि	प्रथमा.
मधु	मधुनी	मधूनि	द्वितीया.

मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः	तृतीया.
मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः	चतुर्थी.
मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः	पञ्चमी.
मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्	षष्ठी.
मधुनि	मधुनोः	मधुषु	सप्तमी.
हे मधो, मधु	हे मधुनी	हे मधूनि	सम्बोधनम्.

बहुधा ह्रस्व उकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द इसी प्रकारके होते हैं, यथा;—उपयु आदि.

इति अजन्त नपुंसकलिंगाः.

अथ व्यञ्जनान्त पुंलिङ्गः—

हकारान्त पुंलिंग अनडुह् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
अनड्वान्	अनड्वाहौ	अनड्वाहः	प्रथमा.
अनड्वाहम्	अनड्वाहौ	अनडुहः	द्वितीया.
अनडुहा	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भिः	तृतीया.
अनडुहे	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भ्यः	चतुर्थी.
अनडुहः	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भ्यः	पञ्चमी.
अनडुहः	अनडुहोः	अनडुहाम्	षष्ठी.
अनडुहि	अनडुहोः	अनडुत्सु	सप्तमी.
हे अनड्वन्	हे अनड्वाहौ	हे अनड्वाहः	सम्बोधनम्.

रेफान्त बहुवचनान्तः चतुर् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.

चत्वारः	प्रथमा.	चतुरः	द्वितीया.
चतुर्भिः	तृतीया.	चतुर्भ्यः	चतुर्थी.
चतुर्भ्यः	पञ्चमी.	चतुर्णाम्	षष्ठी.
चतुर्षु	सप्तमी.	हे चत्वारः	सम्बोधनम्.

जकारान्त सम्राज् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
सम्राट्, सम्राड्	सम्राजौ	सम्राजः	प्रथमा.
सम्राजम्	सम्राजौ	सम्राजः	द्वितीया.
सम्राजा	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भिः	तृतीया.
सम्राजे	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः	चतुर्थी.
सम्राजः	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः	पञ्चमी.
सम्राजः	सम्राजोः	सम्राजाम्	षष्ठी.
सम्राजि	सम्राजोः	सम्राडत्सु, सम्राट्सु,	सप्तमी.
हे सम्राट्	हे सम्राजौ	हे सम्राजः	सम्बोधनम्.

प्रायः समस्त जकारान्त शब्द सम्राज् शब्द के सदृश हैं.

तकारान्त भूभृत् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः	प्रथमा.
भूभृतम्	भूभृतौ	भूभृतः	द्वितीया.
भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः	तृतीया.
भूभृते	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः	चतुर्थी.
भूभृतः	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः	पञ्चमी.

भूभृतः	भूभृतोः	भूभृताम्	षष्ठी.
भूभृति	भूभृतोः	भूभृत्सु	सप्तमी.
हे भूभृत्	हे भूभृतौ	हे भूभृतः	सम्बोधनम्.

श्रीमत् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
श्रीमान्	श्रीमन्तौ	श्रीमन्तः	प्रथमा.
श्रीमन्तम्	श्रीमन्तौ	श्रीमतः	द्वितीया.
श्रीमता	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भिः	तृतीया.
श्रीमते	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भ्यः	चतुर्थी.
श्रीमतः	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भ्यः	पञ्चमी.
श्रीमतः	श्रीमतोः	श्रीमताम्	षष्ठी.
श्रीमति	श्रीमतोः	श्रीमत्सु	सप्तमी.
हे श्रीमन्	हे श्रीमन्तौ	हे श्रीमन्तः	सम्बोधनम्.

मकारान्त पुंलिंग प्रशाम् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
प्रशान्	प्रशामौ	प्रशामः	प्रथमा.
प्रशामम्	प्रशामौ	प्रशामः	द्वितीया.
प्रशामा	प्रशान्भ्याम्	प्रशान्भिः	तृतीया.
प्रशामे	प्रशान्भ्याम्	प्रशान्भ्यः	चतुर्थी.
प्रशामः	प्रशान्भ्याम्	प्रशान्भ्यः	पञ्चमी.
प्रशामः	प्रशामोः	प्रशामाम्	षष्ठी.
प्रशामि	प्रशामोः	प्रशान्सु	सप्तमी.

यूनः	यूनोः	यूनाम्	षष्ठी.
यूनि	यूनोः	युवसु	सप्तमी.
हे युवन्	हे युवानौ	हे युवानः	सम्बोधनम्.

राजन् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
राजा	राजानौ	राजानः	प्रथमा.
राजानम्	राजानौ	राज्ञः	द्वितीया.
राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः	तृतीया.
राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः	चतुर्थी
राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः	पञ्चमी.
राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्	षष्ठी.
राज्ञि, राजनि	राज्ञोः	राजसु	सप्तमी.
हे राजन्	हे राजानौ	हे राजानः	संबोधनम्.

गुणिन् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
गुणी	गुणिनौ	गुणिनः	प्रथमा.
गुणिनम्	गुणिनौ	गुणिनः	द्वितीया.
गुणिना	गुणिभ्याम्	गुणिभिः	तृतीया.
गुणिने	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः	चतुर्थी.
गुणिनः	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः	पञ्चमी.
गुणिनः	गुणिनोः	गुणिनाम्	षष्ठी.
गुणिनि	गुणिनोः	गुणिषु	सप्तमी

हे गुणिन्	हे गुणिनौ	हे गुणिनः	सम्बोधनम्.

पथिन् आदि कई एक भिन्न समस्त इन् प्रत्ययान्त
ब्द गुणिन् के सदृश होते हैं. यथा;—दण्डिन्, हस्तिन्,
टिन्, करिन्, आदि.

पथिन् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः	प्रथमा.
पन्थानम्	पन्थानौ	पथः	द्वितीया.
पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः	तृतीया.
पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः	चतुर्थी.
पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः	पञ्चमी.
पथः	पथोः	पथाम्	षष्ठी.
पथि	पथोः	पथिषु	सप्तमी.
हे पन्थाः	हे पन्थानौ	हे पन्थानः	सम्बोधनम्.

सकारान्त वेधस् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
वेधाः	वेधसौ	वेधसः	प्रथमा.
वेधसम्	वेधसौ	वेधसः	द्वितीया.
वेधसा	वेधोभ्याम्	वेधोभिः	तृतीया.
वेधसे	वेधोभ्याम्	वेधोभ्यः	चतुर्थी.
वेधसः	वेधोभ्याम्	वेधोभ्यः	पञ्चमी.

वेधसः	वेधसोः	वेधसाम्	षष्ठी.
वेधसि	वेधसोः	वेधस्सु,वेधःसु	सप्तमी.
हे वेधः	हे वेधसौ	हे वेधसः	सम्बोधनम्

विद्वस्, लघीयस्, श्रेयस् आदि कई एक शब्दभिन्न समस्त सकारान्त शब्द इसी प्रकार के होते हैं:-

विद्वस् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक
विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः	प्रथमा
विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः	द्वितीया
विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः	तृतीया.
विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः	चतुर्थी.
विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः	पञ्चमी.
विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्	षष्ठी.
विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु	सप्तमी.
हे विद्वान्	हे विद्वांसौ	हे विद्वांसः	सम्बोधनम्.

समस्त वसु प्रत्ययान्त शब्द विद्वस् शब्द के समान जानना.

सकारान्त लघीयस् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
लघीयान्	लघीयांसौ	लघीयांसः	प्रथमा.
लघीयांसम्	लघीयांसौ	लघीयसः	द्वितीया.
लघीयसा	लघीयोभ्याम्	लघीयोभिः	तृतीया.
लघीयसे	लघीयोभ्याम्	लघीयोभ्यः	चतुर्थी.
लघीयसः	लघीयोभ्याम्	लघीयो	

ीयसः	लघीयसोः	लघीयसाम्	षष्ठी.
घीयसि	लघीयसोः	लघीयसु	सप्तमी.
लघीयन्	हे लघीयांसौ	हे लघीयांसः	सम्बोधनम्.

समस्त ईयस् प्रत्ययान्त शब्द इसीप्रकार के होते हैं:—

। पापीयस्, घनीयस्, साधीयस्, दवीयस्, यवी-
्, कनीयस्, वरीयस् आदि;—

पुम्सुशब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः	प्रथमा.
पुमांसम्	पुमांसौ	पुंसः	द्वितीया.
पुंसा	पुम्भ्याम्	पुंभिः	तृतीया.
पुंसे	पुंभ्याम्	पुंभ्यः	चतुर्थी.
पुंसः	पुंभ्याम्	पुंभ्यः	पञ्चमी.
पुंसः	पुंसोः	पुंसाम्	षष्ठी.
पुंसि	पुंसोः	पुंसु	सप्तमी.
हे पुमन्	हे पुमांसौ	हे पुमांसः	सम्बोधनम्.

इति व्यञ्जनान्त पुंलिङ्ग शब्दाः । अथ व्यञ्जनान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दाः—

[illegible] शब्दः—

एकवचन.	कारक.
[illegible]	प्रथमा.
	द्वितीया.

स्रजा	स्रग्भ्याम्	स्रग्भिः	तृतीया.
स्रजे	स्रग्भ्याम्	स्रग्भ्यः	चतुर्थी.
स्रजः	स्रग्भ्याम्	स्रग्भ्यः	पञ्चमी.
स्रजः	स्रजोः	स्रजाम्	षष्ठी.
स्रजि	स्रजोः	स्रक्षु	सप्तमी.
हे स्रक्, स्रग्	हे स्रजौ	हे स्रजः	संबोधनम्.

यद्यपि दूसरे शब्दके साथ योग करनेसे स्रज् शब्द तीनों लिंगी हो जाता है तथापि उस का रूप इसीप्रकार होता है.

वाणीवाचक चकारान्त वाच् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
वाक्, वाग्	वाचौ	वाचः	प्रथमा.
वाचम्	वाचौ	वाचः	द्वितीया.
वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः	तृतीया.
वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः	चतुर्थी.
वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः	पञ्चमी.
वाचः	वाचोः	वाचाम्	षष्ठी.
वाचि	वाचोः	वाक्षु	सप्तमी.
हे वाग्, वाक्	हे वाचौ	हे वाचः	सम्बोधनम्.

यद्यपि दूसरे शब्द के साथ योग करनेसे वाच् शब्द तीनों लिंगी हो जाता है तथापि सब लिंगमें रूप इसीप्रकार होता है.

पकारान्त दीप्तिवाचक त्विप् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.

त्विट्, त्विड्	त्विषौ	त्विषः	प्रथमा.
त्विषम्	त्विषौ	त्विषः	द्वितीया.
त्विषा	त्विड्भ्याम्	त्विड्भिः	तृतीया.
त्विषे	त्विड्भ्याम्	त्विड्भ्यः	चतुर्थी.
त्विषः	त्विड्भ्याम्	त्विड्भ्यः	पञ्चमी.
त्विषः	त्विषोः	त्विषाम्	षष्ठी.
त्विषि	त्विषोः	त्विट्सु, त्विड्सु	सप्तमी.
हे त्विट्, त्विड्	हे त्विषौ	हे त्विषः	सम्बोधनम्.

रेफान्त गिर्शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
गीः	गिरौ	गिरः	प्रथमा.
गिरम्	गिरौ	गिरः	द्वितीया.
गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः	तृतीया.
गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः	चतुर्थी.
गिरः	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः	पञ्चमी.
गिरः	गिरोः	गिराम्	षष्ठी.
गिरि	गिरोः	गीर्षु	सप्तमी.
हे गीः	हे गिरौ	हे गिरः	संबोधनम्.

इसी प्रकार पुर्, धुर् आदि रेफान्त शब्दों के रूप होते हैं.

दुःखवाचक दकारान्त आपद् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.

आपदम्	आपदौ	आपदः	द्वितीया.
आपदा	आपद्भ्याम्	आपद्भिः	तृतीया.
आपदे	आपद्भ्याम्	आपद्भ्यः	चतुर्थी.
आपदः	आपद्भ्याम्	आपद्भ्यः	पञ्चमी.
आपदः	आपदोः	आपदाम्	षष्ठी.
आपदि	आपदोः	आपत्सु	सप्तमी.
हेआपद्,हेआपत्	हे आपदौ	हे आपदः	सम्बोधन

दुसरे ३ शब्दके साथ योग करनेसे आपद् शब्द नौलिङ्गी होजाता है तब भी इसीप्रकारका रूप होता समस्तपुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दकारान्त शब्द आपद् श के सदृश होते हैं; सम्पत्, विपद् आदि.

जलवाचक पकारान्त अप् शब्दः—

अप् शब्द का केवल बहुवचनमें प्रयोग होता हैं.

बहुवचन.	कारक	बहुवचन.	कारक.
आपः	प्रथमा.	अपः	द्वितीया.
अद्भिः	तृतीया.	अद्भ्यः	चतुर्थी.
अद्भ्यः	पञ्चमी.	अपाम्	षष्ठी.
अप्सु	सप्तमी.	हे आपः	सम्बोधनम्.

शकारान्त दिश् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
दिक्, दिग्	दिशौ	दिशः	

दिशम्	दिशौ	दिशः	द्वितीया.
दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः	तृतीया.
दिशे	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः	चतुर्थी.
दिशः	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः	पञ्चमी.
दिशः	दिशोः	दिशाम्	षष्ठी.
दिशि	दिशोः	दिक्षु	सप्तमी.
हे दिक्, दिग्	हे दिशौ	हे दिशः	सम्बोधनम्.

इतिव्यंजनान्तस्त्रीलिंगः

अथनपुंसकलिंगः—

तकारान्त श्रीमत् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
श्रीमत्	श्रीमती	श्रीमन्ति	प्रथमा.
श्रीमत्	श्रीमती	श्रीमन्ति	द्वितीया.

औरविभक्तियों में पुंलिंगके सदृश रूप होते हैं; प्रायः समस्त तकारान्त नपुंसकलिंग शब्द श्रीमत् शब्द के सदृश होते हैं. यथा पृषत्, जगत्, वृहत्, आदि. और महत् शब्दका भी ऐसाही रूप होता है, परन्तु प्रथमा द्वितीया के बहुवचनेमें महान्ति रूप होता है.

नकारान्त धामन् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
धाम	धामनी, धाम्नी	धामानि	प्रथमा.

धाम	धामनी, धाम्नी	धामानि	द्वितीया.

और सब विभक्तिमें पुंलिंगके लघिमन् शब्द सदृश रूप हो
प्रायः मकारान्त शब्द इसी प्रकारके होते हैं:—

कर्म्मन् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
कर्म्म	कर्म्मणी	कर्म्माणि	प्रथमा.
कर्म्म	कर्म्मणी	कर्म्माणि	द्वितीया.

और सब विभक्तिमें पुलिंग यज्वन् शब्दके सदृश हो हैं, चर्म्मन्, सुधर्म्मन्, वर्म्मन्, शब्द का भी रूप इस प्रकारका होता हैं.—

अहन् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
अहः	अहनी, अन्ही	अहानि	प्रथमा.
अहः	अहनी, अन्ही	अहानि	द्वितीया.
अन्हा	अहोभ्याम्	अहोभिः	तृतीया.
अन्हे	अहोभ्याम्	अहोभ्यः	चतुर्थी.
अन्हः	अहोभ्याम्	अहोभ्यः	पञ्चमी.
अन्हः	अन्होः	अन्हाम्	षष्ठी.
अन्हि, अहनि	अन्होः	अहःसु	सप्तमी.
हे अहः	हे अहनी, अन्ही	हे अहानि	सम्बोधनम्.

सकारान्त पयस् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.

पयः	पयसी	पयांसि	प्रथमा.
पयः	पयसी	पयांसि	द्वितीया.

और सब विभक्ति में वेधस् शब्दके सदृश रूप होता . मनस्, आदि बहुधा सकारान्त नपुंसकलिंग शब्द सी प्रकारके होते हैं.

हविस्शब्दः–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
हविः	हविषी	हवींषि	प्रथमा.
हविः	हविषी	हवींषि	द्वितीया.
हविषा	हविर्भ्याम्	हविर्भिः	तृतीया.
हविषे	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः	चतुर्थी.
हविषः	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः	पञ्चमी.
हविषः	हविषोः	हविषाम्	षष्ठी.
हविषि	हविषोः	हविष्षु, हविःषु	सप्तमी.

सर्पिस् आदि बहुधा इस् प्रत्ययान्त नपुंसकलिंग शब्द इसीप्रकार होते हैं.

धनुस्शब्दः–

एकवचन.		बहुवचन.	कारक.
		धनूंषि	प्रथमा.
		धनूंषि	द्वितीया.
		धनुर्भिः	तृतीया.
		धनुर्भ्यः	चतुर्थी.
		[illegible]ः	पञ्चमी.

धनुषः	धनुषोः	धनुषाम्	षष्ठी.
धनुषि	धनुषोः	धनुःषु, धनुष्षु	सप्तमी.
हे धनुः	हे धनुषी	हे धनूंषि	सम्बोधनम्.

उस् प्रत्ययान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द के रूप इसी प्रकार होते हैं; यथा वपुस्, यजुस्, चक्षुस्, आदि;—

इति व्यंजनान्त नपुंसकलिंगाः—

अथ सर्वनाम शब्दाः—

यथा सर्व १, विश्व २, उभ ३, उभय ४, तर ५, और तम ६, न्य ७, अन्य तर ८, इतर ९, त्वत् १०, त्व ११, नेम १२, सम १ सिम १४, पूर्व १५, पर १६, अवर १७, दक्षिण १८, उत्तर १९, अ पर २०, अधर २१, स्व २२, अन्तर २३, त्यद् २४, तद् २५, य २६, एतद् २७, इदम् २८, अदस् २९, एक ३०, द्वि ३१, युष्मद् ३२, अस्मद् ३३, भवत् ३४, किम् ३५.

पुंलिङ्ग सर्व शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
सर्वः	सर्वौ	सर्वे	प्रथमा.
सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्	द्वितीया.
सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः	तृतीया.
सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	चतुर्थी.
सर्वस्माद्, सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	पञ्चमी.
सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	षष्ठी.
सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वे[illegible]	

प्रायःसर्वनामशब्दमें संबोधन नहीं है.

नपुंसकलिंगाः—

इसीप्रकार विश्व शब्दका रूप भी जानना.

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि	प्रथमा.
सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि	द्वितीया.

और समस्त विभक्तिमें पुंलिंगके सदृश रूप होता है.

स्त्रीलिंगः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
सर्वा	सर्वे	सर्वाः	प्रथमा.
सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः	द्वितीया.
सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः	तृतीया.
सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः	चतुर्थी.
सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः	पञ्चमी.
सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्	षष्ठी.
सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु	सप्तमी.

अन्यतर आदि पंच शब्द सर्व शब्दके सदृश होते हैं. केवल नपुंसकलिंगके प्रथमा और द्वितीयाके एकवचनमें कतरत्, कतमत्, अन्यत्, अन्यतरत्, इतरत्, रूप होता है.

पूर्व शब्द पुंलिङ्गः–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक
पूर्वः	पूर्वौ	पूर्वे, पूर्वाः	प्रथमा.
पूर्वम्	पूर्वौ	पूर्वान्	द्वितीय
पूर्वेण	पूर्वाभ्याम्	पूर्वैः	तृतीया.
पूर्वस्मै, पूर्वाय	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः	चतुर्थी.
पूर्वस्मात्, पूर्वात्	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः	पञ्चमी.
पूर्वस्य	पूर्वयोः	पूर्वेषाम्	षष्ठी.
पूर्वस्मिन्, पूर्वे	पूर्वयोः	पूर्वेषु	सप्तमी.
हे पूर्व	हे पूर्वौ	हे पूर्वे, हे पूर्वाः	सम्बोधन

नपुंसकलिङ्गः–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि	प्रथमा.
पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि	द्वितीया.

और विभक्तिमें पुंलिंगके सदृश और स्त्रीलिंगमें स
शब्द के सदृश रूप होता है कुछ भेद नहीं. पर, अव
अपर, दक्षिण, उत्तर, अधर, स्व, अन्तर, ये शब्द भ
पूर्व शब्दके समान जानना.

अस्मद्शब्दः–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक
अहम्	आवाम्	वयम्	

माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः	द्वितीया.
मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः	तृतीया.
मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः	चतुर्थी.
मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्	पञ्चमी.
मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः	षष्ठी.
मयि	आवयोः	अस्मासु	सप्तमी.

यह शब्द तीनों लिंगमें समान है कुछ भेद नहीं

युष्मद्शब्दः–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
त्वम्	युवाम्	यूयम्	प्रथमा.
त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः	द्वितीया.
त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः	तृतीया.
तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः	चतुर्थी.
त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्	पञ्चमी.
तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः	षष्ठी.
त्वयि	युवयोः	युष्मासु	सप्तमी.

युष्मद् शब्दके भी रूप तीनों लिंगमें समानही होते हैं.

पुंलिङ्ग इदम् शब्दः–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
अयम्	इमौ	इमे	प्रथमा.
इमम्	इमौ	इमान्	द्वितीया.
अनेन	आभ्याम्	एभिः	तृतीया.
अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः	चतुर्थी.

अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः	पञ्चमी.
अस्य	अनयोः	एषाम्	षष्ठी.
अस्मिन्	अनयोः	एषु	सप्तमी.

नपुंसकलिङ्गः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
इदम्	इमे	इमानि	प्रथमा.
इदम्	इमे	इमानि	द्वितीया.

और सब विभक्ति में पुंलिंगके समान रूप होता है.

स्त्रीलिङ्गः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
इयम्	इमे	इमाः	प्रथमा.
इमाम्	इमे	इमाः	द्वितीया.
अनया	आभ्याम्	आभिः	तृतीया.
अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः	चतुर्थी.
अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः	पञ्चमी.
अस्याः	अनयोः	आसाम्	षष्ठी.
अस्याम्	अनयोः	आसु	सप्तमी.

पुंलिङ्ग किम् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
कः	कौ	के	प्रथमा.
कम्	कौ	कान्	
केन	काभ्याम्	कैः	

कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः	चतुर्थी.
कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः	पञ्चमी.
कस्य	कयोः	केषाम्	षष्ठी.
कस्मिन्	कयोः	केषु	सप्तमी.

नपुंसकलिङ्गः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
किम्	के	कानि	प्रथमा.
किम्	के	कानि	द्वितीया.

और सब विभक्तिमें पुंलिंगके समान रूप होते हैं.

स्त्रीलिङ्गः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
का	के	काः	प्रथमा.
काम्	के	काः	द्वितीया.
कया	काभ्याम्	काभिः	तृतीया.
कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः	चतुर्थी.
कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः	पञ्चमी.
कस्याः	कयोः	कासाम्	षष्ठी.
कस्याम्	कयोः	कासु	सप्तमी.

यद् शब्द पुंलिङ्गः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
यः	यौ	ये	प्रथमा.
यम्	यौ	यान्	द्वितीया.
येन	याभ्याम्	यैः	तृतीया.

अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः	पञ्चमी.
अस्य	अनयोः	एषाम्	षष्ठी.
अस्मिन्	अनयोः	एषु	सप्तमी.

नपुंसकलिङ्गः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
इदम्	इमे	इमानि	प्रथमा.
इदम्	इमे	इमानि	द्वितीया.

और सब विभक्ति में पुंल्लिंगके समान रूप होता है.

स्त्रीलिङ्गः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
इयम्	इमे	इमाः	प्रथमा.
			द्वितीया.
			तृतीया.
			चतुर्थी.
			पञ्चमी.
			षष्ठी.
			सप्तमी.

			कारक.
			प्रथमा.
			द्वितीया.
			तृतीया.

अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः	पञ्चमी.
अस्य	अनयोः	एषाम्	षष्ठी.
अस्मिन्	अनयोः	एषु	सप्तमी.

नपुंसकलिङ्गः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
इदम्	इमे	इमानि	प्रथमा.
इदम्	इमे	इमानि	द्वितीया.

और सब विभक्ति में पुंलिंगके समान रूप होता है.

स्त्रीलिङ्गः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
इयम्	इमे	इमाः	प्रथमा.
इमाम्	इमे	इमाः	द्वितीया.
अनया	आभ्याम्	आभिः	तृतीया.
अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः	चतुर्थी.
अस्या	आभ्याम्	आभ्यः	पञ्चमी.
अस्याः	अनयोः	आसाम्	षष्ठी.
अस्याम्	अनयोः	आसु	सप्तमी.

पुंलिङ्ग किम् शब्दः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
कः	कौ	के	प्रथमा.
कम्	कौ	कान्	द्वितीया.
केन	काभ्याम्	कैः	तृतीया.

तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः	चतुर्थी.
तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः	पञ्चमी.
तस्य	तयोः	तेषाम्	षष्ठी.
तस्मिन्	तयोः	तेषु	सप्तमी.

नपुंसकलिङ्गः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
तत्	ते	तानि	प्रथमा.
तत्	ते	तानि	द्वितीया.

और विभक्तिमें पुंलिंगके समानरूप होता है.

स्त्रीलिङ्गः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
सा	ते	ताः	प्रथमा.
ताम्	ते	ताः	द्वितीया.
तया	ताभ्याम्	ताभिः	तृतीया.
तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः	चतुर्थी.
तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः	पञ्चमी.
तस्याः	तयोः	तासाम्	षष्ठी.
तस्याम्	तयोः	तासु	सप्तमी.

एतद् शब्दः—

यह शब्दभी तद् शब्दके सदृश है, केवल एकार मात्र अधिक है, और पुंलिंग स्त्रीलिंग में प्रथमाके एकवचनमें ष होता है यथा एषः, एषा,

यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः	चतुर्थी.
यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः	पञ्चमी.
यस्य	ययोः	येषाम्	षष्ठी.
यस्मिन्	ययोः	येषु	सप्तमी.

नपुंसकलिङ्गः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
यत्	ये	यानि	प्रथमा.
यत्	ये	यानि	द्वितीया.

और सब विभक्तिमें पुंलिगके समान रूप होता है.

स्त्रीलिंगः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
या	ये	याः	प्रथमा.
याम्	ये	याः	द्वितीया.
यया	याभ्याम्	याभिः	तृतीया.
यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः	चतुर्थी.
यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः	पञ्चमी.
यस्याः	ययोः	यासाम्	षष्ठी.
यस्याम्	ययोः	यासु	सप्तमी.

तद् शब्द पुंलिङ्गः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
सः	तौ	ते	प्रथमा.
तम्	तौ	तान्	द्वितीया.
तेन	ताभ्याम्	तैः	तृतीया.

तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः	चतुर्थी.
तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः	पञ्चमी.
तस्य	तयोः	तेषाम्	षष्ठी.
तस्मिन्	तयोः	तेषु	सप्तमी.

नपुंसकलिङ्गः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
तत्	ते	तानि	प्रथमा.
तत्	ते	तानि	द्वितीया.

और विभक्तिमें पुंलिंगके समानरूप होता है.

स्त्रीलिङ्गः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
सा	ते	ताः	प्रथमा.
ताम्	ते	ताः	द्वितीया.
तया	ताभ्याम्	ताभिः	तृतीया.
तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः	चतुर्थी.
तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः	पञ्चमी.
तस्याः	तयोः	तासाम्	षष्ठी.
तस्याम्	तयोः	तासु	सप्तमी.

एतद् शब्दः—

यह शब्दभी तद् शब्दके सदृश है, केवल एकार मात्र अधिक है, और पुंलिंग स्त्रीलिंग में प्रथमाके एकवचनमें ष होता है यथा एषः, एषा,

यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः	चतुर्थी.
यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः	पञ्चमी.
यस्य	ययोः	येषाम्	षष्ठी.
यस्मिन्	ययोः	येषु	सप्तमी.

नपुंसकलिङ्गः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
यत्	ये	यानि	प्रथमा.
यत्	ये	यानि	द्वितीया.

और सब विभक्तिमें पुंलिंगके समान रूप होता है.

स्त्रीलिंगः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
या	ये	याः	प्रथमा.
याम्	ये	याः	द्वितीया.
यया	याभ्याम्	याभिः	तृतीया.
यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः	चतुर्थी.
यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः	पञ्चमी.
यस्याः	ययोः	यासाम्	षष्ठी.
यस्याम्	ययोः	यासु	सप्तमी.

तद् शब्द पुंलिङ्गः—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
सः	तौ	ते	प्रथमा.
तम्	तौ	तान्	द्वितीया.
तेन	ताभ्याम्	तैः	तृतीया.

तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः	चतुर्थी.
तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः	पञ्चमी.
तस्य	तयोः	तेषाम्	षष्ठी.
तस्मिन्	तयोः	तेषु	सप्तमी.

नपुंसकलिङ्गः-

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
तत्	ते	तानि	प्रथमा.
तत्	ते	तानि	द्वितीया.

और विभक्तिमें पुंलिंगके समानरूप होता है.

स्त्रीलिङ्गः-

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
सा	ते	ताः	प्रथमा.
ताम्	ते	ताः	द्वितीया.
तया	ताभ्याम्	ताभिः	तृतीया.
तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः	चतुर्थी.
तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः	पञ्चमी.
तस्याः	तयोः	तासाम्	षष्ठी.
तस्याम्	तयोः	तासु	सप्तमी.

एतद् शब्दः-

यह शब्दभी तद् शब्दके सदृश है, केवल एकार मात्र अधिक है, और पुंलिंग स्त्रीलिंग में प्रथमाके एकवचनमें ष होता है यथा एषः, एषा,

अदस् शब्द पुंलिङ्गः–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
असौ	अमू	अमी	प्रथमा.
अमुम्	अमू	अमून्	द्वितीया.
अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः	तृतीया.
अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः	चतुर्थी.
अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः	पञ्चमी.
अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्	षष्ठी.
अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु	सप्तमी.

नपुंसकलिङ्गः–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
अदः	अमू	अमूनि	प्रथमा.
अदः	अमू	अमूनि	द्वितीया.

और विभक्तियोंमें पुंलिग के सदृश रूप होता है.

स्त्रीलिङ्गः–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	कारक.
असौ	अमूः	अमूः	प्रथमा.
अमुम्	अमू	अमूः	द्वितीया.
अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः	तृतीया.
अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः	चतुर्थी.
अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः	पञ्चमी.
अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्	षष्ठी.
अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु	सप्तमी.

अथ संख्यावाचक शब्दाः—

एक शब्दः—

यह तीनों लिंग में सर्व शब्द के सदृश होता है.

द्विवचनान्त द्विशब्दः—

अर्थात् दोका बोधक होनेसे सब विभक्ति के द्विवचनही में द्विशब्द का रूप होता है यथा,—

पुंलिङ्ग.	स्त्रीलिङ्ग.	नपुंसक.	कारक.
द्वौ	द्वे	द्वे	प्रथमा.
द्वौ	द्वे	द्वे	द्वितीया.
द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	तृतीया.
द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	चतुर्थी.
द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	पञ्चमी.
द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः	षष्ठी.
द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः	सप्तमी.

त्रि शब्द बहुवचनान्तः—

पुंलिङ्ग.	स्त्रीलिङ्ग.	नपुंसकलिङ्ग.	कारक.
त्रयः	तिस्रः	त्रीणि	प्रथमा.
त्रीन्	तिस्रः	त्रीणि	द्वितीया.
त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः	तृतीया.
त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः	चतुर्थी.
त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः	पञ्चमी.
त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्	षष्ठी.
[illegible]		त्रिषु	सप्तमी.

चतुर् शब्द बहुवचनान्तः—

पुंलिङ्ग.	स्त्रीलिङ्ग.	नपुंसकलिङ्ग.	कारक.
चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि	प्रथमा.
चतुरः	चतस्रः	चत्वारि	द्वितीया.
चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः	तृतीया.
चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः	चतुर्थी.
चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः	पञ्चमी.
चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्	षष्ठी.
चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु	सप्तमी.

बहुवचनान्त षट् शब्द अर्थात् छः का बोधक होनेसे सब विभक्तियोंके बहुवचनहीं में षट् शब्दका रूप होता है.

षट् शब्दके रूप.	अष्टन् शब्दकेरूप.	कारक.
षट्, षड्	अष्टौ, अष्ट	प्रथमा.
षट्, षड्	अष्टौ, अष्ट	द्वितीया.
षड्भिः	अष्टभिः, अष्टाभिः	तृतीया.
षड्भ्यः	अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः	चतुर्थी.
षड्भ्यः	अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः	पञ्चमी.
षण्णाम्	अष्टानाम्	षष्ठी.
षट्त्सु, षट्सु	अष्टासु, अष्टसु	सप्तमी.

ये शब्द तीनों लिंगमें समान होते हैं.

पञ्चन् शब्द बहुवचनान्तः—

बहुवचन.	कारक.	बहुवचन.	कारक.

पञ्च	प्रथमा.	पञ्च	द्वितीया.
पञ्चभिः	तृतीया.	पञ्चभ्यः	चतुर्थी.
पञ्चभ्यः	पञ्चमी.	पञ्चानाम्	षष्ठी.
पञ्चसु	सप्तमी.		

यह शब्दभी तीनों लिंगमें समान है. सप्तन्, नवन्, दशन्, आदि समस्त नकारान्त संख्यावाचक शब्द के रूप इसीके सदृश जानना:—

इति शब्दरूपाणि.

अथ अव्यय.

१. कुछ शब्द ऐसे हैं, कि सर्व विभक्तियोंमें, सर्व वचनोंमें और सर्व लिंगोंमें समान होते हैं, इससे उन्हें अव्यय कहते हैं. यथा;—

स्वर् =१ स्वर्गलोक, अन्तर् =२ मध्य, प्रातर् =३ सुबह, पुनर् = ४ फिर, सनुतर् =५ छिपाना, युगपत् =६ एकसाथ, आरात् =७ दूर या समीप, पृथक् =८ जुदा, ह्यस् = ९ जो दिन बीतगया, श्वस् = १० आनेवाला दिन, चिरम् = ११ बहुकाल, मनाक् = १२ ईषद् = १३ थोडा, तूष्णीम् = १४ मौन, स्वयम् = १५ आप, वृथा = १६ नाहक, नक्तम् = १७ रात्रि, नञ् = १८ निषेध, इहा = १९ आकाश, अद्धा = २० स्पष्ट, सना = २१ सनत्, २२ सनात् = २३ नित्य, उपधा = २४ भेद, तिरस् = २५ छिपना वा टेडा वा अनादर, अन्तर = २६ बीच, अन्तरा = २७ अन्तरेण =

२८ निषेध, शम् = २९ सुख, सहसा = ३० अचम्भा, विना = ३१ वर्जना, नाना = ३२ अनेक, स्वस्ति = ३३ मंगल, स्वधा = ३४ पितृदान, अलम् = ३५ शोभा वारणा पूरण, वषट् = ३६ श्रौषट्= ३७ वौषट् = ३८ स्वाहा = ३९ देवदान, अन्यत् = ४० उपांशु = ४१ छिपाय कर बोलना, क्षमा = ४२ शान्ति, विहायसा = ४३ आकाश, दोषा = ४४ रात्रि, मृषा = ४५ मिथ्या = ४६ झूठ, मुधा = ४७ नाहक, पुरा = ४८ अविचार, मिथो = ४९ मिथस् = ५० एकान्त वा साथ, प्रायः = ५१ बहुधा, मुहुस् = ५२ फिर, साकम्= ५३ सार्द्धम् = ५४ साथ, नमस् = ५५ नमस्कार, हिरुक् = ५६ वर्जन, धिक् = ५७ निन्दा, अथ = ५८ अनन्तर, अम् = ५९ जल्दी, आम् = ओम् = ६० स्वीकार, = ६१ मा = माङ् = ६२ मना करना, वा सन्देह, एवम् = ६३ इस प्रकार, नूनम् = ६४ वै = ६५ निश्चय, शश्वत् = ६६ वारम्वार, युगपत् = ६७ एकसाथ. प्र, परा, अप्, सम्, अनु, अव्, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप, ये शब्द क्रिया के आगे आनेसे उपसर्ग कहाते हैं. अव् और अपि उपसर्गों के अकारका कहीं २ लोपभी होताहै, यथा,—अवगाहः = वगाहः। अपिधानम् = पिधानम्.

इत्यव्ययानि.

अथ तिङन्त प्रकरणम्.

१. क्रिया बोधक भू, स्था आदि शब्दोंको धातु कहते हैं.

२. धातुके उत्तर जो विभक्ति उसे तिङ् कहते हैं, इस लिये क्रियाबोधक पदको तिङन्त कहते हैं.

३. क्रिया सामान्य रीतिसे छः प्रकरकी होती हैं, यथा,— (१) वर्त्तमान, (२) परोक्ष, अतीत, भूत, (३) सामान्य भूत, (४) अनद्यतन वा चिरकालीन भविष्यत्, (५) सामान्य भविष्यत्, (६) हेतुभविष्यत्.

४. वर्त्तमान जो समय बीत रहा है, यथा,—अहम् पश्यामि, मैं देखरहा हूं.

५. परोक्ष अतीत, भूत, जो समय विना देखे वीत गया, यथा,—सः वभूव वह हुआ था पर देखा नहीं.

६. सामान्य भूत जो होगया यथा,—स ऐधिष्ट वह बढा.

७. अनद्यतन भविष्यत् जो देरसे होगा, यथा,—सः गन्ता, वह जायगा.

८. हेतु भविष्यत्, यदि यह होगा तो यहभी होगा, यथा,—चेत् सुवृष्टिःअभवत् तदा सुभिक्षमभवत्। यदि अच्छी वर्षा होगी तो सस्ता होगा.

९. प्रथम सव धातुवोंसे नव लकार आते हैं, यथा,— लट्, लिट्, लुट्, लट्, लोट्, लङ्, लिङ्, लुङ्, लङ्.

१०. वर्त्तमान काल बोध करनेके लिये लट् लकार; भूत, अनद्यतन, परोक्ष, काल बोध करनेके लिये लिट्; भविष्यत्, अनद्यतन काल बोध करनेके लिये लुट्; केवल भविष्यत् काल बोध करनेके लिये लृट्; प्रेरणा अथवा आशीर्वाद अर्थ बोधके लिये लोट्, अनद्यतन भूत काल बोध करनेके लिये लङ्, प्रेरणा अथवा आशीर्वाद अर्थ बोध करनेके लिये लिङ्; केवल भूतकाल बोध करनेके लिये लुङ् और हेतु भविष्यत् काल और क्रिया की सिद्धि बोध करनेके लिये लृङ् लकार आते हैं.

११. उक्त लकारों के स्थानमें परस्मैपद तथा आत्मनेपद नामकी ति आदि प्रत्यय आती हैं अर्थात् परस्मैपदी धातुवोंसे परस्मैपद और आत्मनेपदी धातुवोंसे आत्मनेपद और उभयपदी धातुवोंसे उभय पद.

१२. दोनों पदोंमें ति आदि तीन २ विभक्तियों की क्रमसे प्रथम, मध्यम, और उत्तम संज्ञा होती है.

परस्मैपदी यथा;—

लट् के स्थानमें,

	प्रथम पुरुष.	मध्यम पुरुष.	उत्तम पुरुष.
एकवचन.	ति		मि.

द्विवचन.	तः	थः	वः
बहुवचन.	अन्ति	थ	मः

लिट् के स्थानमें,

एकवचन.	अ	थ	अ.
द्विवचन.	अतुः	अथुः	व.
बहुवचन.	उः	अ	म.

लुट् के स्थानमें,

एकवचन.	ता	तासि	तास्मि.
द्विवचन.	तारौ	तास्थः	तास्वः.
बहुवचन.	तारः	तास्थ	तास्मः

लृट् के स्थानमें,

एकवचन.	स्यति	स्यसि	स्यामि.
द्विवचन.	स्यतः	स्यथः	स्यावः
बहुवचन.	स्यन्ति	स्यथ	स्यामः.

प्रेरणार्थक लोट्के स्थानमें,

एकवचन.	अतु	अहि	आनि.
द्विवचन.	अताम्	अतम्	आव.
बहुवचन.	अन्तु	अत	आमः.

आशीरर्थमें लोट्के प्रथम तथा मध्यम पुरुषके एकवचनके स्थानमें प-में तात् आदेश भी होता है और शेष प्रेरणार्थक के समान.

लङ्के स्थानमें,

एकवचन.	अत्	अः	अम्.
द्विवचन.	अताम्	अतम्	अम्.

बहुवचन.	अन्	अत	अम.

प्रेरणार्थक लिङ् लकारके स्थानमें,

एकवचन.	यात्	याः	याम्.
द्विवचन.	याताम्	यातम्	याव.
बहुवचन.	युः	यात	याम.

आशीरर्थमें लिङ्के स्थानमें,

एकवचन.	यात्	यास्	यासम्.
द्विवचन.	यास्ताम्	यास्तम्	यास्व.
बहुवचन.	यासुः	यास्त	यास्म.

लुङ्के स्थानमें,

एकवचन.	त्	स्	अम्.
द्विवचन.	ताम्	तम्	व.
बहुवचन.	अन्	त	म.

लृङ्के स्थानमें,

एकवचन.	स्यत्	स्यः	स्यम्.
द्विवचन.	स्यताम्	स्यतम्	स्याव.
बहुवचन.	स्यन्	स्यत	स्याम.

अथ आत्मनेपद यथा;—

लट्के स्थानमें,

एकवचन.	ते	से	ए.
द्विवचन.	आते	आथे	वहे.
बहुवचन	अन्ते	ध्वे	महे.

लिट्के स्थानमें,

एकवचन.	ए	से	ए.
द्विवचन.	आते	आथे	वहे.
बहुवचन.	इरे	ध्वे	महे.

लुट्के स्थानमें,

एकवचन.	ता	तासे	ताहे.
द्विवचन.	तारौ	ताथे	ताहे.
बहुवचन.	तारः	ताध्वे	तास्महे.

लृट्के स्थानमें,

एकवचन.	स्यते	स्येसे	स्ये.
द्विवचन.	स्यते	स्यथे	स्यावहे.
बहुवचन.	स्यन्ते	स्यध्वे	स्यामहे.

लोट्के स्थानमें,

एकवचन.	ताम्	स्व	ऐ.
द्विवचन.	आताम्	आथाम्	आवहै.
बहुवचन.	अन्ताम्	ध्वम्	आमहै.

लङ्के स्थानमें,

एकवचन.	त	थाः	इ.
द्विवचन.	आताम्	अथाम्	वहि.
बहुवचन.	अन्त	ध्वम्	महि.

प्रेरणा अर्थमें लिङ्के स्थानमें,

एकवचन.	ईत	ईथाः	ईय.
द्विवचन.	ईयाताम्	ईयाथाम्	ईवहि.

बहुवचन. अन् अत अम.

प्रेरणार्थक लिङ् लकारके स्थानमें,

एकवचन. यात् याः याम्.
द्विवचन. याताम् यातम् याव.
बहुवचन. युः यात याम.

आशीरर्थमें लिङ्के स्थानमें,

एकवचन. यात् यास् यासम्.
द्विवचन. यास्ताम् यास्तम् यास्व.
बहुवचन. यासुः यास्त यास्म.

लुङ्के स्थानमें,

एकवचन. त् स् अम्.
द्विवचन. ताम् तम् व.
बहुवचन. अन् त म.

लृङ्के स्थानमें,

एकवचन. स्यत् स्यः स्यम्.
द्विवचन. स्यताम् स्यतम् स्याव.
बहुवचन. स्यन् स्यत स्याम.

अथ आत्मनेपद यथा;—

लट्के स्थानमें,

एकवचन. ते
द्विवचन. आते
बहुवचन. अन्ते

क्रिया दो प्रकारकी होती है, सकर्मक और अकर्मक.
जो क्रिया कर्मसहित रहै उसे सकर्मक कहते हैं, यथा,—
गुरुः शिष्यमुपदिशति=गुरु शिष्यको उपदेश कर्त्ता है।
जिन क्रियाओंमें कर्म पद नहीं रहता उसे अकर्मक क्रिया
कहते हैं, यथा; शिशुः शेते=वालक सोता है। अहम् ति-
ष्ठामि=मैं स्थित हूं। अश्वो धावति=घोडा दौडताहै। धा-
तुओंका वर्त्ताव दश गणोंमें है, उनके नाम तथा व्यवस्था;—

भ्वादयदादी जुहोत्यादिर्दिवादिः स्वादिरेव च।
तुदादिश्च रुधादिश्च तन क्र्यादि चुरादयः॥ १॥

प्रत्येक गणमें विकरणों का भेद हैं.

धातु और तिङ्के वीचमें जो प्रत्यय आते हैं उन्हे वि-
करण कहते हैं, यथा,—भ्वादि गणपठित धातुओंसे अ
विकरण होता है,—अदादि गण की धातु विकरणरहित हैं—
जुहोत्यादि गणपठित धातु विकरणरहित हैं, पर धातु को
द्वित्व होजाता है,—दिवादि गणपठित धातुसे य,—स्वादि
गणपठित धातु से नु,—तुदादि गणपठित धातु से अ,—
रुधादि गणपठित धातुओं से न,—तनादि से उ,—क्र्या-
दि गणपठित धातु से ना,—और चुरादि गणपठित धातु-

बहुवचन.	ईरन्	ईध्वम्	ईमहि.

आशीरर्थमें लिङ्के स्थानमें,

एकवचन.	सीष्ट	सीष्ठाः	सीय.
द्विवचन.	सीयास्ताम्	सीयास्थाम्	सीवहि.
बहुवचन.	सीरन्	सीध्वम्	सीमहि.

भूत अर्थमें लुङ्के स्थानमें,

एकवचन.	त	थाः	इ.
द्विवचन.	आताम्	आथाम्	वहि.
बहुवचन.	अन्त	ध्वम्	महि.

लृङ्के स्थानमें,

एकवचन.	स्यत	स्यथाः	स्ये.
द्विवचन.	स्यताम्	स्यथाम्	स्यावहि.
बहुवचन.	स्यन्त	स्यध्वम्	स्यामहि.

युष्मद् अस्मद् शब्दोंको छोडकर यदि अन्य कर्त्ता रहे तो धातुसे प्रथम पुरुष होताहै. युष्मद् कर्त्ता रहते मध्यम पुरुष और अस्मद् कर्त्ता रहते उत्तम पुरुष होताहै. सः गच्छति=वह जाताहै । त्वम् गच्छसि=तुम् जातेहो। अहम् गच्छामि=मैं जाताहूं । जब धातुसे लङ्, लुङ्, लृङ्, लकार आते हैं तो स्वरादि धातुवोंके आदिमें आ और सामान्य धातुवोंके आदिमें अ लगाया जाता है.

क्रिया दो प्रकारकी होती है, सकर्मक और अकर्मक. जो क्रिया कर्मसहित रहे उसे सकर्मक कहते हैं, यथा,—गुरुः शिष्यमुपदिशति=गुरु शिष्यको उपदेश कर्ता है। जिन क्रियाओंमें कर्म पद नहीं रहता उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं, यथा; शिशुः शेते=बालक सोता है। अहम् तिष्ठामि=मैं स्थित हूं। अश्वो धावति=घोडा दौडताहै। धातुओंका वर्त्ताव दश गणोंमें है, उनके नाम तथा व्यवस्था;—

> भ्वाधदादी जुहोत्यादिर्दिवादिः स्वादिरेव च।
> तुदादिश्च रुधादिश्च तन क्र्यादि चुरादयः॥ १॥

प्रत्येक गणमें विकरणों का भेद हैं.

धातु और तिङ्के बीचमें जो प्रत्यय आते हैं उन्हे विकरण कहते हैं, यथा,—भ्वादि गणपठित धातुओंसे अ विकरण होता है,—अदादि गण की धातु विकरणरहित हैं—जुहोत्यादि गणपठित धातु विकरणरहित हैं, पर धातु को द्वित्व होजाता है,—दिवादि गणपठित धातुसे य,—स्वादि गणपठित धातु से नु,—तुदादि गणपठित धातु से अ,—रुधादि गणपठित धातुओं से न,—तनादि से उ,—क्र्यादि गणपठित धातु से ना,—और चुरादि गणपठित धातु-

ओं से अय्, विकरण होते हैं. उक्त सब विकरण लट्, लोट्, लङ्, और विधि लिङ् लकार परमें रहते होते हैं और लकारोंमें नहीं. सकर्म्मक धातुओंसे कर्म तथा कर्त्तामें लट् आदि प्रत्यय आते हैं, यदि कर्त्ता कारक में प्रथमा विभक्ति और कर्म्म कारक में द्वितीया विभक्ति रहै तो उस वाक्य को कर्तृवाचक प्रयोग कहते हैं. यथा,—कुम्भकारः घटङ्करोति=कुम्हार घट बनाता है । कर्तृवाच्य प्रयोगमें कर्त्ताका जो वचन होता है वही क्रियाकाभी होता है अर्थात् कर्त्ता एक वचनान्त होनेसे क्रियाभी एक वचनान्त होती है और कर्त्ता द्विवचनान्त होनेसे क्रियाभी द्विवचनान्त होती है, कर्त्ता बहुवचनान्त होनेसे क्रियाभी बहुवचनान्त होती है. यथा;—

शिशुः पुस्तकम् पठति=बालक पुस्तक पढता है ।
शिशू पुस्तकम् पठतः=दो बालक पुस्तक पढते हैं ।
शिशवः पुस्तकम् पठन्ति=बालक लोग पुस्तक पढते है
कुम्भकारो घटङ्करोति=कुम्हार घट बनाता है ।
कुम्भकारौ घटम् कुरुतः=दो कुम्हार घट बनाते हैं ।
कुम्भकाराः घटम् कुर्वन्ति=कुम्हार [illegible] ते हैं।

ओं से अय्, विकरण होते हैं. उक्त सब विकर
लोट्, लङ्, और विधि लिङ् लकार परमें रहते।
और लकारोंमें नहीं. सकर्मक धातुओंसे कर्म तथा
लट् आदि प्रत्यय आते हैं, यदि कर्ता कारक में
विभक्ति और कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति रहै तो
वाक्य को कर्तृवाचक प्रयोग कहते हैं. यथा,—कुम्भ
घटङ्करोति=कुम्हार घट बनाता है । कर्तृवाच्
यमें कर्ताका जो वचन होता है वही क्रियाका है
अर्थात् कर्ता एक वचनान्त होनेसे क्रियाभी एक व
होती है और कर्ता द्विवचनान्त होनेसे क्रियाभी द्वि
न्त होती है, कर्ता बहुवचनान्त होनेसे क्रियाभी ब
नान्त होती है. यथा;—

भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	मध्यम.
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	उत्तम.

प्रेरणा तथा आशीर्वाद अर्थ बोध करने के लिये लोट् आता है, परन्तु दोनों अर्थोंमें धातुओंके रूप समान होते हैं; किन्तु केवल प्रथम तथा मध्यम पुरुष के एकवचन के स्थानमें पक्षमें तात् आदेश भी होता है; इससे आशीर्वाद अर्थमें उक्त पुरुष में दो २ रूप होते हैं. यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
भवतु, भवतात्	भवताम्	भवन्तु	प्रथम.
भव, भवतात्	भवतम्	भवत	मध्यम.
भवानि	भवाव	भवाम	उत्तम.

चिरकालीन बोध करनेको लङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अभवत्	अभवताम्	अभवन्	प्रथम.
अभवः	अभवतम्	अभवत	मध्यम.
अभवम्	अभवाव	अभवाम	उत्तम.

प्रेरणा अर्थ बोध करनेको लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
भवेत्	भवेताम्	भवेयुः	प्रथम.
भवेः	भवेतम्	भवेत	मध्यम.
भवेयम्	भवेव	भवेम	---

लिट् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
जगाद	जगदतुः	जगदुः	प्रथम.
जगदिथ	जगदथुः	जगद	मध्यम.
जगद	जगदिव	जगदिम	उत्तम.

लुट् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
गदिता	गदितारौ	गदितारः	प्रथम.
गदितासि	गदितास्थः	गदितास्थ	मध्यम.
गदितास्मि	गदितास्वः	गदितास्मः	उत्तम.

लृट् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
गदिष्यति	गदिष्यतः	गदिष्यतन्ति	प्रथम.
गदिष्यसि	गदिष्यथः	गदिष्यथ	मध्यम.
गदिष्यामि	गदिष्यावः	गदिष्यामः	उत्तम.

प्रेरणा तथा आशीरर्थमें लोट् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
गदतु, गदतात्	गदताम्	गदन्तु	प्रथम.
गद, गदतात्	गदतम्	गदत	मध्यम.
गदानि	गदाव	गदाम	उत्तम.

लङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.

अगदत्	अगदताम्	अगदन्	प्रथम.
अगदः	अगदतम्	अगदत	मध्यम.
अगदम्	अगदाव	अगदाम	उत्तम.

प्रेरणा अर्थमें लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
गदेत्	गदेताम्	गदेयुः	प्रथम.
गदेः	गदेतम्	गदेत	मध्यम.
गदेयम्	गदेव	गदेम	उत्तम.

आशीरर्थमें लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
गद्यात्	गद्यास्ताम्	गद्यासुः	प्रथम.
गद्याः	गद्यास्ताम्	गद्यास्त	मध्यम.
गद्यासम्	गद्यास्व	गद्यास्म	उत्तम.

लुङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अगदीत् अगादीत्	अगदिष्टाम् अगादिष्टाम्	अगदिषुः अगादिषुः	प्रथम.
अगदीः अगादीः	अगदिष्टम् अगादिष्टाम्	अगदिष्ट अगादिष्ट	मध्यम.
अगदिषम् अगादिषम्	अगदिष्व अगादिष्व	अगदिष्म अगादिष्म	उत्तम.

लृङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.

अगदिप्यत्	अगदिप्यताम्	अगदिप्यन्	प्रथम.
अगदिप्यः	अगदिप्यतम्	अगदिप्यत	मध्यम.
अगदिप्यम्	अगदिप्याव	अगदिप्याम	उत्तम.

वृद्धि अर्थमें टुनदि धातु (अकर्म्मक) परन्तु टु चला जाता है और नदिका नन्द होजाता है. वर्त्तमान काल बोध करनेको लट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुप.
नन्दति	नन्दतः	नन्दन्ति	प्रथम.
नन्दसि	नन्दथः	नन्दथ	मध्यम.
नन्दामि	नन्दावः	नन्दामः	उत्तम.

लिट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुप.
ननन्द	ननन्दतुः	ननन्दुः	प्रथम.
ननन्दिथ	ननन्दथुः	ननन्द	मध्यम.
ननन्द	ननन्दिव	ननन्दिम	उत्तम.

लुट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुप.
नन्दिता	नन्दितारौ	नन्दितारः	प्रथम.
नन्दितासि	नन्दितास्थः	नन्दितास्थ	मध्यम.
नन्दितास्मि	नन्दितास्वः	नन्दितास्मः	उत्तम.

नन्याः	नन्यास्तम्	नन्यास्त	मध्यम.
नन्यासम्	नन्यास्व	नन्यास्म	उत्तम.

लुङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अनन्दीत्	अनन्दिष्टाम्	अनन्दिषुः	प्रथम.
अनन्दीः	अनन्दिष्टम्	अनन्दिष्ट	मध्यम.
अनन्दिषम्	अनन्दिष्व	अनन्दिष्म	उत्तम.

लृङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अनन्दिष्यत्	अनन्दिष्यताम्	अनन्दिष्यन्	प्रथम.
अनन्दिष्यः	अनन्दिष्यतम्	अनन्दिष्यत	मध्यम.
अनन्दिष्यम्	अनन्दिष्याव	अनन्दिष्याम	उत्तम.

पान अर्थक (सकर्मक) पा धातु से यदि लट्, लोट्, लङ्, प्रेरणार्थक लिङ् लकार रहें तो पा को पिब आदेश हो जाता है. यथा,—लट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पिबति	पिबतः	पिबन्ति	प्रथम.
पिबसि	पिबथः	पिबथ	मध्यम.
पिबामि	पिबावः	पिबामः	उत्तम.

लिट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पपौ	पपतुः	[illegible]	प्रथम.

पपिथ, पपाथ	पपथुः	पप	मध्यम.
पपौ	पपिव	पपिम	उत्तम.

लुट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुप.
पाता	पातारौ	पातारः	प्रथम.
पातासि	पातास्थः	पातास्थ	मध्यम.
पातास्मि	पातास्वः	पातास्मः	उत्तम.

लृट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुप.
पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति	प्रथम.
पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ	मध्यम.
पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः	उत्तम.

प्रेरणा तथा आशीरर्थमें (लोट्) के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुप.
पिबतु, पिबतात्	पिबताम्	पिबन्तु	प्रथम.
पिब, पिबतात्	पिबतम्	पिबत	मध्यम.
पिबानि	पिबाव	पिबाम	उत्तम.

लङ् के रूप,—

	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुप.
	ताम्	अपिबन्	प्रथम.
	तम्	अपिबत	मध्यम.
		अपिबाम	उत्तम.

प्रेरणा अर्थमें (लिङ्) के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः	प्रथम.
पिबेः	पिबेतम्	पिबेत	मध्यम.
पिबेयम्	पिबेव	पिबेम	उत्तम.

आशीर्लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पेयात्	पेयास्ताम्	पेयासुः	प्रथम.
पेयाः	पेयास्तम्	पेयास्त	मध्यम.
पेयासम्	पेयास्व	पेयास्म	उत्तम.

लुङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अपात्	अपाताम्	अपुः	प्रथम.
अपाः	अपातम्	अपात	मध्यम.
अपाम्	अपाव	अपाम	उत्तम.

लृङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अपास्यत्	अपास्यताम्	अपास्यन्	प्रथम.
अपास्यः	अपास्यतम्	अपास्यत	मध्यम.
अपास्यम्	अपास्याव	अपास्याम	उत्तम.

स्थिति अर्थक (अकर्मक) स्था धातु से यदि लट्,

अर्थक (सकर्म्मक) दृश्धातु से परे यदि लट्, लोट्, लङ्, प्रेरणार्थक लिङ् पर में रहै तो दृश्को पश्य आदेश होजाताहै

लट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति	प्रथम.
पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ	मध्यम.
पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः	उत्तम.

लिट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
ददर्श	ददृशतुः	ददृशुः	प्रथम.
ददर्शिथ	ददृशथुः	ददृश	मध्यम.
ददर्श	ददृशिव	ददृशिम	उत्तम.

लुट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
दर्शिता	दर्शितारौ	दर्शितारः	प्रथम.
दर्शितासि	दर्शितास्थः	दर्शितास्थ	मध्यम.
दर्शितास्मि	दर्शितास्वः	दर्शितास्मः	उत्तम.

लट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
दर्शिष्यति	दर्शिष्यतः	दर्शिष्यन्ति	प्रथम.
दर्शिष्यसि	दर्शिष्यथः	दर्शिष्यथ	मध्यम.
दर्शिष्यामि	दर्शिष्यावः	दर्शिष्यामः	उत्तम.

आशीः तथा प्रेरणा अर्थमें लोट् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पश्यतु, पश्यतात्	पश्यताम्	पश्यन्तु	प्रथम.
पश्य, पश्यतात्	पश्यतम्	पश्यत	मध्यम.
पश्यानि	पश्याव	पश्याम	उत्तम.

लङ् के रूप,

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्	प्रथम.
अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत	मध्यम.
अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम	उत्तम.

प्रेरणार्थक लिङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः	प्रथम.
पश्येः	पश्येतम्	पश्येत	मध्यम.
पश्येयम्	पश्येव	पश्येम	उत्तम.

आशीर्लिङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
दृश्यात्	दृश्यास्ताम्	दृश्यासुः	प्रथम.
दृश्याः	दृश्यास्तम्	दृश्यास्त	मध्यम.
दृश्यासम्	दृश्यास्व	दृश्यास्म	उत्तम.

लुङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अदर्शीत्	अदर्शिष्टाम्	अदर्शिषुः	प्रथम.

अदर्शीः	अदर्शिष्टम्	अदर्शिष्ट	मध्यम.
अदर्शिषम्	अदर्शिष्व	अदर्शिष्म	उत्तम.

लृङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अदर्शिष्यत्	अदर्शिष्यताम्	अदर्शिष्यन्	प्रथम.
अदर्शिष्यः	अदर्शिष्यतम्	अदर्शिष्यत	मध्यम.
अदर्शिष्यम्	अदर्शिष्याव	अदर्शिष्याम	उत्तम.

श्रवण अर्थक (सकर्म्मक) श्रु धातुसे यदि लट्, लोट्, लङ्, प्रेरणार्थ लिङ् लकार रहैं तो श्रु को शृ आदेश होता है.

लट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति	प्रथम.
शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ	मध्यम.
शृणोमि	शृण्व, शृणुवः	शृण्म, शृणुमः	उत्तम.

लिट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
शुश्राव	शुश्रुवतुः	शुश्रुवुः	प्रथम.
शुश्रोथ	शुश्रुवथुः	शुश्रुव	मध्यम.
शुश्राव	शुश्रुव	शुश्रुम	उत्तम.

लुट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
श्रोता	श्रोतारौ	श्रोतारः	प्रथम.

श्रोतासि	श्रोतास्थः	श्रोतास्थ	मध्यम.
श्रोतास्मि	श्रोतास्वः	श्रोतास्मः	उत्तम.

लृट् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति	प्रथम.
श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ	मध्यम.
श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः	उत्तम.

प्रेरणा तथा आशीरर्थमें लोट् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
शृणोतु, शृणुतात्	शृणुताम्	शृण्वन्तु	प्रथम.
शृणु, शृणुतात्	शृणुतम्	शृणुत	मध्यम.
शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम	उत्तम.

लङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्	प्रथम.
अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत	मध्यम.
अशृणवम्	अशृणुव, अशृण्व	अशृणुम, अशृण्म	उत्तम.

प्रेरणार्थक लिङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः	प्रथम.
शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात	मध्यम.
शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम	उत्तम.

आशीरर्थक लिङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	वहुवचन.	पुरुष.
श्रूयात्	श्रूयास्ताम्	श्रूयासुः	प्रथम.
श्रूयाः	श्रूयास्तम्	श्रूयास्त	मध्यम.
श्रूयासम्	श्रूयास्व	श्रूयास्म	उत्तम.

लुङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अश्रौषीत्	अश्रौषिष्टाम्	अश्रौषिषुः	प्रथम.
अश्रौषीः	अश्रौषिष्टम्	अश्रौषिष्ट	मध्यम.
अश्रौषिषम्	अश्रौषिष्व	अश्रौषिष्म	उत्तम.

लृङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अश्रोष्यत्	अश्रोष्यताम्	अश्रोष्यन्	प्रथम.
अश्रोष्यः	अश्रोष्यतम्	अश्रोष्यत	मध्यम.
अश्रोष्यम्	अश्रोष्याव	अश्रोष्याम	उत्तम.

गमन अर्थक (सकर्म्मक) **गम्** धातुसे यदि लट्, लोट्, लङ्, प्रेरणार्थ लिङ् लकार रहै तो **गम्** के स्थानमें गच्छ् हो जाता है.

लट् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति	प्रथम.

लङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्	प्रथम.
अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत	मध्यम.
अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम	उत्तम.

प्रेरणार्थक लिङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः	प्रथम.
गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत	मध्यम.
गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम	उत्तम.

आशीरर्थक लिङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
गम्यात्	गम्यास्ताम्	गम्यासुः	प्रथम.
गम्याः	गम्यास्तम्	गम्यास्त	मध्यम.
गम्यासम्	गम्यास्व	गम्यास्म	उत्तम.

लुङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अगमत्	अगमताम्	अगमन्	प्रथम.
अगमः	अगमतम्	अगमत	मध्यम.
अगमम्	अगमाव	अगमाम	उत्तम.

लृङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अगमिष्यत्	अगमिष्यताम्	अगमिष्यन्	प्रथम.

अगमिष्यः	अगमिष्यतम्	अगमिष्यत	मध्यम.
अगमिष्यम्	अगमिष्याव	अगमिष्याम	उत्तम.

इति परस्मैपदि धातुरूपाणि ।

अथ आत्मनेपदीय.

नमस्कार तथा स्तुति अर्थ में सकर्म्मक वदि धातुके स्थानमें सर्वत्र वन्द् हो जाता है. लट् आदि के प्रथम मध्यम उत्तम पुरुषोंके एकवचन के रूप यथा,—

एकवचन.	प्रथम.	मध्यम.	उत्तम.
लट्—	वन्दते	वन्दसे	वन्दे
लिट्—	ववन्दे	ववन्दिषे	ववन्दे
लुट्—	वन्दिता	वन्दितासे	वन्दिताहे
लृट्—	वन्दिष्यते	वन्दिष्यसे	वन्दिष्ये
लोट्—	वन्दताम्	वन्दस्व	वन्दे
लङ्—	अवन्दत	अवन्दथाः	अवन्दे
लिङ्—	वन्देत	वन्देथाः	वन्देय
लिङ्—	वन्दिषीष्ट	वन्दिषीष्ठाः	वन्दिषीय
लुङ्—	अवन्दिष्ट	अवन्दिष्ठाः	अवन्दिषि
लृङ्—	अवन्दिष्यत	अवन्दिष्यथाः	अवन्दिष्ये

हर्ष अर्थक सकर्म्मक मुद् धातुके लट् आदि के प्रथम मध्यम उत्तम आदि पुरुषों के एक वचन के रूप यथा,—

लुङ्—	अदादिष्ट	अदादिष्ठाः	अदादिषि
लृङ्—	अदादिष्यत	अदादिष्यथाः	अदादिष्ये

इत्यादि रूपोंकी कल्पना करलेना.

वर्त्तने अर्थमें (अकर्मक) आत्मनेपदी (वृतु) धातु परन्तु केवल लृट लकार परे रहते परस्मैपद भी होता है.

लट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
वर्त्तते	वर्त्तेते	वर्त्तन्ते	प्रथम.
वर्त्तसे	वर्त्तेथे	वर्त्तध्वे	मध्यम.
वर्त्ते	वर्त्तावहे	वर्त्तामहे	उत्तम.

लोट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
वर्त्तताम्	वर्त्तेताम्	वर्त्तन्ताम्	प्रथम.
वर्त्तस्व	वर्त्तेथाम्	वर्त्तध्वम्	मध्यम.
वर्त्तै	वर्त्तावहै	वर्त्तामहै	उत्तम.

लङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अवर्त्तत	अवर्त्तेताम्	अवर्त्तन्त	प्रथम.
अवर्त्तथाः	अवर्त्तेथाम्	अवर्त्तध्वम्	मध्यम.
अवर्त्ते	अवर्त्तावहि	अवर्त्तामहि	उत्तम.

प्रेरणा अर्थक लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
वर्त्तेत	वर्त्तेयाताम्	वर्त्तेरन्	प्रथम.

एकवचन.	प्रथम.	मध्यम.	उत्तम.
लट्—	मोदते	मोदसे	मोदे.
लिट्—	मुमुदे	मुमुदिषे	मुमुदे
लुट्—	मोदिता	मोदितासे	मोदिताहे
लृट्—	मोदिष्यते	मोदिष्यसे	मोदिष्ये
लोट्—	मोदताम्	मोदस्व	मोदै
लङ्—	अमोदत	अमोदथाः	अमोदे
लिङ्—	मोदेत	मोदेथाः	मोदेय
लिङ्—	मोदिष्ट	मोदिष्ठाः	मोदिषि
लुङ्—	अमोदिष्ट	अमोदिष्ठाः	अमोदिषि
लृङ्—	अमोदिष्यत	अमोदिष्यथाः	अमोदिष्ये

दान अर्थक सकर्म्मक दद् धातु के लट् आदिके प्रथम मध्यम उत्तम पुरुषों के एक वचनके रूप यथा,—

लकार.	प्रथम.	मध्यम.	उत्तम.
लट्—	ददते	ददसे	ददे
लिट्—	ददde	ददिषे	ददde
लुट्—	ददिता	ददितासे	ददिताहे
लृट्—	ददिष्यते	ददिष्यसे	ददिष्ये
लोट्—	ददताम्	ददस्व	ददै
लङ्—	अददत	अददथाः	अददे
लिङ्—	ददेत	ददेथाः	ददेय
लिङ्—	ददषीष्ट	ददषीष्ठाः	ददषीय

वर्तथाः	वर्तेयाथाम्	वर्तेध्वम्	मध्यम.
वर्तेय	वर्तेवहि	वर्तेमहि	उत्तम.

शेष लकारों के प्रथम पुरुष के रूप,—

लिट् ववृते, लुट् वर्तिता, लृट् वर्त्स्यति, वर्तिष्यते आशीर्लिङ् वर्तिषीष्ट, लुङ् अवर्तिष्ट, लृङ् अवर्त्स्यत, अवर्तिष्यत।

अथ उभयपदीय धातुओंके रूप,—

हरण अर्थक सकर्म्मक हृ धातुके रूप यथा,—

लट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
हरति, हरते	हरतः, हराते	हरन्ति, हरन्ते	प्रथम.
हरसि, हरसे	हरथः, हराथे	हरथ, हरध्वे	मध्यम.
हरामि, हरे	हरावः, हरावहे	हरामः, हरामहे	उत्तम.

लिट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
जहार जह्रे	जह्रतुः जह्राते	जह्रुः जह्रिरे	—प्रथम.
जहर्थ जह्रिषे	जह्रथुः जह्राथे	जह्र जह्रिढ्वे	—मध्यम.
जहार, जहर जह्रे	जह्रिव जह्रिवहे	जह्रिम जह्रिमहे	—उत्तम.

लुट्के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
हर्त्ता	हर्त्तारौ	हर्त्तारः	प्रथम.

हर्त्तासि	हर्त्तास्थः	हर्त्तास्थ	—मध्यम.
हर्त्तासे	हर्त्तासाथे	हर्त्ताध्वे	
हर्त्तास्मि	हर्त्तास्वः	हर्त्तास्मः	—उत्तम.
हर्त्ताहे	हर्त्तास्वहे	हर्त्तास्महे	

ऌट् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
हरिष्यति	हरिष्यतः	हरिष्यन्ति	—प्रथम.
हरिष्यते	हरिष्येते	हरिष्यन्ते	
हरिष्यसि	हरिष्यथः	हरिष्यथ	—मध्यम.
हरिष्यसे	हरिष्येथे	हरिष्यध्वे	
हरिष्यामि	हरिष्यावः	हरिष्यामः	—उत्तम.
हरिष्ये	हरिष्यावहे	हरिष्यामहे	

प्रेरणा तथा अशीरर्थ में लोट् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
हरतु, हरतात्	हरताम्	हरन्तु	—प्रथम.
हरताम्	हरेताम्	हरन्ताम्	
हर, हरतात्	हरतम्	हरत	—मध्यम.
हरस्व	हरेथाम्	हरध्वम्	
हराणि	हराव	हराम	—उत्तम.
हरै	हरावहै	हरामहै	

लङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अहरत्	अहरताम्	अहरन्	—प्रथम.
अहरत	अहरेताम्	अहरन्त	

अहरः	अहरतम्	अहरत	—मध्यम.
अहरथाः	अहरेथाम्	अहरध्वम्	
अहरम्	अहराव	अहराम	—उत्तम.
अहरे	अहरावहि	अहरामहि	

प्रेरणा अर्थक लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
हरेत्	हरेताम्	हरेयुः	—प्रथम.
हरेत	हरेयाताम्	हरेरन्	
हरेः	हरेतम्	हरेत	—मध्यम
हरेथाः	हरेयाथाम्	हरेध्वम्	
हरेयम्	हरेव	हरेम	—उत्तम.
हरेय	हरेवहि	हरेमहि	

आशीर्लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
ह्रियात्	ह्रियास्ताम्	ह्रियासुः	—प्रथम.
हृषीष्ट	हृषीयास्ताम्	हृषीरन्	
ह्रियाः	ह्रियास्तम्	ह्रियास्त	—मध्यम.
हृषीष्ठाः	हृषीयास्थाम्	हृषीध्वम्	
ह्रियासम्	ह्रियास्व	ह्रियास्म	—उत्तम.
हृषीय	हृषीवहि	हृषीमहि	

लुङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अहार्षीत्	अहार्ष्टाम्	अहार्षुः	—प्रथम.
अहृत	अहृपाताम	अहृपत	

अहार्षीः	अहार्ष्टम्	अहार्ष्ट	—मध्यम.
अहृथाः	अहृषाथाम्	अहृढ्वम्	
अहार्षम्	अहार्ष्व	अहार्ष्म	—उत्तम.
अहृषि	अहृष्वहि	अहृष्महि	

लृङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अहरिष्यत्	अहरिष्यताम्	अहरिष्यन्	—प्रथम.
अहरिष्यत	अहरिष्येताम्	अहरिष्यन्त	
अहरिष्यः	अहरिष्यतम्	अहरिष्यत	—मध्यम.
अहरिष्यथाः	अहरिष्येथाम्	अहरिष्यध्वम्	
अहरिष्यम्	अहरिष्याव	अहरिष्याम	—उत्तम.
अहरिष्ये	अहरिष्यावहि	अहरिष्यामहि	

भरण अर्थक भृ धातु के रूप भी हृ धातु के समान जानना यथा.—लट् आदि लकारों के प्रथम मध्यम उत्तम पुरुषों के एकवचन के रूप;

एकवचन.	प्रथम पुरुष.	मध्यम पुरुष.	उत्तम पुरुष.
लट्—	भरति, भरते	भरसि, भरसे	भरामि, भरे.
लिट्—	बभार, बभ्रे,	बभर्थ, बभृषे	बभर, बभार बभ्रे.
लुट्—	भर्त्ता	भर्त्तासि, भर्त्तासे	भर्त्तास्मि, भर्त्ताहे.
लृट्—	भरिष्यति, भरिष्यते	भरिष्यसि, भरिष्यसे	भरिष्यामि भरिष्ये
लोट्—	भरतु, भरताम्	भर, भरस्व	भराणि, भरै
	अभरत्,	अभरः,	अभरम्

पक्ता	पक्तारौ	पक्तारः	प्रथम.
पक्तासि पक्तासे	पक्तास्थः पक्तासाथे	पक्तास्थ पक्ताध्वे	—मध्यम.
पक्तास्मि पक्ताहे	पक्तास्वः पक्तास्वहे	पक्तास्मः पक्तास्महे	—उत्तम.

लृट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पक्ष्यति पक्ष्यते	पक्ष्यतः पक्ष्येते	पक्ष्यन्ति पक्ष्यन्ते	—प्रथम.
पक्ष्यसि पक्ष्यसे	पक्ष्यथः पक्ष्येथे	पक्ष्यथ पक्ष्यध्वे	—मध्यम.
पक्ष्यामि पक्ष्ये	पक्ष्यावः पक्ष्यावहे	पक्ष्यामः पक्ष्यामहे	—उत्तम.

आशीरर्थक तथा प्रेरणा अर्थमें लोट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पचतु, पचतात् पचताम्	पचताम् पचेताम्	पचन्तु पचन्ताम्	—प्रथम.
पच, पचतात्, पचस्व	पचतम् पचेथाम्	पचत पचध्वम्	—मध्यम.
पचानि पचै	पचाव पचावहै	पचाम पचामहै	—उत्तम.

लङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.

अपचत् अपचत	अपचताम् अपचेताम्	अपचन् अपचन्त	—प्रथम.
अपचः अपचथाः	अपचतम् अपचेथाम्	अपचत अपचध्वम्	—मध्यम.
अपचम् अपचे	अपचाव अपचावहि	अपचाम अपचामहि	—उत्तम.

प्रेरणार्थक लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पचेत् पचेत	पचेताम् पचेयाताम्	पचेयुः पचेरन्	—प्रथम.
पचेः पचेथाः	पचेतम् पचेयाथाम्	पचेत पचेध्वम्	—मध्यम.
पचेयम् पचेय	पचेव पचेवहि	पचेम पचेमहि	—उत्तम.

आशीरर्थक लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पच्यात् पक्षीष्ट	पच्यास्ताम् पक्षीयास्ताम्	पच्यासुः पक्षीरन्	—प्रथम.
पच्याः पक्षीष्ठाः	पच्यास्तम् पक्षीयास्थाम्	पच्यास्त पक्षीध्वम्	—मध्यम.
पच्यासम् पक्षीय	पच्यास्व पक्षीवहि	मच्यास्म पक्षीमहि	—उत्तम.

लुङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.

अपाक्षीत्	अपक्ताम्	अपाक्षुः	—प्रथम.
अपक्त	अपक्षाताम्	अपक्षन्त	
अपाक्षीः	अपाक्तम्	अपाक्त	—मध्यम.
अपक्षाः	अपक्षाथाम्	अपक्षध्वम्	
अपाक्षम्	अपाक्ष्व	अपाक्ष्म	—उत्तम.
अपक्षि	अपक्षिवहि	अपक्षिमहि	

लृङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अपक्ष्यत्	अपक्ष्यताम्	अपक्ष्यन्	—प्रथम.
अपक्ष्यत	अपक्ष्येताम्	अपक्ष्यन्त	
अपक्ष्यः	अपक्ष्यतम्	अपक्ष्यत	—मध्यम.
अपक्ष्यथाः	अपक्ष्येथाम्	अपक्ष्यध्वम्	
अपक्ष्यम्	अपक्ष्याव	अपक्ष्याम	—उत्तम.
अपक्ष्ये	अपक्ष्यावहि	अपक्ष्यामहि	

सेवा अर्थक (सकर्म्मक) भज् धातु के रूप भी पच् धातु के समान जानना, यथा,—

लट्—भजति भजते,—लिट्—बभाज, भेजे,—लुट्—भक्ता,—लृट्—भक्ष्यति, भक्ष्यते,—लोट्—भजतु, भजतात्, भजताम्,—लङ्—अभजत्, अभजत,—प्रेरणार्थक लिङ्-भजेत्, भजेत, आशीर्लिङ् भज्यात्, भक्षीष्ट, लुङ्-अभाक्षीत्, अभक्त,—लृङ्—अभक्ष्यत्, अभक्ष्यत,—इत्यादि.

उभयपदी प्रापण अर्थमें (सकर्म्मक) वह् धातु लट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
वहति	वहतः	वहन्ति	—प्रथम.
वहते	वहेते	वहन्ते	
वहसि	वहथः	वहथ	—मध्यम.
वहसे	वहेथे	वहध्वे	
वहामि	वहावः	वहामः	—उत्तम.
वहे	वहावहे	वहामहे	

लिट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
उवाह	ऊहतुः	ऊहुः	—प्रथम.
ऊहे	ऊहाते	ऊहिरे	
उवहिथ, उवोढ	ऊहथुः	ऊह	—मध्यम.
ऊहिषे	ऊहाथे	ऊहिढ्वे	
उवाह, उवह	ऊवहिव	ऊवहिम	—उत्तम.
ऊहे	ऊहिवहे	ऊहिमहे	

लुट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
वोढा	वोढारौ	वोढारः	—प्रथम.
वोढासि	वोढास्थः	वोढास्थ	—मध्यम.
वोढासे	वोढासाथे	वोढाध्वे	

वोढास्मि	वोढास्वः	वोढास्मः	—उत्तम.
वोढाहे	वोढास्वहे	वोढास्महे	

लृट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति	—प्रथम.
वक्ष्यते	वक्ष्येते	वक्ष्यन्ते	
वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ	—मध्यम.
वक्ष्यसे	वक्ष्येथे	वक्ष्यध्वे	
वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः	—उत्तम.
वक्ष्ये	वक्ष्यावहे	वक्ष्यामहे	

प्रेरणा तथा आशीरर्थ में लोट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
वहतु, वहतात्	वहताम्	वहन्तु	—प्रथम.
वहताम्	वहेताम्	वहन्ताम्	
वह, वहतात्	वहतम्	वहत	—मध्यम.
वहस्व	वहेथाम्	वहध्वम्	
वहानि	वहाव	वहाम	—उत्तम.
वहै	वहावहै	वहामहै	

लङ् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अवहत्	अवहताम्	अवहन्	—प्रथम.
अवहत	अवहेताम्	अवहन्त	

अवहः	अवहतम्	अवहत	—मध्यम.
अवहथाः	अवहेथाम्	अवहध्वम्	
अवहम्	अवहाव	अवहाम	—उत्तम.
अवहे	अवहावहि	अवहामहि	

प्रेरणार्थक लिङ् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
वहेत्	वहेताम्	वहेयुः	—प्रथम.
वहेत	वहेयाताम्	वहेरन्	
वहेः	वहेतम्	वहेत	—मध्यम.
वहेथाः	वहेयाथाम्	वहेध्वम्	
वहेयम्	वहेव	वहेम	—उत्तम.
वहेय	वहेवहि	वहेमहि	

आशीर्लिङ् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
उह्यात्	उह्यास्ताम्	उह्यासुः	—प्रथम.
वक्षीष्ट	वक्षीयास्ताम्	वक्षीरन्	
उह्याः	उह्यास्तम्	उह्यास्त	—मध्यम.
वक्षीष्ठाः	वक्षीयास्ताम्	वक्षीध्वम्	
उह्यासम्	उह्यास्व	उह्यास्म	—उत्तम.
वक्षीय	वक्षीवहि	वक्षीमहि	

लुङ् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.

अवाक्षीत्	अवोढाम्	अवाक्षुः	—प्रथम.
अवोढ	अवक्षाताम्	अवक्षन्त	
अवाक्षीः	अवोढम्	अवोढ	—मध्यम.
अवोढाः	अवक्षाथाम्	अवोढ्वम्	
अवाक्षम्	अवाक्ष्व	अवाक्ष्म	—उत्तम.
अवक्षि	अवक्षिवहि	अवक्षिमहि	

लृट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अवक्ष्यत्	अवक्ष्यताम्	अवक्ष्यन्	—प्रथम.
अवक्ष्यत	अवक्ष्येताम्	अवक्ष्यन्त	
अवक्ष्यः	अवक्ष्यतम्	अवक्ष्यत	—मध्यम.
अवक्ष्यथाः	अवक्ष्येथाम्	अवक्ष्यध्वम्	
अवक्ष्यम्	अवक्ष्याव	अवक्ष्याम	—उत्तम.
अवक्ष्ये	अवक्ष्यावहि	अवक्ष्यामहि	

इति उभयपदी, इति भ्वादि गण।

अथ अदादि गण, अर्थात् विकरणरहित धातु ओं के

प भक्षण अर्थक सकर्म्मक अद् धातु, लट्,के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अत्ति	अत्तः	अदन्ति	प्रथम.
अत्सि	अत्थः	अत्थ	मध्यम.
अद्मि	अद्वः	अद्मः	उत्तम.

लिट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.

जघास	जक्षतुः	जक्षुः	प्रथम.
जघसिथ	जक्षथुः	जक्ष	मध्यम.
जघास, जघस	जक्षिव	जक्षिम	उत्तम.

प्रेरणा अर्थक तथा आशीरर्थमें लोट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अत्तु, अत्तात्	अत्ताम्	अदन्तु	प्रथम.
अद्धि, अत्तात्	अत्तम्	अत्त	मध्यम.
अदानि	अदाव	अदाम	उत्तम.

लङ् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
आदत्	आत्ताम्	आदन्	प्रथम.
आदः	आत्तम्	आत्त	मध्यम.
आदम्	आद्व	आद्म	उत्तम.

प्रेरणार्थक लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः	प्रथम.
अद्याः	अद्यातम्	अद्यात	मध्यम.
अद्याम्	अद्याव	अद्याम	उत्तम.

और लकारों के रूप अनुमान कर जानना. हिंसार्थक सकर्म्मक हन् धातु, लट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
हन्ति	हतः	घ्नन्ति	प्रथम.

हंसि	हथः	हथ	मध्यम.
हन्मि	हन्वः	हन्मः	उत्तम.

लिट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
जघान	जघ्नतुः	जघ्नुः	प्रथम.
जघनिथ,जघन्थ,	जघ्नथुः	जघ्न	मध्यम.
जघान,जघन	जघ्निव	जघ्निम	उत्तम.

लुट्के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
हन्ता	हन्तारौ	हन्तारः	प्रथम.
हन्तासि	हन्तास्थः	हन्तास्थ	मध्यम.
हन्तास्मि	हन्तास्वः	हन्तास्मः	उत्तम.

लृट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति	प्रथम.
हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ	मध्यम.
हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः	उत्तम.

प्रेरणा तथा आशीरर्थमें लोट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
हन्तु, हतात्	हताम्	घ्नन्तु	प्रथम.
जहि, हतात्	हतम्	हत	मध्यम.
हनानि	हनाव	हनाम	उत्तम.

लङ् के प्रथम मध्यम उत्तम पुरुष के एक २ वचन के रूप यथा,—अहन् अहः अहनम्.

प्रेरणार्थक लिङ्—	हन्यात्	हन्याः	हन्याम्.
आशीर्लिङ्—	वध्यात्	वध्याः	वध्यासम्.
लुङ्—	अवधीत्	अवधीः	अवधिषम्.
लृङ्—	अहनिष्यत्	अहनिष्यः	अहनिष्यम्.

ज्ञान अर्थक अकर्म्म विद् धातु के लिट्, लुट्, लृट्, लिङ्, लुङ्, लृङ्, के प्रथम आदि पुरुषों के एक २ वचन के रूप और लट् तथा लोट्, लङ् के सम्पूर्ण रूप.

लट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
वेत्ति	वित्तः	विदन्ति	—प्रथम.
वेद	विदतुः	विदुः	
वेत्सि	वित्थः	वित्थ	—मध्यम.
वेत्थ	विदथुः	विद	
वेद्मि	विद्वः	विद्मः	—उत्तम.
वेद	विद्व	विद्म	

प्रेरणा तथा आशीरर्थ लोट् के रूप यथा,—

विदाङ्करोतु, विदाङ्कुरुतात्, विदाङ्कुरुताम्, विदाङ्कुर्वन्तु, } —प्रथम.
वेत्तु, वित्तात्, वित्ताम्, विदन्तु

विदाङ्कुरु, विदाङ्कुरुतात्, विदाङ्कुरुतम्, विदाङ्कुरुत, विद्धि, वित्तात्, वित्तम्, वित्त —मध्यम.

विदाङ्करवाणि, विदाङ्करवाव, विदाङ्करवाम, वेदानि, वेदाव, वेदाम —उत्तम.

लट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अवेत्	अवित्ताम्	अविदुः	प्रथम.
अवेः	अवित्तम्	अवित्त	मध्यम.
अविदम्	अविद्व	अविद्म	उत्तम.

एकवचन.	प्रथम पुरुष.	मध्यम पुरुष.	उत्तम पुरुष.
लुट्—	वेदिता	वेदितासि	वेदितास्मि.
लृट्—	वेदिष्यति	वेदिष्यसि	वेदिष्यामि.
लिङ्—	विद्यात्	विद्याः	विद्यासम्
लुङ्—	अवेदीत्	अवेदीः	अवेदिषम्
लङ्—	अवेदिष्यत्	अवेदिष्यः	अवेदिष्यम्.

सत्ताअर्थक (अकर्मक) अस् धातुके लिट्, लुट्, लृट्, आशीर्लिङ्, लुङ्, लृङ्, लकारोंमें भू धातुके समान रूप होते हैं. केवल लट्, लोट्, लङ्, प्रेरणार्थक लिङ् में विशेष होता है.

लट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.

अस्ति	स्तः	सन्ति	प्रथम.
असि	स्थः	स्थ	मध्यम.
अस्मि	स्वः	स्मः	उत्तम.

लोट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अस्तु, स्तात्	स्ताम्	सन्तु	प्रथम.
एधि, स्तात्	स्तम्	स्त	मध्यम.
असानि	असाव	असाम	उत्तम.

लुङ् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
आसीत्	आस्ताम्	आसन्	प्रथम.
आसीः	आस्तम्	आस्त	मध्यम.
आसम्	आस्व	आस्म	उत्तम.

प्रेरणार्थक लिङ् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
स्यात्	स्याताम्	स्युः	प्रथम.
स्याः	स्यातम्	स्यात	मध्यम.
स्याम्	स्याव	स्याम	उत्तम.

पूरण अर्थक सकर्म्मक दुह् धातु उभय-पदी लट् आदि लकारों के प्रथम आदि पुरुषों के एक

एकवचन. प्रथम पुरुष.

लट्—	दोग्धि	धोक्षि	दोह्मि
	दुग्धे	धुक्षे	दुहे
लिट्—	दुदोह,दुदोहिथ	दुदोग्ध	दुदोह
	दुदुहे	दुदुहिषे	दुदुहे
लुट्—	दोग्धा	दोग्धासि	दोग्धास्मि
	,,	दोग्धासे	दोग्धाहे
लृट्—	धोक्ष्यति	धोक्ष्यसि	धोक्ष्यामि
	धोक्ष्यते	धोक्ष्यसे	धोक्ष्ये
लोट्—	दोग्धु,दोग्धात्	दुग्धि,दुग्धात्	दोहानि
	दुग्धाम्	धुक्ष्व	दोहै
लङ्—	अधोक्ग्	अधोग्क्	अदोहम्
	अदुग्धे	अदुग्धाः	अदुहि
लिङ्—	दुह्यात्	दुह्याः	दुह्यासम्
	दुहीत	दुहियाः	दुहीय
लिङ्—	धुक्षीष्ट	धुक्षीष्टाः	धुक्षीय
	अधुक्षत्	अधुक्षः	अधुक्षम्
लुङ्—	अदुग्ध	अदुग्धाः	अधुक्षि
	अधुक्षत	अधुक्षथाः	,,
लृङ्—	अधोक्ष्यत	अधोक्ष्यः	अधोक्ष्यम्
	अधोक्ष्यत्	अधोक्ष्यथाः	अधोक्ष्ये

स्पष्ट बोलने के अर्थमें उभयपदी सकर्म्मक ब्रू धातु से लट के ति ा, सि, थः के स्थानमें क्रमसे अ,

अतुः, उः, स्थ, अथुः, आदेश होता है और ब्रू
पक्षमें आह होता है यथा,—

लट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरु
आह ब्रवीति	आहतुः ब्रूतः	आहुः ब्रुवन्ति	—प्रथ
आत्थ ब्रवीषि	आहथुः ब्रूथः	आहुः ब्रूथ	—मध्य
ब्रवीमि उवाच	ब्रूवः ऊचतुः	ब्रूमः ऊचुः	—उत्त प्रथ
ऊचे	ऊचाते	ऊचिरे	
ऊवचिथ, उवक्थ ऊचिषे	ऊचथुः ऊचाथे	ऊच ऊचिढ्वे	—मध्य
उवाच, उवच ऊचे	ऊचिव ऊचिवहे	ऊचिम ऊचिमहे	—उत्तम

लुट् लृट् के एक २ वचन के रूप,—

प्रथम पुरुष.	मध्यम पुरुष.	उत्तम पुरुष.	
वक्ता ,,	वक्तासि वक्तासे	वक्तास्मि वक्ताहे	—प्रथ
लृट्— { वक्ष्यति वक्ष्यते	वक्ष्यसि वक्ष्यसे	वक्ष्यामि वक्ष्ये	

लोट् के सम्पूर्ण रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
ब्रवीतु, ब्रूतात्	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु	—प्रथम.
ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवन्ताम्	
ब्रूहि, ब्रूतात्	ब्रूतम्	ब्रूत	—मध्यम.
ब्रूष्व	ब्रुवाथाम्	ब्रूध्वम्	
ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम	—उत्तम.
ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै	

लङ् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्	—प्रथम.
अब्रूत	अब्रुवाताम्	अब्रुवन्त	
अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत	—मध्यम.
अब्रूथाः	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम्	
अब्रवाणि	अब्रवाव	अब्रवाम	—उत्तम.
अब्रवै	अब्रवावहै	अब्रवामहै	

प्रेरणार्थक लिङ् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः	—प्रथम.
ब्रुयात्	ब्रुवीयाताम्	ब्रुवीरन्	
ब्रूयाः	ब्रुयातम्	ब्रूयात	—मध्यम.
ब्रुवीथाः	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीध्वम्	
ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम	—उत्तम.
ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि	

आशीर्लिङ् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
उच्यात् वक्षीष्ट	उच्याताम् वक्षीयास्ताम्	उच्यासुः वक्षीरन्	—प्रथम.
उच्याः वक्षीष्ठाः	उच्यास्तम् वक्षीयास्थाम्	उच्यास्त वक्षीध्वम्	—मध्यम.
उच्यासम् वक्षीय	उच्यास्व वक्षीवहि	उच्यास्म वक्षीमहि	—उत्तम.

लुङ् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अवोचत् अवोचत	अवोचताम् अवोचेताम्	अवोचन् अवोचन्त	—प्रथम.
अवोचः अवोचथाः	अवोचतम् अवोचेथाम्	अवोचत अवोचध्वम्	—मध्यम.
अवोचम् अवोचे	अवोचाव अवोचावहि	अवोचाम अवोचामहि	—उत्तम.

लृङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अवक्ष्यत अवक्ष्यत	अवक्ष्यताम् अवक्ष्येताम्	अवक्ष्यन् अवक्ष्यन्त	—प्रथम.
अवक्ष्यः अवक्ष्यथा	अवक्ष्यतम् अवक्ष्यथाम्	अवक्ष्यत अवक्ष्यध्वम्	—मध्यम.
अवक्ष्यम् अवक्ष्ये	अवक्ष्याव अवक्ष्यावहि	अवक्ष्याम अवक्ष्यामहि	—उत्तम.

निद्रा अर्थक आत्मने पदी (अकर्म्मक) शीङ् धातु लट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
शेते	शयाते	शेरते	प्रथम.
शेषे	शयाथे	शेध्वेद्वे	मध्यम.
शये	शेवहे	शेमहे	उत्तम.

लिट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
शिश्ये	शिश्याते	शिशियरे	प्रथम.
शिशीषे	शिश्याथे	शिशीढ्वे	मध्यम.
शिश्ये	शिशीवहे	शिशीमहे	उत्तम.

लुट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
शयिता	शयितारौ	शयितारः	प्रथम.
शयितासे	शयितासाथे	शयिताध्वे	मध्यम.
शयिताहे	शयितास्वहे	शयितास्महे	उत्तम.

लृट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते	प्रथम.
शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे	मध्यम.
शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे	उत्तम.

प्रेरणा तथा आशीरर्थमें लोट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
शयताम्	शयेताम्	शयन्ताम्	प्रथम.
शयस्व	शयेथाम्	शयध्वम्	मध्यम.
शयै	शयावहै	शयामहै	उत्तम.

लङ् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अशयत	अशयेताम्	अशयन्त	प्रथम.
अशयथाः	अशयेथाम्	अशयध्वम्	मध्यम.
अशयि	अशयावहि	अशयामहि	उत्तम.

प्रेरणा अर्थक लिङ् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
शयेत	शयेयाताम्	शयेरन्	प्रथम.
शयेथाः	शयेयाथाम्	शयेध्वम्	मध्यम.
शयेय	शयेवहि	शयेमहि	उत्तम.

आशीर्लिङ् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
शयिशीष्ट	शयिशीयास्ताम्	शयिशीरन्	प्रथम.
शयिशीष्ठाः	शयिशीयास्थाम्	शयिशीध्वम्	मध्यम.
शयिशीय	शयिशीवहि	शयिशीमहि	उत्तम.

लुङ् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	[illegible]	पुरुष.

अशयिष्ट	अशयिषाताम्	अशयिषत	प्रथम.
अशयिष्ठाः	अशयिषाथाम्	अशयिढ्वम्	मध्यम.
अशयिषि	अशयिष्वहि	अशयिष्महि	उत्तम.

लृङ् के रूप यथा,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अशयिष्यत	अशयिष्येताम्	अशयिष्यन्त	प्रथम.
अशयिष्यथाः	अशयिष्येथाम्	अशयिष्यध्वम्	मध्यम.
अशयिष्ये	अशयिष्यावहि	अशयिष्यामहि	उत्तम.

इति अदादि गणः।

अथ जुहोत्यादि=अर्थात् विकरणरहित गण, दान, ग्रहण अर्थमें (सकर्म्मक) हु धातु से लट्, लिट्, लोट्, लङ्, प्रेरणार्थक लिङ् परे रहते हु के स्थानमें जुहु हो जाता है.

लट् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
जुहोति	जुहुतः	जुह्वति	प्रथम.
जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ	मध्यम.
जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः	उत्तम.

लिट्, लुट्, लृट्, आशीर्लिङ्, लुङ्, लृङ्, के प्रथम, मध्यम, उत्तम पुरुष के एक २ वचन के रूप,–

~ { जुहवाञ्चकार, जुहवाञ्चकर्थ, जुहवाञ्चकार,
१, जुहविथ जुहाव, जुहव, जुहवाञ्चकार,

लट्—बिभेति	बिभेषि	बिभेमि.
लिट्— { बिभयाञ्चकार बिभाय	बिभयाञ्चकर्थ बिभयिथ	बिभयाञ्चकर. बिभयामि, चकार.
लुट्—भेता	भेतासि	भेतास्मि.
लृट्—भेष्यति	भेष्यसि	भेष्यामि.
लोट्—बिभेतु, बिभितात्	बिभिहि	बिभयानि.
लङ्—अबिभत्	अबिभेः	अबिभेयम्.
लिङ्—बिभीयात्	बिभीयाः	बिभीयाम्.
लिङ्—भीयात्	भीयाः	भीयासम्.
लुङ्—अभैषीत्	अभैषीः	अभैषिषम्.
लृङ्—अभ्येष्यत्	अभ्येष्यः	अभ्येष्यम्.

लज्जा अर्थक अकर्मक ह्री धातु के प्रथम मध्यम उत्तम पुरुष के रूप एक २ वचन यथा,—

लट्—जिह्रेति	जिह्रेषि	जिह्रेमि.
लिट्— { जिह्रयाञ्चकार, जिह्रयाञ्चकर्थ, जिह्राय, जिह्रयिथ, जिह्रयामि,		जिह्रयाञ्चकार, जिह्रयाञ्चकर.
लुट्—ह्रेता	ह्रेतासि	ह्रेतास्मि.
लृट्—ह्रेष्यति	ह्रेष्यसि	ह्रेष्यामि.
लोट्—जिह्रेतु, जिह्रितात्	जिह्रिहि, जिह्रितात्	जिह्रयाणि.
लङ्—अजिह्रेत्	अजिह्रेः	अजिह्रयम्.
लिङ्—जिह्रीयात्	जिह्रीयाः	जिह्रीयाम्,
लिङ्—ह्रीयात्	ह्रीयाः	ह्रीयासम्.

लुङ्—अर्हपीत्	अर्हपीः	अर्हपिपम्.
लङ्—अर्हेप्यत्	अर्हेप्यः	अर्हेप्यम्.

त्याग अर्थक सकर्मक हा धातु से लट्, लिट्, लोट् लिङ्—प्रेरणार्थक लिङ् परे रहते हा के स्थानमें जह होजाताहै यथा,—

लट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष
जहाति	जहितः,जहीतः	जहति	प्रथम.
जहासि	जहिथः,जहीथः	जहिथ	मध्यम.
जहामि	जहिवः,जहीवः	जहिमः,जहीमः	उत्तम.

लिट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
जहौ	जहतुः	जहुः	प्रथम.
जहिथ, जहाथ	जहथुः	जह	मध्यम.
जहौ	जहिव	जहिम	उत्तम.

लोट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
जहातु जहितात्, जहीतात्	जहिताम् जहीताम्	जहतु ”	—प्रथम.
जहाहि	जहितम् जहीत	जहित	—मध्यम.

जहीहि	जहितात्	जहीतात्	—उत्तम.
जहानि	जहाव	जहाम	

लङ् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अजहात्	अजहाताम्	अजहुः	प्रथम.
अजहाः	अजहातम्	अजहात	मध्यम.
अजहाम्	अजहाव	अजहाम	उत्तम.

प्रेरणार्थक लिङ् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
जह्यात्	जह्याताम्	जह्युः	प्रथम.
जह्याः	जह्यातम्	जह्यात	मध्यम.
जह्याम्	जह्याव	जह्याम	उत्तम.

आशीर्लिङ्, लुट्, लट्, लुङ्, लङ् के प्रथम आदि पुरुष के एक २ वचन के रूप.

एकवचन.	प्रथम पुरुष.	मध्यम पुरुष.	उत्तम पुरुष.
लुट्—	हाता	हातासि	हातास्मि.
लृट्—	हास्यति	हास्यसि	हास्यामि.
लिङ्—	हेयात्	हेयाः	हेयासम्.
लुङ्—	अहासीत्	अहासीः	अहासिषम्.
लृङ्—	अहास्यत्	अहास्यः	अहास्यम्.

दान अर्थक उभयपदी सकर्म्मक दा धातु के लट्,

लुङ्—अर्हपीत्	अर्हपीः	अर्हपिपम्.
लङ्—अर्हेप्यत्	अर्हेप्यः	अर्हेप्यम्.

त्याग अर्थक सकर्म्मक हा धातु से लट्, लिट्, लोट्, लङ् —प्रेरणार्थक लिङ् परे रहते हा के स्थानमें जह होजाताहै यथा,—

लट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष
जहाति	जहितः,जहीतः	जहति	प्रथम.
जहासि	जहिथः,जहीथः	जहिथ	मध्यम.
जहामि	जहिवः,जहीवः	जहिमः,जहीमः	उत्तम.

लिट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
जहौ	जहतुः	जहुः	प्रथम.
जहिथ, जहाथ	जहथुः	जह	मध्यम.
जहौ	जहिव	[illegible]म	उत्तम.

आदि के प्रथम आदि पुरुष के एक २ वचन के रूप यथा;—

	प्रथम पुरुष.	मध्यम पुरुष.	उत्तम पुरुष.
लट्—	ददाति दत्ते	ददासि ददिषे	ददामि ददे
लिट्—	ददौ ददे	ददिथ ददिषे	ददौ ददे
लुट्—	दाता "	दातासि दातासे	दातास्मि दाताहे
लोट्—	ददातु, दत्तात् दत्ताम्	देहि, दत्तात् दत्स्व	ददानि ददै
लङ्—	अददात् अदत्त	अददः अदत्थाः	अददाम् अददि
लिङ्—	दद्यात् ददीत	दद्याः ददीथाः	दद्याम् ददीय
लिङ्—	देयात् दासीष्ट	देयाः दासीष्ठाः	देयासम् दासीय
लुङ्—	अदात् अदित	अदाः अदिथाः	अदाम् अदिषि
लृङ्—	अदास्यत् अदास्यत	अदास्यः अदास्यथाः	अदास्यम् अदास्ये

इति जुहोत्यादयः ॥

अथ दिवादि=अर्थात् य विकरणवान् धातु क्रीडा, व्यवहार, कांति, निद्रा और गति अर्थक (अकर्मक)

लोट्—	नृत्यतु / नृत्यतात्	नृत्य / नृत्यतात्	नृत्यानि. / "
लङ्—	अनृत्यत्	अनृत्यः	अनृत्यम्.
लिङ्—	नृत्यात्	नृत्याः	नृत्यासम्.
प्रेरणाअर्थक लिङ्—	नृत्येत्	नृत्येः	नृत्येयम्.
लुङ्—	अनर्तीत्	अनर्तीः	अनर्तिषम्.
लृङ्—	अनर्तिष्यत् / अनर्त्स्यत्	अनर्तिष्यः / अनर्त्स्यः	अनर्तिष्यम्. / अनर्त्स्यम्.

खण्डन अर्थमें दो धातु के लट् आदि के प्रथम आदि पुरुषों के एक २ वचन के रूप,—

एकवचन.	प्रथम पुरुष.	मध्यम पुरुष.	उत्तम पुरुष.
लट—	द्यति	द्यसि	द्यामि.
लिट—	ददौ	ददिथ, ददाथ,	ददौ, दद.
लुट—	दाता	दातासि	दातास्मि.
लृट—	दास्यति	दास्यसि	दास्यामि.
लोट—	द्यतु, द्यतात्.	द्यत, द्यतात्	द्यतानि.
लङ्—	अद्यत्	अद्यः	अद्यम्.
प्रेरणार्थक लिङ्—	द्यात्	द्याः	द्याम्.
लिङ्—	देयात्	देयाः	देयासम्.
लुङ्—	अदासीत्	अदासीः	अदासिषम्.
लृङ्—	अदास्यत्	अदास्यः	अदास्यम्.

जन्माने उत्पन्न अर्थमें सकर्म्मक आत्मनेपदी षु धातु के लट् आदि के प्रथम आदि पुरुषों के एक२ वचन के रूप,—

एकवचन. प्रथम पुरुष.	मध्यम. पुरुष.	उत्तम. पुरुष.
लट्—सूयते	सूयसे	सूये.
लिट्—सुषुवे	सुषुविषे	सुषुवे.
लुट्—सोता, सविता	सवितासे, सोतासे	सवितादे, सोताहे.
लृट्—सविष्यते, सोस्यते	सविष्यसे, सोष्यसे	सविष्ये, सोष्ये.
लोट्—सूयताम्	सूयस्व	सूयै.
लङ्—असूयत	असूयथाः	असूये.
लिङ्—सूषिषीष्ट	सूषिषीष्ठाः	सूषिषीय.
प्रेरणार्थक लिङ्—सूयेत	सूयेथाः	सूयेय.
लुङ्—असावीत्, असोष्ट	असोष्ठाः	असाविषम्
,,	असावीः	असोषि.
लृङ्—असविष्यत	असविष्यथाः	असविष्ये.
असोस्यत	असोस्यथाः	[illegible]

पक्षी के चलने अर्थमें सकर्म्मक आत्मने पदी [illegible] धातु के लट् आदि के प्रथम आदि पुरुषों के एक २ वचन के रूप.

एकवचन. प्रथम पुरुष. मध्यम पुरुष. उत्तम पुरुष.

लट्—डयिष्यते	डयिष्यसे	डयिष्ये.
लोट्—डीयताम्	डीयस्व	डीयै.
लङ्—अडीयत	अडीयथाः	अडीये.
लिङ्—डीयेत	डीयेथाः	डीयेय.
लिङ्—डयिषीष्ट	डयिषीष्ठाः	डयिषीय.
लुङ्—अडयिष्ट	अडयिष्ठाः	अडयिषि.
लृङ्—अडयिष्यत	अडयिष्यथाः	अडयिष्ये.

उत्पन्न होने अर्थमें आत्मने पदी अकर्म्मक जन् धातु के लट् आदि के प्रथम आदि पुरुषोंके एक २ वचन के रूप, और लट्, लोट्, लङ् प्रेरणार्थक लिङ् परे रहते जनको जा होता है.

एकवचन.	प्रथम पुरुष.	मध्यम पुरुष.	उत्तम पुरुष.
लट्—	जायते	जायसे	जाये.
लिट्—	जज्ञे	जज्ञिषे	जज्ञे.
लुट्—	जनिता	जनितासे	जनिताहे.
लृट्—	जनिष्यते	जनिष्यसे	जनिष्ये.
लोट्—	जायताम्	जायस्व	जायै.
लङ्—	अजायत	अजायथाः	अजाये.
लिङ्—	जायेत	जायेथाः	जायेय.
लिङ्—	जनिषीष्ट	जनिषीष्ठाः	जनिषीय.

लुङ्—	अजनि,अजनिष्ट	अजनिष्ठाः	अजनिषि.
लृङ्—	अजनिष्यत	अजनिष्यथाः	अजनिष्ये.

समझनें अर्थमें बुध् धातु के लट् आदिक प्रथम आदि पुरुषों के एक २ वचनके रूप,—

एकवचन.	प्रथम पुरुष.	मध्यम पुरुष.	उत्तम पुरुष.
लट्—	बुध्यते	बुध्यसे	बुध्ये.
लिट्—	बुबुधे	बुबुधिषे	बुबुधे
लुट्—	बोद्धा	बोद्धासे	बोद्धाहे.
लृट्—	भोत्स्यते	भोत्स्यसे	भोत्स्ये.
लोट्—	बुध्यताम्	बुध्यस्व	बुध्यै.
लङ्—	अबुध्यत	अबुध्यथाः	अबुध्ये.
लिङ्—	बुध्येत	बुध्येथाः	बुध्येय.
लिङ्—	भुत्सीष्ट	भुत्सीष्ठाः	भुत्सीय.
लुङ्—	अबोधि,अबुद्ध	अबुद्धाः	अबुद्धि.
लृङ्—	अभोत्स्यत	अभोत्स्यथाः	अभोत्स्ये.

संप्रहार अर्थक युध्के लट् आदिके प्रथम आदि पुरुषों के एक २ वचन के रूप,—

एकवचन.	प्रथम पुरुष.	मध्यम पुरुष.	उत्तम पुरुष.
लट्—	युध्यते	युध्यसे	युध्ये.
लिट्—	युयुधे	युयुधिषे	युयुधे.
लुट्—	योद्धा	योद्धासे	योद्धाहे.

लृट्— योत्स्यते योत्स्यसे योत्स्ये.
लोट्— युध्यताम् युध्यस्व युध्यै.
लङ्— अयुध्यत अयुध्यथाः अयुध्ये.
लिङ्— युध्येत युध्येथाः युध्येय.
लिङ्— युत्सीष्ट युत्सीष्ठाः युत्सीय.
लुङ्— अयोधि,अयुद्ध अयुद्धाः अयुद्धि.
लृङ्— अयोत्स्यत अयोत्स्यथाः अयोत्स्ये.

त्याग अर्थक सकर्म्मक आत्मेपदी सृज् धातुके लट आदिके प्रथम आदि पुरुषों के एक २ वचन के रूप,—

एकवचन.	प्रथम पुरुष.	मध्यम पुरुष.	उत्तम पुरुष.
लट्—	सृज्येत	सृज्यसे	सृज्ये.
लिट्—	ससृजे	ससृजिषे	ससृजे.
लुट्—	स्रष्टा	स्रष्टासे	स्रष्टाहे.
लृट्—	स्रक्ष्यते	स्रक्ष्यसे	स्रक्ष्ये.
लोट्—	सृज्यताम्	सृज्यस्व	सृज्ये.
लङ्—	असृज्यत	असृज्यथाः	असृज्ये.
लिङ्—	सृज्येत	सृज्येथाः	सृज्येय.
आशीर्लिङ्—	स्रक्षीष्ट	स्रक्षीयास्थाम्	स्रक्षीय.
लुङ्—	असृष्ट	असृष्ठाः	असृक्षि.
लृङ्—	अस्रक्ष्यत	अस्रक्ष्यथाः	अस्रक्ष्य.

इति दिवादयः ॥

अथ स्वादि गण = नु = विकरण = स्नान, वा पीडा

लट्—	असोस्यत्	असोस्यः	असोस्यम्
	असोस्यत	असोस्यथाः	असोस्य

संग्रह अर्थक उभयपदी चि धातु के लट् आदि के प्रथम आदि पुरुषों के एक २ वचन के रूप,—

एकवचन.	प्रथम पुरुष.	मध्यम पुरुष.	उत्तम पुरुष.
लट्—	चिनोति	चिनोषि	चिनोमि
	चिनुते, चिनुषे		चिन्वे
लिट्—	चिकाय, चिचाय	चिकयिथ, चिचयिथ, चिकयिथ	चिकाय, चिकाय
	चिचय, चिकय, चिकाय	चिक्ये, चिच्ये	चिक्यिषे, चिच्यिषे, चिक्ये, चिच्ये
लुट्—	चेता	चेतासि	चेतास्मि
	,,	चेतासे	चेताहे
लृट्—	चेस्यति	चेस्यसि	चेस्यामि
	चेस्यते	चेस्यसे	चेस्ये
लोट्—	चिनोतु, चिनुतात्	चिनु, चिनुतात्	चिनवानि
	चिनुताम्	चिनुष्व	चिनवै
लङ्—	अचिनोत्	अचिनोः	अचिनवम्
	अचिनोत	अचिनुथाः	अचिन्वि
लिङ्—	चिनुयात्	चिनुयाः	चिनुयाम्
	चिन्वीत	चिन्वीथाः	चिन्वीय
लिङ्—	चीयात्	चीयाः	चीयासम्
लुङ्—	अचैषीत्	अचैषीः	अचैषिषम्
	अचेष्ट	अचेष्टाः	अचेषि

लट्—	अचेष्यात्	अचेष्यः	अचेष्यम्
	अचेष्यत	अचेष्यथाः	अचेष्ये

कम्पन अर्थक उभयपदी धूञ् धातु के लट् आदि के प्रथम आदि पुरुषों के एक २ वचन के रूप,—

एकवचन.	प्रथम पुरुष.	मध्यम पुरुष.	उत्तम पुरुष.
लट्—	धूनोति	धूनोषि	धूनोमि
	धूनुते	धूनुषे	धून्वे
लिट्—	दुधाव	दुधविथ,दुधोथ	दुधाव, दुधव
	दुधुवे	दुधुविषे	दुधुवे
लुट्—	धविता	धवितासि,धोतासि	धोतास्मि
	धोता	धोतासे	धोताहे
लृट्—	धविष्यति	धविष्यसि	धविष्यामि
	धविष्यते	धविष्यसे	धविष्ये
लोट्—	धूनोतु,धूनुतात्	धूनु, धूनुतात्	धूनवानि
	धूनुताम्	धूनुष्व	धूनवै
लङ्—	अधूनोत्	अधूनोः	अधूनवम्
	अधूनुत	अधूनुथाः	अधून्वि
लिङ्—	धूनुयात्	धूनुयाः	धूनुयाम्
	धून्वीत	धून्वीथाः	धून्वीय
लिङ्—	धूयात्	धूयाः	धूयासम्
	धोषीष्ट	धोषीष्ठाः	धोषीय
लुङ्—	अधावीत्	अधावीः	अधाविषम्
	अधोष्ट	अधोष्ठाः	अधोषि

लङ्—	अपोप्स्यत्	अपोप्स्यः	अपोप्स्यम्
	अपोप्स्यत	अपोप्स्यथाः	अपोप्स्ये

इति स्वादयः ॥

अथ तुदादि= षष्ठ गण अ विकरण ।

पीडा अर्थक उभयपदी तुद् धातुके लट् आदि के प्रथमादि पुरुषों के एक २ वचनके रूप,—

एकवचन.	प्रथम पुरुष.	मध्यम पुरुष.	उत्तम पुरुष.
लट्—	तुदति	तुदसि	तुदामि
	तुदते	तुदसे	तुदे
लिट्—	तुतोद	तुतोदिथ	तुतोद, तुतुद
	तुतुदे	तुतुदिषे	तुतुदे
लुट्—	तोत्ता	तोत्तासि	तोत्तास्मि
	,,	तोत्तासे	तोत्ताहे
लृट्—	तोत्स्यति	तोत्स्यसि	तोत्स्यामि
	तोत्स्यते	तोत्स्यसे	तोत्स्ये
लोट्—	तुदतु, तुदतात्	तुद, तुदतात्	तुदानि
	तुदताम्	तुदस्व	तुदै
लिङ्—	तुदेत्	तुदेः	तुदेयम्
	तुदेत	तुदेथाः	तुदेय
लिङ्—	तुद्यात्	तुद्याः	तुद्यासम्
	तुत्सीष्ट	तुत्सीष्ठाः	तुत्सीय
लुङ्—	अतौत्सीत्	अतौत्सीः	अतौत्सम्
	अतुत्त	अतुत्थाः	अतुत्सि

लङ्—	अतोत्स्यत्	अतोत्स्यथाः	अतोत्स्यम्
	अतोत्स्यत	अतोत्स्यथाः	अतोत्स्ये

पाक अर्थक भ्रस्ज धातु सकर्म्मक उभयपदी लट्, लोट्, लङ्, लिङ्, लकार परे रहते भ्र को भृ हो जाता है और स के स्थानमें ज हो जाता है, और लिट् आदि लकार परे रहते कहीं २ भर्ज हो जाता है; प्रथम आदि पुरुषों के एक वचन के रूप,—

एकवचन.	प्रथम पुरुष.	मध्यम पुरुष.	उत्तम पुरुष.
	भृज्जति	भृज्जसि	भृज्जामि
लट्—	भृज्जते	भृज्जेथे	भृज्जे
	बभर्ज	बभर्जिथ, बभ्रष्ट	बभ्रज्ज
लिट्—	बभर्जे	बभर्जिषे	बभ्रज्जे
	बभ्रज्जे	बभ्रष्टे	"
लुट्—	भ्रष्टा, भर्ष्टा	भ्रष्टासि, भर्ष्टासि	भ्रष्टास्मि, भर्ष्टास्मि
	" "	भ्रष्टासे, भर्ष्टासे	भ्रष्टाहे, भर्ष्टाहे
	भ्रक्ष्यति	भ्रक्ष्यसि	भ्रक्ष्यामि
लृट्—	भर्क्ष्यति	भर्क्ष्यसि	भर्क्ष्यामि
	भ्रक्ष्यते	भ्रक्ष्यसे	भ्रक्ष्ये
	भर्क्ष्यते	भर्क्ष्यसे	भर्क्ष्ये
लोट्—	भृज्जतु, भृज्जतात्	भृज्ज, भृज्जतात्	भृज्जानि
	भृज्जताम्	भृज्जस्व	भृज्जै
लङ्—	अभृज्जत्	अभृज्जः	अभृज्जम्
	अभृज्जत	अभृज्जथाः	अभृज्जे

लिङ्—	भृज्जेत् भृक्षीष्ट	भृज्जेः भृक्षीष्ठाः	भृज्जेयम् भृक्षीय
लिङ्—	भृज्ज्यात भ्रक्षीष्ट,भर्क्षीष्ट	भृज्ज्याः भ्रक्षीष्ठाः,भर्क्षीष्ठाः	भृज्ज्यासम् भ्रक्षीय, भर्क्षीय
लुङ्—	अभ्राक्षीत् अभार्क्षीत् अभ्रष्ट अभर्ष्ट	अभ्राक्षीः अभार्क्षीः अभ्रष्ठाः अभर्ष्ठाः	अभ्राक्षीपम् अभार्क्षीपम् अभ्राक्षि अभर्क्षि
लृङ्—	अभ्रक्ष्यत् अभर्क्ष्यत् अभ्रक्ष्यत अभर्क्ष्यत	अभ्रक्ष्यः अभर्क्ष्यः अभ्रक्ष्यथाः अभर्क्ष्यथाः	अभ्रक्ष्यम् अभर्क्ष्यम् अभ्रक्ष्यि अभर्क्ष्यि

मिलने अर्थमें उभयपदी अ, विकरणक अकर्मक मिल् धातुके लट् आदि के प्रथम आदि पुरुषों के एक २ वचन के रूप,—

एकवचन.	प्रथम पुरुष.	मध्यम पुरुष.	उत्तम पुरुष.
लट्—	मिलति मिलते	मिलसि मिलसे	मिलामि मिले
लिट्—	मिमेल मिमिले	मिमेलिथ मिमिलिषे	मिमेल मिमिले
लुट्—	मेलिता "	मेलितासि मेलितासे	मेलितास्मि मेलिताहे

लट्—	मेलिप्पति	मेलिप्पसि	मेलिप्पामि
	मेलिप्पते	मेलिप्पसे	मेलिप्पे
लोट्—	मिलतु,मिलतात्	मिल,मिलतात्	मिलानि
	मिलताम्	मिलस्व	मिलै
लङ्—	अमिलत्	आमिलः	आमिलम्
लिङ्—	मिलेत्	मिलेः	मिलेयम्
	मिलेत	मिलेथाः	मिलेय
लिङ्—	मिल्यात्	मिल्याः	मिल्यासम्
	मिलिषीष्ट	मिलिषीष्ठाः	मिलिषीय
लुङ्—	अमेलीत्	अमेलीः	अमेलिषम्
	अमेलिष्ट	अमेलिष्ठाः	अमेलिषि
लृङ्—	अमेलिप्यत्	अमेलिप्यः	अमेलिप्यम्
	अमेलिप्यत	अमेलिप्यथाः	अमेलिप्ये

मोचन अर्थक सकर्म्मक उभयपदी मुच् धातु से लट् लोट्, प्रेरणार्थक लिङ् पर रहते मुच् को मुञ्च हो जाता है;लट्,आदि के प्रथम आदि पुरुषों के एक २ वचन के रूप.

एकवचन.	प्रथम पुरुष.	मध्यम पुरुष.	उत्तम पुरुष.
लट्——	मुञ्चति	मुञ्चसि	मुञ्चामि
	मुञ्चते	मुञ्चसे	मुञ्चे
लिट्——	मुमोच	मुमोचिथ	मुमोच, मुमुच
	मुमुचे	मुमुचिषे	मुमुचे
लुट्——	मोक्ता	मोक्तासि	मोक्तास्मि
	,,	मोक्तासे	मोक्ताहे

पप्रच्छिथ,पप्रष्ट	पप्रच्छथुः	पप्रच्छ	मध्यम.
पप्रच्छ	पप्रच्छिव	पप्रच्छिम	उत्तम.

लुट् का रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
प्रष्टा	प्रष्टारौ	प्रष्टारः	प्रथम.
प्रष्टासि	प्रष्टास्थः	प्रष्टास्थ	मध्यम.
प्रष्टास्मि	प्रष्टास्वः	प्रष्टास्मः	उत्तम.

लृट् का रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति	प्रथम.
प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ	मध्यम.
प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः	उत्तम.

लोट् का रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पृच्छतु,पृच्छतात्	पृच्छताम्	पृच्छन्तु	प्रथम.
पृच्छ,पृच्छतात्	पृच्छतम्	पृच्छत	मध्यम.
पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम	उत्तम.

लङ् के रूप—,

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्	प्रथम.
अपृच्छः	अपृछतम्	अपृच्छत	मध्यम.
अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम	उत्तम.

विधिलिङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः	प्रथम.
पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत	मध्यम
पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम	उत्तम.

आशीर्लिङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पृच्छयात्	पृच्छयास्ताम्	पृच्छयासुः	प्रथम.
पृच्छयाः	पृच्छयास्तम्	पृच्छयास्त	मध्यम.
पृच्छयासम्	पृच्छयास्व	पृच्छयास्म	उत्तम.

लुङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अप्राक्षीत्	अप्राष्टाम्	अप्राक्षुः	प्रथम.
अप्राक्षीः	अप्राष्टम्	अप्राष्ट	मध्यम.
अप्राक्षम्	अप्राक्ष्व	अप्राक्ष्म	उत्तम.

लृङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अप्रक्ष्यत्	अप्रक्ष्यताम्	अप्रक्ष्यन्	प्रथम.
अप्रक्ष्यः	अप्रक्ष्यतम्	अप्रक्ष्यत	मध्यम.
अप्रक्ष्यम्	अप्रक्ष्याव	अप्रक्ष्याम	उत्तम.

इष् धातु इच्छा अर्थ परस्मै पदी;

लट् का रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.

इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति	प्रथम.
इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ	मध्यम.
इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः	उत्तम.

लिट् का रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
इयेष	ईषतुः	ईषुः	प्रथम.
इयेषिथ	ईषथुः	ईष	मध्यम.
इयेष	ईषिव	ईषिम	उत्तम.

लुट् का रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
एषिता	एषितारौ	एषितारः	—प्रथम.
एष्टा	एष्टारौ	एष्टारः	
एषितासि	एषितास्थः	एषितास्थ	—मध्यम.
एष्टासि	एष्टास्थः	एष्टास्थ	
एषितास्मि	एषितास्वः	एषितास्मः	—उत्तम.
एष्टास्मि	एष्टास्वः	एष्टास्मः	

लृट् का रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति	प्रथम.
एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ	मध्यम.
एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः	उत्तम.

लोट् का रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.

इच्छतु,इच्छतात्	इच्छताम्	इच्छन्तु	प्रथम.
इच्छ,इच्छतात्	इच्छतम्	इच्छत	मध्यम.
इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम	उत्तम.

लङ् का रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्	प्रथम.
ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत	मध्यम.
ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम	उत्तम.

विधिलिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
इच्छेत	इच्छेताम्	इच्छेयुः	प्रथम.
इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत	मध्यम.
इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम	उत्तम.

आशीर्लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
इष्यात्	इष्यास्ताम्	इष्यासुः	प्रथम.
इष्याः	इष्यास्तम्	इष्यास्त	मध्यम.
इष्यासम्	इष्यास्व	इष्यास्म	उत्तम.

लुङ् का रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
ऐषीत्	ऐषिष्टाम्	ऐषिषुः	प्रथम.
ऐषीः	ऐषिष्टम्	ऐषिष्ट	मध्यम.
[illegible]	[illegible]	ऐषिष्म	उत्तम.

लङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवनन.	पुरुष.
ऐपिप्यत्	ऐपिप्यताम्	ऐपिप्यन्	प्रथम.
ऐपिप्यः	ऐपिप्यतम्	ऐपिप्यत	मध्यम.
ऐपिप्यम्	ऐपिप्याव	ऐपिप्याम	उत्तम.

प्राणत्यागार्थक (अकर्म्मक)मृङ् धातुसे लट्, लोट्, लङ्, लिङ् और लुङ्, आत्मने पदी होता है; और लिट्, लुट्, लट्, के स्थानमें परस्मैपद होताहै यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते	प्रथम.
म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे	मध्यम.
म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे	उत्तम.

लोट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्	प्रथम.
म्रियस्व	म्रियेथाम्	म्रियध्वम्	मध्यम.
म्रियै	म्रियावहै	म्रियामहै	उत्तम.

लङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त	प्रथम.
अम्रियथाः	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम्	मध्यम.
अम्रिये	अम्रियावहि	आम्रयामहि	उत्तम.

विधिलिङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
म्रियेत	म्रियेयाताम्	म्रियेरन्	प्रथम.
म्रियेथाः	म्रियेयाथाम्	म्रियेध्वम्	मध्यम.
म्रियेय	म्रियेवहि	म्रियेमहि	उत्तम.

लुङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अमृत	अमृषाताम्	अमृषत	प्रथम.
अमृथाः	अमृषाथाम्	अमृढ्वम्	मध्यम.
अमृषि	अमृष्वहि	अमृष्महि	उत्तम.

परस्मैपद लिट् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
ममार	मम्रतुः	मम्रुः	प्रथम.
ममर्थ	मम्रथुः	मम्र	मध्यम.
ममार, ममर	मम्रिव	मम्रिम	उत्तम.

लृट् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
मरिष्यति	मरिष्यतः	मरिष्यन्ति	प्रथम.
मरिष्यसि	मरिष्यथः	मरिष्यथ	मध्यम.
मरिष्यामि	मरिष्यावः	मरिष्यामः	उत्तम.

इति तुदादयः ॥

अथ रुधादि=अर्थात् नम् विकरणक धातु ओंके रूप.

आच्छादन अर्थक उभयपदी सकर्म्मक रुध् धातु.

परस्मैपद, लट् का रूप यथा,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
रुणद्धि	रुन्धः	रुन्धन्ति	प्रथम.
रुणत्सि	रुन्धः	रुन्ध	मध्यम.
रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः	उत्तम.

आत्मनेपद, लट् का रूप यथा,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
रुन्धे	रुन्धाते	रुन्धते	प्रथम.
रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्द्ध्वे	मध्यम.
रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे	उत्तम.

परस्मैपद, लङ् का रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अरुणत्	अरुन्धाम्	अरुन्धन्	प्रथम.
अरुणः, अरुणत्	अरुन्धम्	अरुन्ध	मध्यम.
अरुन्ध	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म	उत्तम.

आत्मनेपद, लङ् का रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अरुन्ध	अरुन्धताम्	अरुन्धत	प्रथम.
अरुन्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्ध्वम्	मध्यम.
अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्महि	उत्तम.

परस्मैपद, लिट् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
रुरोध	रुरुधतुः	रुरुधुः	प्रथम.

रुरोधिथ	रुरुधथुः	रुरुध	मध्यम.
रुरोध	रुरुधिव	रुरुधिम	उत्तम.

आत्मनेपद, लिट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
रुरुधे	रुरुधाते	रुरुधिरे	प्रथम.
रुरुधिषे	रुरुधाथे	रुरुधिढ्वे	मध्यम.
रुरुधे	रुरुधिवहे	रुरुधिमहे	उत्तम.

आत्मनेपद, तथा परस्मैपद के लुङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अरुधत् अरौत्सीत्	अरुधताम् अरौद्धाम्	अरुधन् अरौत्सुः	—प्रथम.
अरुधः अरौत्सीः	अरुधतम् अरौद्ध	अरुधत अरौद्ध	—मध्यम.
अरुधम् अरौत्सम्	अरुधाव अरौत्स्व	अरुधाम अरौत्स्म	—उत्तम.

आत्मनेपद, लङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अरुद्ध	अरुत्साताम्	अरुत्सत	प्रथम.
अरुद्धाः	अरुत्साथाम्	अरुध्वम्	मध्यम.
अरुत्सि	अरुत्स्वहि	अरुत्स्महि	उत्तम.

परस्मैपद, लृट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
रो[illegible]	रोत्स्यतः	रोत्स्यन्ति	प्रथम.

रोत्स्यसि	रोत्स्यथः	रोत्स्यथ	मध्यम.
रोत्स्यामि	रोत्स्यावः	रोत्स्यामः	उत्तम.

आत्मनेपद, लृट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
रोत्स्यते	रोत्स्येते	रोत्स्यन्ते	प्रथम.
रोत्स्यसे	रोत्स्येथे	रोत्स्यध्वे	मध्यम.
रोत्स्ये	रोत्स्यावहे	रोत्स्यामहे	उत्तम.

परस्मैपद, लोट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
रुणद्धु	रुन्धाम्	रुन्धन्तु	प्रथम.
रुन्धि	रुन्धम्	रुन्ध	मध्यम.
रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम	उत्तम.

आत्मनेपद, लोट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
रुन्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्	प्रथम.
रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्ध्वम्	मध्यम.
रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम	उत्तम.

परस्मैपद, प्रेरणार्थक लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः	प्रथम.
रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात	मध्यम.
रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम	उत्तम.

आत्मनेपद, प्रेरणार्थक लिङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्	प्रथम.
रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्	मध्यम.
रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि	उत्तम.

चूर्ण अर्थक (सकर्म्मक) चतुर्थ गणकी पिष् नम् विकरणक,–

लट्,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पिनष्टि	पिंष्टः	पिंषन्ति	प्रथम.
पिनक्षि	पिंष्टः	पिंष्ट	मध्यम.
पिनष्मि	पिंष्वः	पिंष्मः	उत्तम.

लिट्,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पिपेष	पिपिषतुः	पिपिषुः	प्रथम.
पिपेषिथ	पिपिषथुः	पिपिष	मध्यम.
पिपेष	पिपिषिव	पिपिषिम	उत्तम.

लुट्,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पेष्टा	पेष्टारौ	पेष्टारः	प्रथम.
पेष्टासि	पेष्टास्थः	पेष्टास्थ	मध्यम.
[illegible]	पेष्टास्वः	पेष्टास्मः	उत्तम.

लट्,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पेक्ष्यति	पेक्ष्यतः	पेक्ष्यन्ति	प्रथम.
पेक्ष्यसि	पेक्ष्यथः	पेक्ष्यथ	मध्यम.
पेक्ष्यामि	पेक्ष्यावः	पेक्ष्यामः	उत्तम.

लोट्,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पिनष्टु पिंष्टात्,	पिंष्टाम्	पिंषन्तु	प्रथम.
पिण्ढि, पिंष्टात्	पिंष्टम्	पिंष्ट	मध्यम.
पिनषाणि	पिनषाव	पिनषाम	उत्तम.

लङ्,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अपिनट्	अपिंष्टाम्	अपिंषन्	प्रथम.
अपिनः	अपिंष्टम्	अपिंष्ट	मध्यम.
अपिनषम्	अपिंष्व	अपिंष्म	उत्तम.

प्रेरणार्थक लिङ्,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पिंष्यात्	पिंष्याताम्	पिंष्युः	प्रथम.
पिंष्याः	पिंष्यातम्	पिंष्यात	मध्यम.
पिंष्याम्	पिंष्याव	पिंष्याम	उत्तम.

आशीरर्थक लिङ्,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.

आत्मनेपद के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
तनुते	तन्वाते	तन्वते	प्रथम.
तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे	मध्यम.
तन्वे	तनुवहे	तनुमहे	उत्तम.

परस्मैपद लिट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
ततान	तेनतुः	तेनुः	प्रथम.
तेनिथ	तेनथुः	तेन	मध्यम.
ततान, ततन	तेनिव	तेनिम	उत्तम.

आत्मनेपद, लिट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
तेने	तेनाते	तेनिरे	प्रथम.
तेनिषे	तेनाथे	तेनिढ्वे	मध्यम.
तेने	तेनिवहे	तेनिमहे	उत्तम.

परस्मैपद, लुट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
तनिता	तनितारौ	तनितारः	प्रथम.
तनितासि	तनितास्थः	तनितास्थ	मध्यम.
तनितास्मि	तनितास्वः	तनितास्मः	उत्तम.

आत्मनेपद, लुट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.

तनिता	तनितारौ	तनितारः	प्रथम.
तनितासे	तनितासाथे	तनिताध्वे	मध्यम.
तनिताहे	तनितास्वहे	तनितास्महे	उत्तम.

परस्मैपद, लृट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति	प्रथम
तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ	मध्य
तनिष्यामि	तनिष्यावः	तनिष्यामः	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
तनिष्यते	तनिष्येते	तनिष्यन्ते	प्रथम.
तनिष्यसे	तनिष्येथे	तनिष्यध्वे	मध्यम.
तनिष्ये	तनिष्यावहे	तनिष्यामहे	उत्तम.

परस्मैपद, लोट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
तनोतु	तनुताम्	तन्वतु	प्रथम.
तनु	तनुतम्	तनुत	मध्यम.
तनवानि	तनवाव	तनवाम	उत्तम.

आत्मने पद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्	प्रथम.
तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्	मध्यम.
तन्वै	तन्वावहै	तन्वामहै	उत्तम.

परस्मैपद, लङ् के रूप,

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अतनोत्	अतन्वाताम्	अतन्वन्	प्रथम.
अतन्वः	अतन्वतम्	अतन्वत	मध्यम.
अतन्वम्	अतन्वाव	अतन्वाम	उत्तम.

प्रेरणार्थक परस्मैपद लिङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः	प्रथम.
तनुयाः	तनुयातं	तनुयात	मध्यम.
तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम	उत्तम.

आत्मनेपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्	प्रथम.
तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्	मध्यम.
तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि	उत्तम.

आशीरर्थक परस्मैपद, लिङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
तन्यात्	तन्यास्ताम्	तन्यासुः	प्रथम.
तन्याः	तन्यास्तम्	तन्यास्त	मध्यम.
तन्यासम्	तन्यास्व	तन्यास्म	उत्तम.

आत्मनेपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
तनिषीष्ट	तनिषीयास्ताम्	तनिषीरन्	प्रथम.

तनिपीष्ठाः	तनिपीयास्थाम्	तनिपीध्वम्	मध्यम.
तनिपीय	तनिपीवहि	तनिपीमहि	उत्तम.

परस्मैपद लुङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अतानीत्	अतानिष्टाम्	अतानिषुः	—प्रथम.
अतनीत्	अतनिष्टाम्	अतनिषुः	
अतानीः	अतानिष्टम्	अतानिष्ट	—मध्यम.
अतनीः	अतनिष्टम्	अतनिष्ट	
अतानिषम्	अतानिष्व	अतानिष्म	—उत्तम.
अतनिषम्	अतनिष्व	अतनिष्म	

परस्मैपद लृङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अतनिष्यत्	अतनिष्यताम्	अतनिष्यन्	प्रथम.
अतनिष्यः	अतनिष्यतम्	अतनिष्यत	मध्यम.
अतनिष्यम्	अतनिष्याव	अतनिष्याम	उत्तम.

आत्मनेपद लृङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अतनिष्यत	अतनिष्येताम्	अतनिष्यन्त	प्रथम.
अतनिष्यथाः	अतनिष्येथाम्	अतनिष्यध्वम्	मध्यम.
अतनिष्ये	अतनिष्यावहि	अतनिष्यामहि	उत्तम.

करने अर्थमें कृञ् धातु सकर्मक उ प्रत्ययान्त उभयपदी।

परस्मैपद लट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	प्रथम.
करोषि	कुरुथः	कुरुथ	मध्यम.
करोमि	कुर्वः	कुर्मः	उत्तम.

लिट्,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
चकार	चक्रतुः	चक्रुः	प्रथम.
चकर्थ	चक्रथुः	चक्र	मध्यम.
चकार, चकर	चकृव	चकृम	उत्तम.

लुट्,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
कर्त्ता	कर्त्तारौ	कर्त्तारः	प्रथम.
कर्त्तासि	कर्त्तास्थः	कर्त्तास्थ	मध्यम.
कर्त्तास्मि	कर्त्तास्वः	कर्त्तास्मः	उत्तम.

लृट्,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति	प्रथम.
करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ	मध्यम.
करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः	उत्तम.

प्रेरणार्थक और आशीरर्थक लोट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
करोतु, कुरुतात्	कुरुताम्	कुर्वन्तु	प्रथम.

कुरु, कुरुतात्	कुरुतम्	कुरुत	मध्यम.
करवाणि	करवाव	करवाम	उत्तम.

लङ् का रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्	प्रथम.
अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत	मध्यम.
अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म	उत्तम.

प्रेरणार्थक लिङ्,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
कुर्य्यात्	कुर्य्याताम्	कुर्य्युः	प्रथम.
कुर्य्याः	कुर्य्यातम्	कुर्य्यात	मध्यम.
कुर्य्याम्	कुर्य्याव	कुर्य्याम	उत्तम.

आशीरर्थक लिङ्,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
क्रियात्	क्रियास्ताम्	क्रियासुः	प्रथम.
क्रियाः	क्रियास्तम्	क्रियास्त	मध्यम.
क्रियासम्	क्रियास्व	क्रियास्म	उत्तम.

लुङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षुः	प्रथम.
अकार्षीः	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट	मध्यम.
अकार्षम्	अकार्ष्व	अकार्ष्म	उत्तम.

लृङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अकरिष्यत्	अकरिष्यताम्	अकरिष्यन्	प्रथम.
अकरिष्यः	अकरिष्यतम्	अकरिष्यत	मध्यम.
अकरिष्यम्	अकरिष्याव	अकरिष्याम	उत्तम.

अथ आत्मनेपद, लट् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते	प्रथम.
कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे	मध्यम.
कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे	उत्तम.

लिट् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
चक्रे	चक्राते	चक्रिरे	प्रथम.
चकृषे	चक्राथे	चकृढ्वे	मध्यम.
चक्रे	चकृवहे	चकृमहे	उत्तम.

लुट् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
कर्त्ता	कर्त्तारौ	कर्त्तारः	प्रथम.
कर्त्तासे	कर्त्तासाथे	कर्त्ताध्वे	मध्यम.
कर्त्ताहे	कर्त्तास्वहे	कर्त्तास्महे	उत्तम.

लृट् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते	प्रथम.

करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे	मध्यम.
करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे	उत्तम.

लोट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्	प्रथम.
कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्	मध्यम.
करवै	करवावहै	करवामहै	उत्तम.

लङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत	प्रथम.
अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्	मध्यम.
अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि	उत्तम.

प्रेरणार्थक लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्	प्रथम.
कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्	मध्यम.
कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि	उत्तम.

लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
कृषीष्ट	कृषीयास्ताम्	कृषीरन्	प्रथम.
कृषीष्ठाः	कृषीयास्थाम्	कृषीध्वम्	मध्यम.
कृषीय	कृषीवहि	कृषीमहि	उत्तम.

लुङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अकृत	अकृपाताम्	अकृपत	प्रथम.
अकृथाः	अकृपाथाम्	अकृढ्वम्	मध्यम.
अकृषि	अकृष्वहि	अकृष्महि	उत्तम.

लृङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अकरिष्यत	अकरिष्येताम्	अकरिष्यन्त	प्रथम.
अकरिष्यथाः	अकरिष्येथाम्	अकरिष्यध्वम्	मध्यम.
अकरिष्ये	अकरिष्यावहि	अकरिष्यामहि	उत्तम.

इति तनादयः ॥

अथ क्र्यादि नवम गण अर्थात् णा विकरणक खरीदनें अर्थ में सकर्म्मक उभयपदी क्री धातु.

परस्मैपद लट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति	प्रथम.
क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ	मध्यम.
क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः	उत्तम.

आत्मने पद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते	प्रथम.

क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे	मध्यम.
क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे	उत्तम.

परस्मैपद लिट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
चिक्राय	चिक्रियतुः	चिक्रियुः	प्रथम.
चिक्रयिथ, चिक्रेथ	चिक्रियथुः	चिक्रिय	मध्यम.
चिक्राय	चिक्रियिव	चिक्रियिम	उत्तम.

आत्मने पद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
चिक्रिये	चिक्रियाते	चिक्रियिरे	प्रथम.
चिक्रिषे	चिक्रियाथे	चिक्रिढ्वे	मध्यम.
चिक्रिये	चिक्रियिवहे	चिक्रियिमहे	उत्तम.

परस्मैपद, लुट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
क्रेता	क्रेतारौ	क्रेतारः	प्रथम.
क्रेतासि	क्रेतास्थः	क्रेतास्थ	मध्यम.
क्रेतास्मि	क्रेतास्वः	क्रेतास्मः	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
क्रेता	क्रेतारौ	क्रेतारः	प्रथम.
क्रेतासे	क्रेतासाथे	क्रेताध्वे	मध्यम.
क्रेताहे	क्रेतास्वहे	क्रेतास्महे	उत्तम.

परस्मैपद, लृट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति	प्रथम.
क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ	मध्यम.
क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
क्रेष्यते	क्रेष्येते	क्रेष्यन्ते	प्रथम.
क्रेष्यसे	क्रेष्येथे	क्रेष्यध्वे	मध्यम.
क्रेष्ये	क्रेष्यावहे	क्रेष्यामहे	उत्तम.

प्रेरणार्थक और आशीरर्थक परस्मैपद लोट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
क्रीणातु,क्रीणीतात्	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु	प्रथम.
क्रीणीहि, ”	क्रीणीतम्	क्रीणीत	मध्यम.
क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
क्रीणताम्	क्रीणीताम्	क्रीणन्ताम्	प्रथम.
क्रीणीष्व	क्रीणीथाम्	क्रीणीध्वम्	मध्यम.
क्रीणै	क्रीणीवहै	क्रीणीमहै	उत्तम.

परस्मैपद, लङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.

अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्	प्रथम.
अक्रीणीः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत	मध्यम.
अक्रीणम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अक्रीणीत	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्त	प्रथम.
अक्रीणीथाः	अक्रीणीयाम्	अक्रीणीध्वम्	मध्यम.
अक्रीणी	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि	उत्तम.

प्रेरणार्थक परस्मैपद, लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः	प्रथम.
क्रीणीथाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात	मध्यम.
क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्	प्रथम.
क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्	मध्यम.
क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि	उत्तम.

परस्मैपद, आशीर्लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
क्रीयात्	क्रीयास्ताम्	क्रीयासुः	प्रथम.
क्रीयाः	क्रीयास्तम्	क्रीयास्त	मध्यम.
क्रीयासम्	[illegible]	क्रीयास्म	उत्तम.

आत्मनेपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
क्षेप्सीष्ट	क्षेप्सीयास्ताम्	क्षेप्सीरन्	प्रथम.
क्षेप्सीष्ठाः	क्षेप्सीयास्थाम्	क्षेप्सीध्वम्	मध्यम.
क्षेप्सीय	क्षेप्सीवहि	क्षेप्सीमहि	उत्तम.

परस्मैपद, लुङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अक्षैप्सीत्	अक्षैप्ताम्	अक्षैप्सुः	प्रथम.
अक्षैप्सीः	अक्षैप्तम्	अक्षैप्त	मध्यम.
अक्षैप्सम्	अक्षैप्स्व	अक्षैप्स्म	उत्तम.

आत्मनेपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अक्षिप्त	अक्षिप्साताम्	अक्षिप्सत	प्रथम.
अक्षिप्थाः	अक्षिप्साथाम्	अक्षिब्ध्वम्	मध्यम.
अक्षिप्सि	अक्षिप्स्वहि	अक्षिप्स्महि	उत्तम.

परस्मैपद, लृङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अक्षेप्स्यत्	अक्षेप्स्यताम्	अक्षेप्स्यन्	प्रथम.
अक्षेप्स्यः	अक्षेप्स्यतम्	अक्षेप्स्यत	मध्यम.
अक्षेप्स्यम्	अक्षेप्स्याव	अक्षेप्स्याम	उत्तम.

आत्मनेपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अक्षेप्स्यत	अक्षेप्स्येताम्	अक्षेप्स्यन्त	प्रथम.

अक्रेण्यथाः	अक्रेण्यथाम्	अक्रेण्यध्वम्	मध्यम.
अक्रेण्ये	अक्रेण्यावहि	अक्रेण्यामहि	उत्तम.

तर्पण तथा कान्ति अर्थक उभयपदी सकर्म्मक प्री

परस्मैपद, लट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
प्रीणाति	प्रीणीतः	प्रीणन्ति	प्रथम.
प्रीणासि	प्रीणीथः	प्रीणीथ	मध्यम.
प्रीणामि	प्रीणीवः	प्रीणीमः	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
प्रीणीते	प्रीणाते	प्रीणते	प्रथम.
प्रीणीषे	प्रीणाथे	प्रीणीध्वे	मध्यम.
प्रीणे	प्रीणीवहे	प्रीणीमहे	उत्तम.

परस्मैपद, लिट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पिप्राय	पिप्रियतुः	पिप्रियुः	प्रथम.
पिप्रयिथ, पिप्रेथ	पिप्रियथुः	पिप्रिय	मध्यम.
पिप्राय	पिप्रियिव	पिप्रियिम	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पिप्रिये	पिप्रियाते	पिप्रियिरे	प्रथम.
	पिप्रि[illegible]	पिप्रि[illegible]	मध्यम.

पिप्रिये	पिप्रियिवहे	पिप्रियिमहे	उत्तम.

परस्मैपद, लुट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
प्रेता	प्रेतारौ	प्रेतारः	प्रथम.
प्रेतासि	प्रेतास्थः	प्रेतास्थ	मध्यम.
प्रेतास्मि	प्रेतास्वः	प्रेतास्मः	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
प्रेता	प्रेतारौ	प्रेतारः	प्रथम.
प्रेतासे	प्रेतासाथे	प्रेताध्वे	मध्यम.
प्रेताहे	प्रेतास्वहे	प्रेतास्महे	उत्तम.

परस्मैपद, लृट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
प्रेष्यति	प्रेष्यतः	प्रेष्यन्ति	प्रथम.
प्रेष्यसि	प्रेष्यथः	प्रेष्यथ	मध्यम.
प्रेष्यामि	प्रेष्यावः	प्रेष्यामः	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
प्रेष्यते	प्रेष्येते	प्रेष्यन्ते	प्रथम.
प्रेष्यसे	प्रेष्येथे	प्रेष्यध्वे	मध्यम.
प्रेष्ये	प्रेष्यावहे	प्रेष्यामहे	उत्तम.

प्रेरणार्थक तथा आशीरर्थक परस्मैपद, लोट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.

अक्रेण्यथाः	अक्रेण्ययाम्	अक्रेण्यध्वम्	मध्यम.
अक्रेण्ये	अक्रेण्यावहि	अक्रेण्यामहि	उत्तम.

तर्पण तथा कान्ति अर्थक उभयपदी सकर्म्मक प्री धा

परस्मैपद, लट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
प्रीणाति	प्रीणीतः	प्रीणन्ति	प्रथम.
प्रीणासि	प्रीणीथः	प्रीणीथ	मध्यम.
प्रीणामि	प्रीणीवः	प्रीणीमः	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
प्रीणीते	प्रीणाते	प्रीणते	प्रथम.
प्रीणीषे	प्रीणाथे	प्रीणीध्वे	मध्यम.
प्रीणे	प्रीणीवहे	प्रीणीमहे	उत्तम.

परस्मैपद, लिट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पिप्राय	पिप्रियतुः	पिप्रियुः	प्रथम.
पिप्रयिथ, पिप्रेथ	पिप्रियथुः	पिप्रिय	मध्यम.
पिप्राय	पिप्रियिव	पिप्रियिम	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
पिप्रिये	पिप्रियाते	पिप्रियिरे	प्रथम.
पिप्रिषे	पिप्रियाथे	पिप्रिढ्वे	मध्यम.

प्रीणातु,प्रीणीतात्	प्रीणीताम्	प्रीणन्तु	प्रथम.
प्रीणीहि,प्रीणीतात्	प्रीणीतम्	प्रीणीत	मध्यम.
प्रीणानि	प्रीणाव	प्रीणाम	उत्तम.

आत्मनेपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
प्रीणताम्	प्रीणीताम्	प्रीणन्ताम्	प्रथम.
प्रीणीष्व	प्रीणीथाम्	प्रीणीध्वम्	मध्यम.
प्रीणै	प्रीणीवहै	प्रीणीमहै	उत्तम.

परस्मैपद, लङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अप्रीणात्	अप्रीणीताम्	अप्रीणन्	प्रथम.
अप्रीणीः	अप्रीणीतम्	अप्रीणीत	मध्यम.
अप्रीणाम्	अप्रीणीव	अप्रीणीम	उत्तम.

आत्मनेपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अप्रीणीत	अप्रीणीताम्	अप्रीणत	प्रथम.
अप्रीणीथाः	अप्रीणीथाम्	अप्रीणीध्वम्	मध्यम.
अप्रीणी	अप्रीणीवहि	अप्रीणीमहि	उत्तम.

परस्मैपद लिङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
प्रीणीयात्	प्रीणीयाताम्	प्रीणीयुः	प्रथम.
प्रीणीयाः	प्रीणीयातम्	प्रीणीयात	मध्यम.
प्रीणीयाम्	प्रीणीयाव	प्रीणीयाम	उत्तम.

आत्मनेपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
प्रीणीत	प्रीणीयाताम्	प्रीणीरन्	प्रथम.
प्रीणीथाः	प्रीणीयाथाम्	प्रीणीध्वम्	मध्यम.
प्रीणीय	प्रीणीवहि	प्रीणीमहि	उत्तम.

आशीरर्थक परस्मैपद, लिङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
प्रीयात्	प्रीयास्ताम्	प्रीयासुः	प्रथम.
प्रीयाः	प्रीयास्तम्	प्रीयास्त	मध्यम.
प्रियासम्	प्रीयास्व	प्रीयास्म	उत्तम.

आत्मनेपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
प्रेषीष्ट	प्रेषीयास्ताम्	प्रेषीरन्	प्रथम.
प्रेषीष्ठाः	प्रेषीयास्थाम्	प्रेषीध्वम्	मध्यम.
प्रेषीय	प्रेषीवहि	प्रेषीमहि	उत्तम.

परस्मैपद लुङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अप्रैषीत्	अप्रैष्टाम्	अप्रैषुः	प्रथम.
अप्रैषीः	अप्रैष्टम्	अप्रैष्ट	मध्यम.
		अप्रैष्म	उत्तम.

अप्रेष्ट	अप्रेषाताम्	अप्रेषत	प्रथम.
अप्रेष्ठाः	अप्रेषाथाम्	अप्रेध्वम्	मध्यम.
अप्रेषि	अप्रेष्वहि	अप्रेष्महि	उत्तम.

परस्मैपद, लङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अप्रेष्यत्	अप्रेष्यताम्	अप्रेष्यन्	प्रथम.
अप्रेष्यः	अप्रेष्यतम्	अप्रेष्यत	मध्यम.
अप्रेष्यम्	अप्रेष्याव	अप्रेष्याम	उत्तम.

आत्मने पद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अप्रेष्यत	अप्रेष्येताम्	अप्रेष्यन्त	प्रथम.
अप्रेष्यथाः	अप्रेष्येथाम्	अप्रेष्यध्वम्	मध्यम.
अप्रेष्ये	अप्रेष्यावहि	अप्रेष्यामहि	उत्तम.

पाक अर्थक उभयपदी सकर्म्मक श्री धातु.

लट् परस्मैपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
श्रीणाति	श्रीणीतः	श्रीणान्ति	प्रथम.
श्रीणासि	श्रीणीथः	श्रीणीथ	मध्यम
श्रीणामि	श्रीणीवः	श्रीणीमः	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
श्रीणीते	श्रीणाते	श्रीणते	प्रथम.

श्रीणीषे	श्रीणाथे	श्रीणीध्वे	मध्यम.
श्रीणे	श्रीणीवहे	श्रीणीमहे	उत्तम.

लिट् परस्मैपद,-

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
शिश्राय	शिश्रियतुः	शिश्रियुः	प्रथम.
शिश्रयिथ,शिश्रेथ	शिश्रियथुः	शिश्रिय	मध्यम.
शिश्राय	शिश्रियिव	शिश्रियिम	उत्तम.

आत्मनेपद,-

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
शिश्रिये	शिश्रियाते	शिश्रियिरे	प्रथम.
शिश्रिषे	शिश्रियाथे	शिश्रिढ्वे	मध्यम.
शिश्रिये	शिश्रियिवहे	शिश्रियिमहे	उत्तम.

लुट् परस्मैपद,-

	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
		श्रेतारः	प्रथम.
		श्रेतास्थ	मध्यम.
		तास्मः	उत्तम.

द,-

बहुवचन.	पुरुष.
श्रेतारः	प्रथम.
श्रेताध्वे	मध्यम.
श्रेतास्महे	उत्तम.

लृट् परस्मैपद,—

कवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
ष्यति	श्रेष्यतः	श्रेष्यन्ति	प्रथम.
ष्यसि	श्रेष्यथः	श्रेष्यथ	मध्यम.
ष्यामि	श्रेष्यावः	श्रेष्यामः	उत्तम.

आत्मनेपद,—

कवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
श्रेष्यते	श्रेष्येते	श्रेष्यन्ते	प्रथम.
श्रेष्यसे	श्रेष्येथे	श्रेष्यध्वे	मध्यम.
श्रेष्ये	श्रेष्यावहे	श्रेष्यामहे	उत्तम.

प्रेरणार्थक और आशीरर्थक लोट् परस्मैपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
श्रीणातु,श्रीणीतात्	श्रीणीताम्	श्रीणन्तु	प्रथम.
श्रीणाहि,श्रीणीतात्	श्रीणीतम्	श्रीणीत	मध्यम.
श्रीणानि	श्रीणाव	श्रीणाम	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
श्रीणताम्	श्रीणीताम्	श्रीणन्ताम्	प्रथम.
श्रीणीष्व	श्रीणीथाम्	श्रीणीध्वम्	मध्यम.
श्रीणै	श्रीणीवहै	श्रीणीमहै	उत्तम.

लङ् परस्मैपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.

अश्रीणात्	अश्रीणीताम्	अश्रीणन्	प्रथम.
अश्रीणाः	अश्रीणीतम्	अश्रीणीत	मध्यम.
अश्रीणम्	अश्रीणीव	अश्रीणीम	उत्तम.

आत्मनेपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अश्रीणीत्	अश्रीणीताम्	अश्रीणन्त	प्रथम.
अश्रीणथाः	अश्रीणीथाम्	अश्रीणीध्वम्	मध्यम.
अश्रीणी	अश्रीणीवहि	अश्रीणीमहि	उत्तम.

लिङ् परस्मैपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
श्रीणीयात्	श्रीणीयाताम्	श्रीणीयुः	प्रथम.
श्रीणीयाः	श्रीणीयातम्	श्रीणीयात	मध्यम
श्रीणीयाम्	श्रीणीयाव	श्रीणीयाम	उत्तम.

आत्मनेपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
श्रीणीत	श्रीणीयाताम्	श्रीणीरन्	प्रथम.
श्रीणीथाः	श्रीणीयाथाम्	श्रीणीध्वम्	मध्यम.
श्रीणीय	श्रीणीवहि	श्रीणीमहि	उत्तम.

आशीर्लिङ् परस्मैपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
श्रीयात्	श्रीयास्ताम्	श्रीयासुः	प्रथम.
श्रीयाः	श्रीयास्तम्	श्रीयास्त	मध्यम.
श्रीयासम्	श्रीयास्व	श्रीयास्म	उत्तम.

लृट् परस्मैपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
श्रेण्यति	श्रेण्यतः	श्रेण्यन्ति	प्रथम.
श्रेण्यसि	श्रेण्यथः	श्रेण्यथ	मध्यम.
श्रेण्यामि	श्रेण्यावः	श्रेण्यामः	उत्तम.

आत्मनेपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
श्रेण्यते	श्रेण्येते	श्रेण्यन्ते	प्रथम.
श्रेण्यसे	श्रेण्यथे	श्रेण्यध्वे	मध्यम.
श्रेण्ये	श्रेण्यावहे	श्रेण्यामहे	उत्तम.

प्रेरणार्थक और आशीरर्थक लोट् परस्मैपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
श्रीणातु,श्रीणीतात्	श्रीणीताम्	श्रीणन्तु	प्रथम.
श्रीणाहि,श्रीणीतात्	श्रीणीतम्	श्रीणीत	मध्यम.
श्रीणानि	श्रीणाव	श्रीणाम	उत्तम.

आत्मनेपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
श्रीणताम्	श्रीणीताम्	श्रीणन्ताम्	प्रथम.
श्रीणीष्व	श्रीणाथाम्	श्रीणीध्वम्	मध्यम.
श्रीणे	श्रीणीवहे	श्रीणीमहे	उत्तम.

लङ् परस्मैपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.

अश्रीणात्	अश्रीणीताम्	अश्रीणन्	प्रथम.
अश्रीणीः	अश्रीणीतम्	अश्रीणीत	मध्यम.
अश्रीणम्	अश्रीणीव	अश्रीणीम	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अश्रीणीत्	अश्रीणीताम्	अश्रीणन्त	प्रथम.
अश्रीणथाः	अश्रीणीथाम्	अश्रीणीध्वम्	मध्यम.
अश्रीणी	अश्रीणीवहि	अश्रीणीमहि	उत्तम.

लिङ् परस्मैपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
श्रीणीयात्	श्रीणीयाताम्	श्रीणीयुः	प्रथम.
श्रीणीयाः	श्रीणीयातम्	श्रीणीयात	मध्यम
श्रीणीयाम्	श्रीणीयाव	श्रीणीयाम	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
श्रीणीत	[illegible]	श्रीणीरन्	प्रथम.
[illegible]	[illegible]	श्रीणीध्वम्	मध्यम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
श्रेषीष्ट	श्रेषीयास्ताम्	श्रेषीरन्	प्रथम.
श्रेषीष्ठाः	श्रेषीयास्थाम्	श्रेषीध्वम्	मध्यम.
श्रेषीय	श्रेषीवहि	श्रेषीमहि	उत्तम.

लुङ् परस्मैपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अश्रैषीत्	अश्रैषिष्टाम्	अश्रैषिषुः	प्रथम.
अश्रैषीः	अश्रैषिष्टम्	अश्रैषिष्ट	मध्यम.
अश्रैषिषम्	अश्रैषिष्व	अश्रैषिष्म	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अश्रेष्ट	अश्रेषाताम्	अश्रेषत	प्रथम.
अश्रेष्ठाः	अश्रेषाथाम्	अश्रेध्वम्	मध्यम.
अश्रेषि	अश्रेष्वहि	अश्रेष्महि	उत्तम.

लृङ् परस्मैपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अश्रेष्यत्	अश्रेष्यताम्	अश्रेष्यन्	प्रथम.
अश्रेष्यः	अश्रेष्यतम्	अश्रेष्यत	मध्यम.
अश्रेष्यम्	अश्रेष्याव	अश्रेष्याम	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अश्रेष्यत	अश्रेष्येताम्	अश्रेष्यन्त	प्रथम.

अश्रेण्यथाः	अश्रेण्येथाम्	अश्रेण्यध्वम्	मध्यम.
अश्रेण्ये	अश्रेण्यावहि	अश्रेण्यामहि	उत्तम.

ग्रह अर्थक उभयपदी सकर्म्मक ग्रह धातु.

लट् परस्मैपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति	प्रथम.
गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ	मध्यम.
गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
गृह्णीते	गृह्णाते	गृह्णते	प्रथम.
गृह्णीषे	गृह्णाथे	गृह्णीध्वे	मध्यम.
गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे	उत्तम.

लिट् परस्मैपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
जग्राह	जगृहतुः	जगृहुः	प्रथम.
जग्रहिथ	जगृहथुः	जगृह	मध्यम.
जग्राह, जग्रह	जगृहिव	जगृहिम.	उत्तम.

आत्मने पद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
जगृहे	जगृहाते	जगृहिरे	प्रथम.
जगृहिषे	जगृहाथे	जगृहिढ्वे+ध्वे	मध्यम.
जगृहे	जगृहिवहे	जगृहिमहे	उत्तम.

लृट् परस्मैपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति	प्रथम.
ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ	मध्यम.
ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्यामः	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
ग्रहीष्यते	ग्रहीष्येते	ग्रहीष्यन्ते	प्रथम.
ग्रहीष्यसे	ग्रहीष्येथे	ग्रहीष्यध्वे	मध्यम.
ग्रहीष्ये	ग्रहीष्यावहे	ग्रहीष्यामहे	उत्तम.

प्रेरणार्थक लोट् परस्मैपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु	प्रथम.
गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत	मध्यम.
गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
गृह्णीताम्	गृह्णाताम्	गृह्णताम्	प्रथम.
गृह्णीष्व	गृह्णाथाम्	गृह्णीध्वम्	मध्यम.
गृह्णै	गृह्णावहै	गृह्णामहै	उत्तम.

लङ् परस्मैपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
—	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्	प्रथम.

अगृह्णः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत	मध्यम.
अगृह्णम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम	उत्तम.

आत्मनेपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अगृह्णीत	अगृह्णाताम्	अगृह्णत	प्रथम.
अगृह्णीथाः	अगृह्णाथाम्	अगृह्णीध्वम्	मध्यम.
अगृह्णि	अगृह्णीवहि	अगृह्णीमहि	उत्तम.

प्रेरणार्थक लिङ् परस्मैपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः	प्रथम.
गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात	मध्यम.
गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम	उत्तम.

आत्मनेपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
गृह्णीत	गृह्णीयाताम्	गृह्णीरन्	प्रथम.
गृह्णीथाः	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीध्वम्	मध्यम.
गृह्णीय	गृह्णीवहि	गृह्णीमहि	उत्तम.

लुङ् परस्मैपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अग्रहीत्	अग्रहीष्टाम्	अग्रहीषुः	प्रथम.
अग्रहीः	अग्रहीष्टम्	अग्रहीष्ट	मध्यम.
अग्रहीषम्	अग्रहीष्व	अग्रहीष्म	उत्तम.

आत्मनेपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अग्रहीष्ट	अग्रहीषाताम्	अग्रहीषत	प्रथम.
अग्रहीष्ठाः	अग्रहीषाथाम्	अग्रहीध्वम्+ढ्वम्	मध्यम.
अग्रहीषि	अग्रहीष्वहि	अग्रहीष्महि	उत्तम.

लृङ् परस्मैपद व आत्मनेपद के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अग्रहीष्यत् अग्रहीष्यत	अग्रहीष्यताम् अग्रहीष्येताम्	अग्रहीष्यन् अग्रहीष्यन्त	—प्रथम.
अग्रहीष्यः अग्रहीष्यथाः	अग्रहीष्यतम् अग्रहीष्येथाम्	अग्रहीष्यत अग्रहीष्यध्वम्	—मध्यम.
अग्रहीष्यम् अग्रहीष्ये	अग्रहीष्याव अग्रहीष्यावहि	अग्रहीष्याम अग्रहीष्यामहि	—उत्तम.

इति क्र्यादयः ॥

अथ चुरादि=अर्थात् अय् विकरण दशम गण चोरी अर्थ में सकर्म्मक, उभयपदी चुर् धातु अय् विकरण चोरयसे लट् अ आदि कार्य होते हैं. यथा लट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति	प्रथम.
चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ	मध्यम.
चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः	उत्तम.

लिट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
चोरयिता	चोरयितारौ	चोरयितारः	प्रथम.
चोरयितासि	चोरयितास्थः	चोरयितास्थ	मध्यम.
चोरयितास्मि	चोरयितास्वः	चोरयितास्मः	उत्तम.

लृट् परस्मैपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति	प्रथम.
चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ	मध्यम.
चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः	उत्तम.

लोट् परस्मैपद,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
चोरयतु,चोरयतात्	चोरयताम्	चोरयन्तु	प्रथम.
चोरय	चोरयतम्	चोरयत	मध्यम.
चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम	उत्तम.

चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत	मध
चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम	उत्त

आशीर्लिङ् परस्मैपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरु
चोर्य्यात्	चोरयास्ताम्	चोर्य्यासुः	प्रथ
चोर्य्याः	चोर्य्यास्तम्	चोर्य्यास्त	मध्य
चोर्य्यासम्	चोर्य्यास्व	चोर्य्यास्म	उत्त

लुङ् परस्मैपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अचूचुरत्	अचूचुरताम्	अचूचुरन्	प्रथम.
अचूचुरः	अचूचुरतम्	अचूचुरत	मध्यम
अचूचुरम्	अचूचुराव	अचूचुराम	उत्तम.

लृङ् परस्मैपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अचोरयिष्यत्	अचोरयिष्यताम्	अचोरयिष्यन्	प्रथम.
अचोरयिष्यः	अचोरयिष्यतम्	अचोरयिष्यत	मध्यम
अचोरयिष्यम्	अचोरयिष्याव	अचोरयिष्याम	उत्तम.

लट् आत्मनेपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
चोरयते	चोरयेते	चोरयन्ते	प्रथम.
चोरयसे	चोरयेथे	चोरयध्वे	मध्यम.
चोरये	चोरयावहे	चोरयामहे	उत्तम.

{ चोरयाञ्चक्रे, चोरयाम्बभूव
{ चोरयामास आदि

लिट् आत्मनेपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
चोरयिता	चोरयितारौ	चोरयितारः	प्रथम.
चोरयितासे	चोरयितासाथे	चोरयिताध्वे	मध्यम.
चोरयिताहे	चोरयितास्वहे	चोरयितास्महे	उत्तम.

लृट् आत्मनेपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
चोरयिष्यते	चोरयिष्येते	चोरयिष्यन्ते	प्रथम.
चोरयिष्यसे	चोरयिष्येथे	चोरयिष्यध्वे	मध्यम.
चोरयिष्ये	चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यामहे	उत्तम.

लोट् आत्मनेपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
चोरयताम्	चोरयेताम्	चोरयन्ताम्	प्रथम.
चोरयस्व	चोरयेथाम्	चोरयध्वम्	मध्यम.
चोरयै	चोरयावहै	चोरयामहै	उत्तम.

लङ् आत्मनेपद,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अचोरयत	अचोरयेताम्	अचोरयन्त	प्रथम.
अचोरयथाः	अचोरयेथाम्	अचोरयध्वम्	मध्यम.
अचोरये	अचोरयावहि	अचोरयामहि	उत्तम.

लिङ् आत्मनेपद,-

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
चोरयेत	चोरयेयाताम्	चोरयेरन्	प्रथम.
चोरयेथाः	चोरयेयाथाम्	चोरयेध्वम्	मध्यम.
चोरयेय	चोरयेवहि	चोरयेमहि	उत्तम.

आशीर्लिङ् आत्मनेपद,-

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
चोरयिषीष्ट	चोरयिषीयास्ताम्	चोरयिषीरन्	प्रथम.
चोरयिषीष्ठाः	चोरयिषीयास्थाम्	चोरयिषीध्वम्	मध्यम.
चोरयिषीय	चोरयिषीवहि	चोरयिषीमहि	उत्तम.

लुङ् आत्मनेपद,-

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अचूचुरत	अचूचुरेताम्	अचूचुरन्त	प्रथम.
अचूचुरथाः	अचूचुरेथाम्	अचूचुरध्वम्	मध्यम.
अचूचुरे	अचूचुरावहि	अचूचुरामहि	उत्तम.

लृङ् आत्मनेपद,-

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अचोरयिष्यत	अचोरयिष्येताम्	अचोरयिष्यन्त	प्रथम.
अचोरयिष्यथाः	अचोरयिष्येथाम्	अचोरयिष्यध्वम्	मध्यम.
अचोरयिष्ये	अचोरयिष्यावहि	अचोरयिष्यामहि	उत्तम.

कथन अर्थक उभयपदी अय् विकरणक कथ् धातु

लट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
कथयति	कथयतः	कथयन्ति	प्रथम.
कथयसि	कथयथः	कथयथ	मध्यम.
कथयामि	कथयावः	कथयामः	उत्तम.

लोट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु	प्रथम
कथय	कथयतम्	कथयत	मध्यम.
कथयानि	कथयाव	कथयाम	उत्तम.

लङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्	प्रथम.
अकथयः	अकथयतम्	अकथयत	मध्यम.
अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम	उत्तम.

विधिलिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयुः	प्रथम.
कथयेः	कथयेतम्	कथयेत	मध्यम.
कथयेयम्	कथयेव	कथयेम	उत्तम.

गणनार्थक सकर्म्मक उभयपदी गण् धातु.

लट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
गणयति	गणयतः	गणयन्ति	प्रथम.
गणयसि	गणयथः	गणयथ	मध्यम.
गणयामि	गणयावः	गणयामः	उत्तम.

लोट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
गणयतु,गणयतात्	गणयताम्	गणयन्तु	प्रथम.
गणय, गणयतात्	गणयतम्	गणयत	मध्यम.
गणयानि	गणयाव	गणयाम	उत्तम.

लङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अगणयत्	अगणयताम्	अगणयन्	प्रथम.
अगणयः	अगणयतम्	अगणयत	मध्यम.
अगणयम्	अगणयाव	अगणयाम	उत्तम.

विधिलिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
गणयेत्	गणयेताम्	गणयेयुः	प्रथम.
गणयेः	गणयेतम्	गणयेत	मध्यम.
गणयेयम्	गणयेव	गणयेम	उत्तम.

भक्षण अर्थक परस्मैपदी अय् विकरण दशम गण की भक्ष् धातु सकर्म्मक.

लट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
भक्षयति	भक्षयतः	भक्षयन्ति	प्रथम.
भक्षयसि	भक्षयथः	भक्षयथ	मध्यम.
भक्षयामि	भक्षयावः	भक्षयामः	उत्तम.

लिट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
भक्षयामास	भक्षयामासतुः	भक्षयामासुः	प्रथम.
भक्षयामासिथ	भक्षयामासथुः	भक्षयामास	मध्यम.
भक्षयामास	भक्षयामासिव	भक्षयामासिम	उत्तम.

लृट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यतः	भक्षयिष्यन्ति	प्रथम.
भक्षयिष्यसि	भक्षयिष्यथः	भक्षयिष्यथ	मध्यम.
भक्षयिष्यामि	भक्षयिष्यावः	भक्षयिष्यामः	उत्तम.

लोट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
भक्षयतु	भक्षयताम्	भक्षयन्तु	प्रथम.
भक्षय	भक्षयतम्	भक्षयत	मध्यम.
भक्षयाणि	भक्षयाव	भक्षयाम	उत्तम.

लङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अभक्षयत्	अभक्षयताम्	अभक्षयन्	प्रथम.

अभक्षय	अभक्षयतम्	अभक्षयत	मध्यम.
अभक्षयम्	अभक्षयाव	अभक्षयाम	उत्तम.

प्रेरणार्थक लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
भक्षयेत्	भक्षयेताम्	भक्षयेयुः	प्रथम.
भक्षयेः	भक्षयेतम्	भक्षयेत	मध्यम.
भक्षयेयम्	भक्षयेव	भक्षयेम	उत्तम.

लुङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अबिभक्षत्	अबिभक्षताम्	अबिभक्षन्	प्रथम.
अबिभक्षः	अबिभक्षतम्	अबिभक्षत	मध्यम.
अबिभक्षम्	अबिभक्षाव	अबिभक्षाम	उत्तम.

स्मरण अर्थक परस्मैपदी अय् विकरण चिन्त धातु सकर्म्मक.

लट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
चिन्तयति	चिन्तयतः	चिन्तयन्ति	प्रथम.
चिन्तयसि	चिन्तयथः	चिन्तयथ	मध्यम.
चिन्तयामि	चिन्तयावः	चिन्तयामः	उत्तम.

लिट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
चिन्तयामास	चिन्तयामासतुः	चिन्तयामासुः	प्रथम.

चिन्तयामामिथ	चिन्तयामासथुः	चिन्तयामास	मध्यम.
चिन्तयामास	चिन्तयामासिव	चिन्तयामासिम	उत्तम.

लृट् के रूप,-

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
चिन्तयिष्यति	चिन्तयिष्यतः	चिन्तयिष्यन्ति	प्रथम.
चिन्तयिष्यसि	चिन्तयिष्यथः	चिन्तयिष्यथ	मध्यम.
चिन्तयिष्यामि	चिन्तयिष्यावः	चिन्तयिष्यामः	उत्तम.

लोट् के रूप,-

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
चिन्तयतु	चिन्तयताम्	चिन्तयन्तु	प्रथम.
चिन्तय	चिन्तयतम्	चिन्तयत	मध्यम.
चिन्तयानि	चिन्तयाव	चिन्तयाम	उत्तम.

लङ् के रूप,-

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अचिन्तयत्	अचिन्तयताम्	अचिन्तयन्	प्रथम.
अचिन्तयः	अचिन्तयतम्	अचिन्तयत	मध्यम.
अचिन्तयम्	अचिन्तयाव	अचिन्तयाम	उत्तम.

प्रेरणार्थक लिङ् के रूप,-

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
चिन्तयेत्	चिन्तयेताम्	चिन्तयेयुः	प्रथम.
चिन्तयेः	चिन्तयेतम्	चिन्तयेत	मध्यम.
चिन्तयेयम्	चिन्तयेव	चिन्तयेम	उत्तम.

लुङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अचिचिन्तत्	अचिचिन्तताम्	अचिचिन्तन्	प्रथम.
अचिचिन्तः	अचिचिन्ततम्	अचिचिन्तत	मध्यम.
अचिचिन्तम्	अचिचिन्ताव	अचिचिन्ताम	उत्तम.

इति चुरादयः ॥

अथ भाववाच्य=अर्थात् अकर्मक धातु ओं से भ अर्थमें लट् आदि प्रत्यय, भाववाच्य लकारके ध मध्यमें (य) विकरण होता है; जिस स्थलमें क कारकमें तृतीया विभक्ति रहै, पर कर्म्म पद न रहै उनको भाववाच्य प्रयोग कहते हैं.

लट् आदि लकारों के प्रथम पुरुष के एक वचन के रूप

यथा,—

लट्—भूयते.	लट्—जीव्यते.
लिट्—बभूवे.	,, जिजीवे.
लुट्—भाविता, भविता.	,, जीविता.
लृट्—भाविष्यते, भविष्यते.	,, जीविष्यते.
लोट्—भूयताम्.	,, जीव्यताम्.
लङ्—अभूयत.	,, अजीव्यत.
विधिलिङ्—भूयेत.	,, जीव्येत.
आशीर्लिङ्—भाविषीष्ट, भविषीष्ट. ,,	जीविषीष्ट.

लुङ्—अभावि. ,, अजीवि.
लृङ्—अभाविष्यत, अभविष्यत. ,, अजीविष्यत.

इति भाववाच्य ॥

अथ कर्म्मवाच्य प्रयोग, अर्थात् सकर्म्मक धातु ओं से कर्म्म अर्थमें प्रत्यय जब कर्त्ता कारकमें तृतीया विभक्ति रहे और कर्म्म कारकमें प्रथमा रहे तो कर्म्मवाच्य प्रयोग कहते हैं. कर्मवाच्य लकार के स्थानमें केवल आत्मनेपद होता है, और य विकरण होताहै यथा,—

कुम्भकारेण घटः; क्रीयते= कुम्हार घटको बनाताहै.
शिष्येण गुरुः प्रच्छयते= शिष्य गुरु से पूछताहै.

मया चंद्रः दृश्यते=मैं चंद्र को देखताहूं. कर्म्मवाच्य स्थलमें कर्म्म का जो वचन होताहै वही क्रिया का भी वचन होता है अर्थात् कर्म्म एकवचनान्त होने से क्रिया भी एकवचनान्त होती है. कर्म्म द्विवचनान्त होनेसे क्रिया भी द्विवचनान्त, और कर्म्म वहुवचनान्त होनेसे क्रिया भी वहुवचनान्त होती है यथा,—

कुम्भकारेण घटः क्रीयते । कुम्भकारेण घटौ क्रीयेते ॥
कुम्भकारेण घटाः क्रीयन्ते । शिष्येण गुरवः प्रच्छन्ते ॥

धारण पोषण अर्थक (भृञ्) धातुसे

लुङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अचिचिन्तत्	अचिचिन्तताम्	अचिचिन्तन्	प्रथम.
अचिचिन्तः	अचिचिन्ततम्	अचिचिन्तत	मध्यम.
अचिचिन्तम्	अचिचिन्ताव	अचिचिन्ताम	उत्तम.

इति चुरादयः ॥

अथ भाववाच्य=अर्थात् अकर्म्मक धातु ओं से भाव **अर्थमें** लट् आदि **प्रत्यय, भाववाच्य लकारके** धातुके मध्यमें **(य) विकरण** होता है; जिस स्थलमें कर्त्ता **कारकमें तृतीया** विभक्ति रहै, पर **कर्म्म** पद न रहै तो उनको **भाववाच्य प्रयोग** कहते हैं.

लट् आदि लकारों के प्रथम पुरुष के एक वचन के रूप.

यथा,—

लट्—भूयते.	लट्—जीव्यते.
लिट्—बभूवे.	,, जिजीवे.
लुट्—भाविता, भविता.	,, जीविता.
लृट्—भाविष्यते, भविष्यते.	,, जीविष्यते.
लोट्—भूयताम्.	,,
लङ्—अभूयत.	,,
विधिलिङ्—भूयेत.	
आशीर्लिङ्—भाविषीष्ट, भवि "	

अमृथाः	अमृषाथाम्	अमृढ्वम्	मध्यम.
अमृषि	अमृष्वहि	अमृष्महि	उत्तम.

लुङ्,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अमारि	अमारिषाताम्	अमारिषत	प्रथम.
अमारिष्ठाः	अमारिषाथाम्	अमारिढ्वम्+अमारिध्वम्	मध्यम.
अमारिषि	अमारिष्वहि	अमारिष्महि	उत्तम.

लृङ्,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अमारिष्यत	अमारिष्येताम्	अमारिष्यन्त	प्रथम.
अमारिष्यथाः	अमारिष्येथाम्	अमारिष्यध्वम्	मध्यम.
अमारिष्ये	अमारिष्यावहि	अमारिष्यामहि	उत्तम.

शक् धातु आत्मनेपद लट्,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष
शक्यते	शक्येते	शक्यन्ते	प्रथम.
शक्यसे	शक्येथे	शक्यध्वे	मध्यम.
शक्ये	शक्यावहे	शक्यामहे	उत्तम.

लोट्,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
शक्यताम्	शक्येताम्	शक्यन्ताम्	प्रथम.
शक्यस्व	शक्येथाम्	शक्यध्वम्	मध्यम.

लङ्,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अशक्यत	अशक्येताम्	अशक्यन्त	प्रथम.
अशक्यथाः	अशक्येयाम्	अशक्यध्वम्	मध्यम.
अशक्ये	अशक्यावहि	अशक्यामहि	उत्तम.

विधिलिङ्,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
शक्येत	शक्येयाताम्	शक्येरन्	प्रथम.
शक्येथाः	शक्येयाथाम्	शक्येध्वम्	मध्यम.
शक्येय	शक्येवहि	शक्येमहि	उत्तम.

गम् धातु आत्मनेपद लट्,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
गम्यते	गम्येते	गम्यन्ते	प्रथम.
गम्यसे	गम्येथे	गम्यध्वे	मध्यम.
गम्ये	गम्यावहे	गम्यामहे	उत्तम.

लोट्,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
गम्यताम्	गम्येताम्	गम्यन्ताम्	प्रथम.
गम्यस्व	गम्येथाम्	गम्यध्वम्	मध्यम.
गम्यै	गम्यावहै	गम्यामहै	उत्तम.

लङ्,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अगम्यत	अगम्येताम्	अगम्यन्त	प्रथम.

अगम्यथाः	अगम्येथाम्	अगम्यध्वम्	मध्यम.
अगम्ये	अगम्यावहि	अगम्यामहि	उत्तम.

विधिलिङ्

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
गम्येत	गम्येयाताम्	गम्येरन्	प्रथम.
गम्येथाः	गम्येयाथाम्	गम्येध्वम्	मध्यम.
गम्येय	गम्येवहि	गम्येमहि	उत्तम.

हन् धातु आत्मनेपद लट्,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
हन्यते	हन्येते	हन्यन्ते	प्रथम.
हन्यसे	हन्येथे	हन्यध्वे	मध्यम.
हन्ये	हन्यावहे	हन्यामहे	उत्तम.

लोट्,

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
हन्यताम्	हन्येताम्	हन्यन्ताम्	प्रथम.
हन्यस्व	हन्येथाम्	हन्यध्वम्	मध्यम.
हन्यै	हन्यावहै	हन्यामहै	उत्तम.

लङ्

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अहन्यत	अहन्येताम्	अहन्यन्त	प्रथम.
अहन्यथाः	अहन्येथाम्	अहन्यध्वम्	मध्यम.
अहन्ये	अहन्यावहि	अहन्यामहि	उत्तम.

विधिलिङ्,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
हन्येत	हन्येयाताम्	हन्येरन्	प्रथम.
हन्येथाः	हन्येयाथाम्	हन्येध्वम्	मध्यम.
हन्येय	हन्येवहि	हन्येमहि	उत्तम.

छिद् धातु आत्मनेपद लट्,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
छिद्यते	छिद्येते	छिद्यन्ते	प्रथम.
छिद्यसे	छिद्येथे	छिद्यध्वे	मध्यम.
छिद्ये	छिद्यावहे	छिद्यामहे	उत्तम.

लोट्,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
छिद्यताम्	छिद्येताम्	छिद्यन्ताम्	प्रथम.
छिद्यस्व	छिद्येथाम्	छिद्यध्वम्	मध्यम.
छिद्यै	छिद्यावहै	छिद्यामहै	उत्तम.

लङ्,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अच्छिद्यत्	अच्छिद्येताम्	अच्छिद्यन्त	प्रथम.
अच्छिद्यथाः	अच्छिद्येयाम्	अच्छिद्यध्वम्	मध्यम.
अच्छिद्ये	अच्छिद्यावहि	अच्छिद्यामहि	उत्तम.

विधिलिङ्,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
छिद्येत	छिद्येयाताम्	छिद्येरन्	प्रथम.

छिपेयाः	छिपेयाथाम्	छिपेध्वम्	मध्यम.
छिपेय	छिपेवहि	छिपेमहि	उत्तम.

इति कर्मवाच्य ॥

अथ ण्यन्तप्रक्रिया=अर्थात् कर्ताको कर्म अथवा अकर्मक धातु से सकर्मक बनानेकी रीति. कर्त्ताको प्रेरणा अर्थमें धातुवोंसे णिच् प्रत्यय होता है, णिच्के णच् चले जाते हैं और केवल इ रहकर धातुके अच्को वृद्धि हो जाती है. यथा,-मैत्रो भवति तं ब्रह्मा प्रेरयति इति भावयति मैत्रम् ब्रह्मणा. मैत्र होता है उसे ब्रह्मा प्रेरण कर्ता है. ऐसी वाक्यरचना के इच्छामें भू धातु णिच् प्रत्यय भू इ रहा वृद्धि भाविको धातु संज्ञा वाद लट् आदि लकारोंके स्थानमें परस्मैपद तथा आत्मनेपद नामके प्रत्यय और पूर्ववत् सब कार्य भये यथाः—

लट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुप.
भावयति	भावयतः	भावयन्ति	प्रथम.
भावयसि	भावयथः	भावयथ	मध्यम.
भावयामि	भावयावः	भावयामः	उत्तम.

लिट् का रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुप.

भावयाञ्चकार	भावयाञ्चक्रतुः	भावयाञ्चक्रुः	प्रथम.
भावयाञ्चकर्थ	भावयाञ्चक्रथुः	भावयाञ्चक्र	मध्यम.
भावयाञ्चकार } भावयाञ्चकर }	भावयाञ्चकृव	भावयाञ्चकृम	उत्तम.

भावयाम्बभूव आदि भावयामास आदि रूप पू-
वत् जानने.

लुट् का रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
भावयिता	भावयितारौ	भावयितारः	प्रथम.
भावयितासि	भावयितास्थः	भावयितास्थ	मध्यम.
भावयितास्मि	भावयितास्वः	भावयितास्मः	उत्तम.

लृट् का रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
भावयिष्यति	भावयिष्यतः	भावयिष्यन्ति	प्रथम.
भावयिष्यसि	भावयिष्यथः	भावयिष्यथ	मध्यम.
भावयिष्यामि	भावयिष्यावः	भावयिष्यामः	उत्तम.

लोट् का रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
भावयतु,भावयतात्	भावयताम्	भावयन्तु	प्रथम.
भावय,भावयतात्	भावयतम्	भावयत	मध्यम.
भावयानि	भावयाव	भावयाम	उत्तम.

भावयाञ्चकार	भावयाञ्चक्रतुः	भावयाञ्चक्रुः	प्रथम.
भावयाञ्चकर्थ	भावयाञ्चक्रथुः	भावयाञ्चक्र	मध्यम.
भावयाञ्चकार } भावयाञ्चकर	भावयाञ्चकृव	भावयाञ्चकृम	उत्तम.

भावयाम्बभूव आदि भावयामास आदि रूप पूर्ववत् जानने.

लुट् का रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
भावयिता	भावयितारौ	भावयितारः	प्रथम.
भावयितासि	भावयितास्थः	भावयितास्थ	मध्यम.
भावयितास्मि	भावयितास्वः	भावयितास्मः	उत्तम.

लृट् का रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
भावयिष्यति	भावयिष्यतः	भावयिष्यन्ति	प्रथम.
भावयिष्यसि	भावयिष्यथः	भावयिष्यथ	मध्यम.
भावयिष्यामि	भावयिष्यावः	भावयिष्यामः	उत्तम.

लोट् का रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.
भावयतु,भावयतात्	भावयताम्
भावय,भावयतात्	भावयतम्
भावयानि	भाव[illegible]

अभावयिप्यः	अभावयिप्यतम्	अभावयिप्यत	मध्यम.
अभावयिप्यम्	अभावयिप्याव	अभावयिप्याम	उत्तम.

अथ आत्मनेपद. लट् का रूप यथा,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
भावयते	भावयेते	भावयन्ते	प्रथम.
भावयसे	भावयेथे	भावयध्वे	मध्यम.
भावये	भावयावहे	भावयामहे	उत्तम.

लिट् का रूप;–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
भावयाञ्चक्रे	भावयाञ्चक्राते	भावयाञ्चक्रिरे	प्रथम.
भावयाञ्चकृषे	भावयाञ्चक्राथे	भावयाञ्चकृढ्वे	मध्यम.
भावयाञ्चक्रे	भावयाञ्चकृवहे	भावयाञ्चकृमहे	उत्तम.

लुट् का रूप यथा,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
भावयिता	भावयितारौ	भावयितारः	प्रथम.
भावयितासे	भावयितासाथे	भावयिताध्वे	मध्यम.
भावयिताहे	भावयितास्वहे	भावयितास्महे	उत्तम.

लृट् का रूप यथा,–

एकवचन.	द्विवचन.
भावयिष्यते	भावयिष्येते
भावयिष्यसे	भावयिष्येथे
भावयिष्ये	भावयिष्याव

जाता है यथा,—श्रु = इ = श्रावि = शतृ = श्रावयन्, श्रावयन्तौ आदि.

इति ण्यन्तप्रक्रिया ॥

अथ सनन्तप्रक्रिया अर्थात् इच्छा अर्थ में धातु ओंसे सन् प्रत्यय आताहै; सन् के पूर्व धातु को द्वित्व होजाताहै और सन् के न् का लोप होजाताहै, ससहितकी धातु-संज्ञा होतीहै. जो पद सन् के पूर्व धातुसे प्राप्त है सोई पद सनन्त धातुसेभी होताहै, यथा,—भू धातु सन् भुभूस पूर्व भु को बु भया बुभूस से लट् आदिके स्थान में ति आदि प्रत्यय भये.

लट् का रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बुभूपति	बुभूपतः	बुभूपन्ति	प्रथम.
बुभूपसि	बुभूपथः	बुभूपथ	मध्यम.
बुभूपामि	बुभूपावः	बुभूपामः	उत्तम.

लिट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बुभूपाञ्चकार	बुभूपाञ्चक्रतुः	बुभूपाञ्चक्रुः	प्रथम.
बुभूपाञ्चकर्थ	बुभूपाञ्चक्रथुः	बुभूपाञ्चक्र	मध्यम.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लुट् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बुभूषिता	बुभूषितारौ	बुभूषितारः	प्रथम.
बुभूषितासि	बुभूषितास्थः	बुभूषितास्थ	मध्यम.
बुभूषितास्मि	बुभूषितास्वः	बुभूषितास्मः	उत्तम.

लृट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बुभूषिष्यति	बुभूषिष्यतः	बुभूषिष्यन्ति	प्रथम.
बुभूषिष्यसि	बुभूषिष्यथः	बुभूषिष्यथ	मध्यम.
बुभूषिष्यामि	बुभूषिष्यावः	बुभूषिष्याम	उत्तम.

आशीः तथा प्रेरणा अर्थमें लोट् के रूप, परन्तु आशीरर्थमें भी सब रूप प्रेरणार्थक के समान होते हैं, किन्तु केवल प्रथम तथा मध्यम पुरुष के एक वचनमें बुभूषतात् रूप भी होता है.

लोट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बुभूषतु	बुभूषताम्	बुभूषन्तु	प्रथम.
बुभूष	बुभूषतम्	बुभूषत	मध्यम.
बुभूषाणि	बुभूषाव	बुभूषाम	उत्तम.

लङ् के रूप यथा,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.

लुट् के रूप यथा,-

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बुभूपिता	बुभूपितारौ	बुभूपितारः	प्रथम.
बुभूपितासि	बुभूपितास्थः	बुभूपितास्थ	मध्यम.
बुभूपितास्मि	बुभूपितास्वः	बुभूपितास्मः	उत्तम.

लृट् के रूप,-

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बुभूपिष्यति	बुभूपिष्यतः	बुभूपिष्यन्ति	प्रथम.
बुभूपिष्यसि	बुभूपिष्यथः	बुभूपिष्यथ	मध्यम.
बुभूपिष्यामि	बुभूपिष्यावः	बुभूपिष्याम	उत्तम.

आशीः तथा प्रेरणा अर्थमें लोट् के रूप, परन्तु आशीरर्थमें भी सब रूप प्रेरणार्थक के समान होते हैं, किन्तु केवल प्रथम तथा मध्यम पुरुष के एक वचनमें बुभूपतात् रूप भी होता है.

लोट् के रूप,-

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.
बुभूपतु	बुभूपताम्	बुभूपन्तु
बुभूप	बुभूपतम्	बुभूपत
बुभूपाणि	बुभूपाव	बुभूपाम

लङ् के रूप यथा,-

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.

बोभूयसे	बोभूयेथे	बोभूयध्वे	मध्यम.
बोभूये	बोभूयावहे	बोभूयामहे	उत्तम.

लिट् के रूप,—

बोभूयाञ्चक्रे, बोभूयाम्बभूव. बोभूयामास, इत्यादि.

लुट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बोभविता	बोभवितारौ	बोभवितारः	प्रथम.
बोभवितासे	बोभवितासाथे	बोभविताध्वे	मध्यम.
बोभविताहे	बोभवितास्वहे	बोभवितास्महे	उत्तम.

लृट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बोभविष्यते	बोभविष्येते	बोभविष्यन्ते	प्रथम.
बोभविष्यसे	बोभविष्येथे	बोभविष्यध्वे	मध्यम.
बोभविष्ये	बोभविष्यावहे	बोभविष्यामहे	उत्तम.

लोट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बोभूयताम्	बोभूयेताम्	बोभूयन्ताम्	प्रथम.
बोभूयस्व	बोभूयेथाम्	बोभूयध्वम्	मध्यम.
बोभूये	बोभूयावहे	बोभूयामहे	उत्तम.

लङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.

लट्.	लट्.
पा से सन्=पिपासति	रुद से सन्=रुरुदिषति
पठ से सन्=पिपठिषति	हन् से सन्=जिघांसति
जि से सन्=जिगीषति	ग्रह से सन्=जिघृक्षति, जिघृक्षते
कृ से सन्=चिकीर्षति	आप् से सन्=ईप्सति
तॄ से सन्=तितीर्षति	लाभ से सन्=लिप्सते
मृ से सन्=मुमूर्षति	बुध् से सन्=बुभुत्सते
गम् से सन्=जिगमिषति	कृ=शतृ=चिकीर्षन्
	कृ=शानच्=चिकीर्षमाणः

इति सनन्तप्रक्रिया ॥

अथ यङन्तप्रक्रिया ॥

वार वार अथवा आतिशय अर्थमें एकाच् हलन्त धातुओंसे यङ् प्रत्यय होता है; यङ् के ङ् का लोप हो जाता है, और धातु को द्वित्व होकर पूर्व अच्को गुण हो जाता है, और य सहितकी धातुसंज्ञा होकर लट् आदि लकारों के स्थानमें केवल आत्मनेपद नामके प्रत्यय होते हैं यथा,—अकर्म्मक सत्ता अर्थक भू धातुसे यङ्भू= यङ्बोभूय = अते = बोभूयते.

लट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बोभूयते	बोभूयेते	बोभूयन्ते	प्रथम.

बोभूयसे	बोभूयेथे	बोभूयध्वे	मध्यम.
बोभूये	बोभूयावहे	बोभूयामहे	उत्तम.

लिट् के रूप,—

बोभूयाञ्चक्रे, बोभूयाम्बभूव, बोभूयामास, इत्यादि.

लुट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बोभविता	बोभवितारौ	बोभवितारः	प्रथम.
बोभवितासे	बोभवितासाथे	बोभविताध्वे	मध्यम.
बोभविताहे	बोभवितास्वहे	बोभवितास्महे	उत्तम.

लृट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बोभविष्यते	बोभविष्येते	बोभविष्यन्ते	प्रथम.
बोभविष्यसे	बोभविष्येथे	बोभविष्यध्वे	मध्यम.
बोभविष्ये	बोभविष्यावहे	बोभविष्यामहे	उत्तम.

लोट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बोभूयताम्	बोभूयेताम्	बोभूयन्ताम्	प्रथम.
बोभूयस्व	बोभूयेथाम्	बोभूयध्वम्	मध्यम.
बोभूयै	बोभूयावहै	बोभूयामहै	उत्तम.

लङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.

अबोभूयत	अबोभूयेताम्	अबोभूयन्त	प्रथम.
अबोभूयथाः	अबोभूयेथाम्	अबोभूयध्वम्	मध्यम.
अबोभूये	अबोभूयेवहि	अबोभूयेमहि	उत्तम.

प्रेरणार्थक लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बोभूयेत	बोभूयेताम्	बोभूयेरन्	प्रथम.
बोभूयेथाः	बोभूयेथाम्	बोभूयध्वम्	मध्यम.
बोभूयेय	बोभूयेवहि	बोभूयेमहि	उत्तम.

आशीरर्थक लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बोभूयिषीष्ट	बोभूयिषीयास्ताम्	बोभूयिषीरन्	प्रथम.
बोभूयिषीष्ठाः	बोभूयिषीयास्थाम्	बोभूयिषीढ्वम्	मध्यम.
बोभूयिषीय	बोभूयिषीवहि	बोभूयिषीमहि	उत्तम.

लुङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अबोभूयिष्ट	अबोभूयिषाताम्	अबोभूयिषत	प्रथम.
अबोभूयिष्ठाः	अबोभूयिषाथाम्	अबोभूयिढ्वम्	मध्यम.
अबोभूयिषि	अबोभूयिष्वहि	अबोभूयिष्महि	उत्तम.

लृङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अबोभूयिष्यत	अबोभूयिष्येताम्	अबोभूयिष्यन्त	प्रथम.
अबोभूयिष्यथाः	अबोभूयिष्येथाम्	अबोभूयिष्यध्वम्	मध्यम.
अबोभूयिष्ये	अबोभूयिष्यावहि	अबोभूयिष्यामहि	उत्तम.

लङ्—लप् य =लालप्यते ॥ सिच्=य=सिच्यते ॥
''—दीप् =य=देदीप्यते ॥ शुच्=य=शोशुच्यते ॥
''—रुद् =य=रोरुद्यते ॥ गम्=य=जङ्गम्यते ॥
''—नृत् =य नरीनृत्यते॥ जागृ=य=जरीगृह्यते ॥
''—सृप् =य=सरीसृप्यते ॥ सिच्=य=सेसिच्यमानः ॥
''—लप्=य=लालप्य=शानच्=लालप्यमानः ॥
''—दीप्=य=देदीप्य=शानच्=देदीप्यमानः

इति यङन्तप्रक्रिया ॥

अथ यङ् लुक् प्रक्रिया = अर्थात् उक्त अर्थमें जो यङ् प्रत्यय कहा है उसके लोप होने परभी सब कार्य होते हैं किन्तु मध्यमें अ विकरण नहीं होता,परन्तु ति,सि,मि,प्रत्यय परे रहते विकरण के स्थानमें पक्षमें ई होनेसे उक्त प्रत्ययोंमें दो २ रूप होतेहैं,—और लट् आदि लकारों के स्थानमें केवल परस्मैपद के प्रत्यय आते हैं यथा,—भू—यङ्—लुक्—द्वित्व—गुण—बोभू + ईति = बोभवीति.

लट् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बोभवीति, बोभोति	बोभूतः	बोभुवति	प्रथम.
बोभवीसि, बोभोसि,	बोभूथः	बोभूथ	मध्यम.
बोभवीमि, बोभोमि	बोभूवः	बोभूमः	उत्तम.

अबोभूयत	अबोभूयेताम्	अबोभूयन्त	प्रथम.
अबोभूयथाः	अबोभूयेथाम्	अबोभूयध्वम्	मध्यम.
अबोभूये	अबोभूयेवहि	अबोभूयेमहि	उत्तम.

प्रेरणार्थक लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बोभूयेत	बोभूयेताम्	बोभूयेरन्	प्रथम.
बोभूयेथाः	बोभूयेथाम्	बोभूयध्वम्	मध्यम.
बोभूयेय	बोभूयेवहि	बोभूयेमहि	उत्तम.

आशीरर्थक लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बोभूयिषीष्ट	बोभूयिषीयास्ताम्	बोभूयिषीरन्	प्रथम.
बोभूयिषीष्ठाः	बोभूयिषीयास्थाम्	बोभूयिषीढ्वम्	मध्यम.
बोभूयिषीय	बोभूयिषीवहि	बोभूयिषीमहि	उत्तम.

लुङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अबोभूयिष्ट	अबोभूयिषाताम्	अबोभूयिषत	प्र
अबोभूयिष्ठाः	अबोभूयिषाथाम्	अबोभूयि	
अबोभूयिषि	अबोभूयिष्वहि		

लृङ् के

एकवचन.	द्विवचन.
अबोभूयिष्यत	अबोभू
अबोभूयिष्यथाः	अबोभू
अबोभूयिष्ये	अबोभूयि

लिट् के रूप,–

बोभवाञ्चकार, बोभवामास, बोभवाम्बभूव आदि.

लुट् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बोभविता	बोभवितारौ	बोभवितारः	प्रथम.
बोभवितासि	बोभवितास्थः	बोभवितास्थ	मध्यम.
बोभवितास्मि	बोभवितास्वः	बोभवितास्मः	उत्तम.

लृट् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बोभविष्यति	बोभविष्यतः	बोभविष्यन्ति	प्रथम.
बोभविष्यसि	बोभविष्यथः	बोभविष्यथ	मध्यम.
बोभविष्यामि	बोभविष्यावः	बोभविष्यामः	उत्तम.

प्रेरणार्थक तथा आशीरर्थक लोट् के रूप आशीरर्थमें पक्षमें बोभूतात् भी होता है.–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बोभवीतु, बोभोतु, बोभूतात्	बोभूताम्	बोभूवन्,	प्रथम.
बोभूहि, बोभूतात्	बोभूतम्	बोभूत	मध्यम.
बोभवानि	बोभवाव	बोभवाम	उत्तम.

लङ् के रूप,–

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अबोभवीत् अबोभोत्	अबोभूताम्	अबोभवुः	प्रथम.

अबोभवीः, अबोभोः	अबोभूतम्	अबोभूत	मध्यम.
अबोभवम्	अबोभूव	अबोभूम	उत्तम.

प्रेरणार्थक लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बोभूयात्	बोभूयाताम्	बोभूयुः	प्रथम.
बोभूयाः	बोभूयातम्	बोभूयात	मध्यम.
बोभूयाम्	बोभूयाव	बोभूयाम	उत्तम.

आशीरर्थक लिङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
बोभूयात्	बोभूयास्ताम्	बोभूयासुः	प्रथम.
बोभूयाः	बोभूयास्तम्	बोभूयास्त	मध्यम.
बोभूयासम्	बोभूयास्व	बोभूयास्म	उत्तम.

लुङ् के रूप,

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अबोभवीत्, अबोभोत्	अबोभूताम्	अबोभूवुः	प्रथम.
अबोभवीः, अबोभोः	अबोभूतम्	अबोभूत	मध्यम.
अबोभवम्	अबोभूव	अबोभूम	उत्तम.

लृङ् के रूप,—

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.	पुरुष.
अबोभविष्यत्	अबोभविष्यताम्	अबोभविष्यन्	प्रथम.
अबोभविष्यः	अबोभविष्यतम्	अबोभविष्यत	मध्यम.
अबोभविष्यम्	अबोभविष्याव	अबोभविष्याम	उत्तम.

लट्—लप्=यङ्=लुक्,   लालपीति, लालप्ति ॥
" —दीप्=यङ्=लुक्,   देदीपीति, देदीप्ति ॥
" —सिच्=यङ्=लुक्,   सेसेचीति, सेसिक्ति ॥
" —शुच्=यङ्=लुक्,   शोशोचीति, शोशोक्ति ॥

इति यङ् लुक् प्रक्रिया ॥

अथ आत्मनेपद प्रक्रिया—अर्थात् अर्थविशेष तथा उपसर्गविशेष के संबन्धमें आत्मनेपद का नियम नि उपसर्गसे परे विश् धातुसे और परि, वी, अव, से परे क्री धातु से आत्मनेपद होताहै यथा,—विंशते=परि=क्रीणीते, विक्रीणीते, अवक्रीणीते ॥ वि, परा, उपसर्गसे परे जी धातुसे और सम्, अव, प्र, वि, से परे स्था धातुसे आत्मनेपद और स्थाको तिष्ठ आदेश होता है यथा,—विजयते, पराजयते, सन्तिष्ठते, अवतिष्ठते, प्रतिष्ठते, वितिष्ठते ॥

सूचन, डेराना, सेवा, साहस, गुणस्थापन, कथन, अर्थमें कृञ् धातुसे आत्मनेपद होताहै. उत्कुरुते=सूचनाकर्ता है । श्येनो वर्त्तिकामुत्कुरुते = बाजपक्षी बटेरको डेरावताहै। हरिमुपकुरुते= हरिकी सेवा कर्त्ताहै। परदारान् प्रकुरुते = परस्त्रीमें साहस कर्त्ताहै । एधोदकस्योपस्कुरुते= लकडी उदकमें गुणस्थापन कर्त्ताहै ।कथा प्रकुरुते इति ॥

रम् धातु से परस्मैपद होता है यथा,—परिमृपति। विरमति। आरमत्। व्यरमत्। बुध्, युध्, नश्, जन, अधि, इ, इन से यदि णि प्रत्यय करै तो परस्मैपद होता है यथा—बोधयति। योधयति। नाशयति। जनयति। अध्यापयति॥

अकर्म्मक धातु ण्यन्तसे परस्मैपद होता है यथा,— कृष्णः शेते। तम् गोपी शामयति। शिशुः जागर्ति तम्। माता शिशुम् जागरति। इति परस्मैपद प्रक्रिया॥

अथ **नामधातुप्रक्रिया** = अर्थात् नामसे धातु तथा क्रिया बनाने की रीति. सामान्य अर्थमें प्रातिपदिक मात्रसे इ प्रत्यय होता है, इप्रत्ययान्त शब्दकी धातुसंज्ञा होकर लट् आदिमें प्रत्ययसे साधारण धातुकार्य पूर्ववत् होते हैं और इप्रत्ययान्तसे उभयपद होते हैं.

परस्मैपद प्रातिपदिक प्रत्ययतथा आत्मनेपद.—

लट्—पटु= इ = पटि = अति = पटयति, पटयते.
„—अभ्र = इ अभ्रि = अति = अभ्रयति, अभ्रयते.
„—हस्त = इ=हस्ति = अति = हस्तयति, हस्तयते.
„—घट = इ = घटि = अति = घटयति, घटयते.

उपमानभूत कर्तृबोधक प्रातिपदिक से आचार तथा सदृश अर्थमें क्विप् प्रत्यय होता है, परन्तु क्विप् का लोप होकर धातु से ज्ञा होतीहै और सब कार्य्य पूर्ववत् होतेहैं यथा,—कृष्= क्विप्= कृष्याति; माला=क्विप्=मालाति; कवि=क्विप्=कवयति, राजन् क्विप्=राजानति; पितृ= क्विप्= पितरति; इदम् = क्विप्=इदामति; दिव्=द्यौ= क्विप्= द्यवाति; स्व = क्विप्= स्वति; पथिन्= क्विप्= पथीनति.

मृश, लोहित आदि प्रातिपदिक से अभूततद्भाव पूर्वमें न था, अब भया, इस अर्थमें क्यङ् होताहै, क्यङ्का ,ङ् चले जातेहैं और धातुसंज्ञा होकर आत्मनेपद नाम के प्रत्यय होतेहैं यथा,—मृश = क्यङ् = मृशायते; लोहित =क्यङ्=लोहितायते; पटत्पटत्=क्यङ्=पटपटायते; कष्ट=क्यङ्= कष्टायते। शब्द, वैर, आदि प्रातिपदिकसे करोति अर्थ में यथा,—शब्द = क्यङ्= शब्दायते; वैर= क्यङ् = वैरायपते; कलह = क्यङ् = कलहायते; अभ्र = क्यङ् = अभ्रायते; मेघ = क्यङ् = मेघायते। मुण्ड, मिश्र, हलि, कलि, तस्त, पाश, रूप,

वीणा, तूल, श्लोक, सेना, लोम, त्वच्, वर्म, वर्ण, चूर्ण, आदि शब्दोंसे आय् प्रत्यय होता है यथा,—मुण्ड = अय = मुण्डयति; मिश्र = अय = मिश्रयति; हलि = अय = हलयति; कलि = अय = कलयति; तूस्त = अय = तूस्तयति; पाश = अय = पाशयति; रूप = अय = रूपयति; वीणा = अय = वीणायति; तूल=अय=तूलयति; श्लोक =अय = श्लोकयति: सेना = अय = सेनायति; लोम = अय=लोमयति; त्वच् = अय = त्वगयति; वर्म = अय = वर्मयति; वर्ण = अय =वर्णयति; चूर्ण =अय=चूर्णयति; उपवीणयति; उपश्लोकयति; अनुतूलयति; अनुलोमयति; संवर्णयति.

इति नामधातूत्पादनप्रकार ॥

अथ लकारार्थ=अर्थात् धातुविशेष तथा शब्दविशेष तथा कालविशेष में लकारों की व्यवस्था, स्मृतिबोधक शब्द के योगमें तथा अनद्यतन भूतकाल बोध करने के लिये लट् होताहै यथा,—अभिजानासि कृष्ण, यद् वने अभुञ्ज्महि = जानते हो कृष्ण, जो वन में हम सभो ने खायाथा.

साकाङ्क्षक स्मृतिबोधक पद के योग में और अनद्यतन भूतकाल बोध करने को लृट् और लङ् होते हैं यथा,—स्मरसि कृष्ण गोकुले वत्स्यामः, तत्र गाश्चारयिष्यामः। स्मरसि कृष्ण गोकुले अवसामः, तत्र गाः अचारयामः। स्मरणकर्ते हैं, हे कृष्ण गोकुलमें वसके हम सब गौवां चराते थे।

सर्व कालके लिये अत्यन्त मिथ्या वादमें लिट् होता है यथा,—कलिङ्गेषु अवात्सीसिति प्रश्ने, नाहम् कलिङ्गाञ्जगाम, कलिङ्गवासीसे प्रश्न—कलिङ्ग देशमें वसतेथे? उत्तर—मैं कलिङ्ग गयाही नहीं. इस प्रकारके वाक्यको अपन्हव कहते हैं. समीप काल तथा प्रश्नबोध करनेको लिङ् और लिट् भी होते हैं यथा,—देवदत्त आगच्छत् किम्, अथवा जगाम किम्। देवदत्त आगया क्या? अथवा गया क्या? ऐसे दोनों भये. स्म शब्द योगमें भूत कालके लिये भी लट् आता है यथा,—यजति स्म युधिष्ठिरः=युधिष्ठिर यजन करते भये; एवं स्म पिता ब्रवीति= ऐसा पिता कहताथा.

न, नु, शब्दके योगमें प्रश्न उत्तर अर्थमें भूत कालमें

लट्, लङ् होते हैं यथा,—अकार्षीः किम् ? ननु करोमि भोः। अकार्षीः किम् ? न करोमि नाकार्षम्। नुकरोमि, न्वकार्षम् वा। पुरा शब्दके योगमें अनद्यतन भूतकाल में लट्, लिट्, लङ्, लुङ्, लकारके यथाप्राप्त प्रयोग होतेहैं यथा,—इह पुरा छात्राः वसन्ति,ऊषुः,अवसन्,अवात्सुः, वा। निश्चय अर्थमें यावत् शब्द के योगमें भविष्यत् काल में लट् होताहै यथा,— यावद् भुङ्क्ते, पुरा भुङ्क्ते। निश्चय खायगा. कदा, कर्हि और मुहूर्त्तान्तर शब्द के योगमें लट्, लुट्, लृट् और लिङ् लकार होते हैं यथा,— कदा भुङ्क्ते, भोक्ता, भोक्ष्यते, भुज्येत; चेत् मुहूर्त्ताद्गुपरि उपाध्यायः आगच्छति, आगन्ता, आगमिष्यति,आगच्छेत् वा; अथ त्वम् छन्दोरधीष्व। क्षणभरकेबाद यदि उपाध्याय आवे तो तुम वेद पढना. शीघ्रवाचक शब्दके योगमें लृट् होता है यथा,—चेत् सुवृष्टिः आशु यास्यति शीघ्रं वप्स्यामः, यदि वृष्टि शीघ्र होगी तो शीघ्रही बोवेंगे.

वर्त्तमानके समीप भूत कालमें लट् तथा लङ् होते हैं यथा,—कदा अगतोसि ? अयमागच्छामि। कब आये ?

आगमम् वा, अभी आया. वर्त्तमानके समीप भ..
कालमें भी लट् लट्, होते हैं यथा,—कदा आगमिष्यति
अयमागच्छामि । आगमिष्यामि वा । कब आवोगे
अभी आता हूं. माङ् पूर्व पद रहते लुङ् और स्म ...
रहते और माङ् पूर्वमें रहते लङ्, लुङ्, होते हैं, और ..
के योगमें अट् आट् नहीं होते हैं यथा,—मा भूत्, मास्म
भवत्, भूत वा । कार्य=कारण=भाव अर्थमें लिङ् होता
है यथा,—कृष्णं नमे चेत् सुखं यायात्, कृष्णं नंस्यति
चेत् सुखं यास्यति = यदि कृष्णको नमस्कार करोगे तो
सुख मिलेगा.

इति लकारव्यवस्थाप्रकरणम् ॥

अथ अनिट् धातुसंग्रह अर्थात् जिनको की इट् नहीं
होता,—स्वरान्त धातु ओं में अनिट् अधिक है, इससे सेट्
धातु ओं का संग्रह है और व्यंजनान्त धातु ओंमे सेट् अ-
धिक है इससे अनिट् धातु ओं को अनुदात्त और सेट्
को उदात्तभी कहते हैं; परन्तु इनका उपयोग इस पुस्त-
कके नियममें नहींहै. किन्तु संस्कृत कौमुदी आदि ग्रन्थोंमें
बहुत कुछ है, इस हेतु थोडेमें श्लोक से दिखाते हैं,—

ऊद्दन्तैर्योति रुक्ष्णुशीष्णुनुक्षु श्विडीङ्श्रिभिः ।
वृङ्वृञ्भ्याञ्च विनैकाचोजन्तेषु निहताःस्मृताः ॥ १ ॥

इति स्वरान्ताः ॥

कान्तेषु शक एवानिट् चान्तेषु पच्मुच्रिचाः ॥ वचो विचो सिचश्चैव प्रच्छशान्तेष्वनिट्स्मृताः ॥ १ ॥ जान्तेषु त्यज् निज् भञ्जो भज्भुजौ भ्रस्ज मस्जच ॥ यजयुजौरञ्जयुजौविज्सृजौ सन्ज एवच ॥ २ ॥ दान्तेष्वद् क्षुद् भिदा भिद् तुदौ नुद पदौ भिदः ॥ विदो विन्दः शदसदौ स्कन्द स्विद हदस्तथा ॥ ३ ॥ धान्तेषु क्रुध्क्षुधौ बन्धः क्षुध् युध् राध रुधो व्यथाः ॥ शुध साधः सिद्धतिश्च नान्तेषु मन् हनौ मतौ ॥ ४ ॥ पान्तेष्वप क्षिपश्चेति तप् तृपौ त्रप् दृपौलिपः ॥ लुप वपौ शप् सपौ च सृप् स्वपौच तथानिटः ॥ ५ ॥ भान्तेषु यभरमलभाः अनिटः कीर्तिताः त्रयः ॥ गम् नमौ नम् रमौ चेति मान्तेष्वेतेऽनिटः स्मृताः ॥ ६ ॥ शान्तेषु क्रुश् दिशिदंन्स दृश् मृशौ रिश् रुशौ तथा ॥ लिश् विशौ स्पृशशश्चेति कीर्तिता अनिटो दश ॥ ७ ॥ पकारान्तेषु विज्ञेयाः कृप् तुप् त्विष् दुषद्विषाः ॥ पिष पुषौ विषश्चेति पिष् पुषौ श्लिष्यते स्तथा ॥ ८ ॥ सान्तेष्वनिट् घसः प्रोक्तः वसश्च म्वादि मध्यगः ॥ हकारान्तेषु विज्ञेया दहो दिहो दुहो नहः ॥ मिहो रुह लिहो चेति वहश्चाष्टा निटो बुधैः ॥ ९ ॥ इति.

व्यजनान्त धातुओंका ९ श्लोकोंमें और स्वरान्तका १ श्लोकमें संग्रह किया ॥

इति तिङन्तप्रकरणम् ॥

अथ कृदन्त.

१. धातु से परे तुम् आदि प्रत्यय होते हैं, उन्हें कृत् कहते हैं, और कृत् के आने से शब्द बनते हैं उन्हें कृदन्त कहते हैं

२. निमित्त अर्थमें धातुसे परे तुम् प्रत्यय होता है यथा,

धातु.	प्रत्यय.	पद.	अर्थ.
दा +	तुम् =	दातुम् =	देने के लिये.
स्था +	तुम् =	स्थातुम् =	ठहरनेकेलिये.
पा +	तुम् =	पातुम् =	पीनेकेलिये.
हन् +	तुम् =	हन्तुम् =	मारनेकेलिये.
गम् +	तुम् =	गन्तुम् =	जानेकेलिये.
ग्रह +	तुम् =	ग्रहीतुम् =	ग्रहणकरनेकेलिये.
कृ +	तुम् =	कर्तुम् =	करनेकेलिये.
वच +	तुम् =	वक्तुम् =	कहनेकेलिये.
जि +	तुम् =	जेतुम् =	जितनेकेलिये.
दृश् +	तुम् =	द्रष्टुम् =	देखनेकेलिये.
चिन्ति +	तुम् =	चिन्तयितुम् =	चिन्ताकरनेकेलिये.
भुज +	तुम् =	भोक्तुम् =	खानेकेलिये.

३. अनन्तर अर्थमें धातुसे परे त्वा प्रत्यय होता है यथा,—

कृ + त्वा = कृत्वा = करके.
जि + त्वा = जित्वा = जीतकर.
गम् + त्वा = गत्वा = जाकर.

वि + जि + य = विजित्य = जीतकर.
सं + स्मृ + य = संस्मृत्य = स्मरण करके.
प्र + नम् + य = प्रणम्य = प्रणाम करके.

६. तव्य, अनीय, य, और भविष्यत् कालमें धातु परे कर्मवाच्य और भाववाच्यमें ये तीन प्रत्यय होते इन प्रत्ययोंसे जो शब्द सिद्ध होतेहैं उनके रूप ... राम शब्दके सदृश, स्त्रीलिंग में लता शब्द के सदृश नपुंसक लिंगमें फल शब्द के सदृश होतेहैं.

७. कर्मवाच्यमें तव्य, अनीय, य प्रत्यय होनेसे शब्द सिद्ध होते हैं, वे कर्म के विशेषण होते हैं;इसलिये पदमें जो लिंग, विभक्ति, वचन होते हैं वही लिंग, भक्ति और वचन उन शब्दोंको भी होते हैं यथा,–

मया + पठ + अनीय = मया पठनीयः ग्रन्थः; मया ... पठनीया; मया पुस्तकं पठनीयं; पठनीयं शास्त्रम्; पठनीये ग्रंथेन; पठनीयाय ग्रंथाय; पठनीयत् ग्रंथात् पठनीयस्य ... पठनीये ग्रंथे; पठनीययोः ग्रंथयोः; पठनीयेषु ग्रंथेषु.

८. भाववाच्यमें भी तव्य, अनीय और य ... होतेहैं, परंतु उनका रूप नपुंसक लिंग शब्दके ... के एव ... हैं ... यथा,–

शमकः, दम् + अक = दमकः, लम्म् + अक =
तृ = पक्तृ, हृ + तृ = हर्तृ, भृ + तृ = भर्तृ, ल + तृ
ए + तृ=पवितृ, दा + तृ = दातृ, धा + तृ = धातृ, पा
मा + तृ = मातृ, क्रीड् + तृ = क्रीडितृ, दरिद्रा + तृ

९अ. सब तृ प्रत्ययांत शब्दों के रूप दातृ
समान होताहैं.

कुम्भ + कृ अ = कुम्भकारः, भार + हृ अ = भ
हृ अ = वस्त्रहारः, वारि + वाह अ + वारिवाहः,
अ = भारवाहः, गो + दा + क = गोदः, कंबल +
कंबलदः, बुद्धि + दा + क = बुद्धिदः, मति + दा + क
फल + दा + क = फलदः, ज्ञा + क = ज्ञः, ध्मा + श
ध्या + श = धमः, दृश + श = पश्यः.

१०. अतीत कालमें धातु से परे कर्तृवाच्य
प्रत्यय होता है. तवत् प्रत्यय करने से जो शब्द
होताहै वह कर्त्ता का विशेषण होताहै. इसलिये
जो लिंग, विभक्ति और वचन होताहै वही लिं
क्ति और वचन उन शब्दों का भी होताहै. इन
रूप पुंलिंग और नपुंसकलिंग में श्रीमत्
होताहै, स्त्री लिंग में नदी शब्द के सदृश होताहै.
जी + तवत् = जीतवत्, कृ + तवत् = कृतवत्, श्रु +

श्रुतवत्, स्था + तवत् = स्थितवत्, दा + तवत् = दत्तवत्, गम् + तवन् = गतवत्, हन + तवत्=हतवत्,ग्रह=तवत् =गृहीतवत्, दृश + तवत् = दृष्टवत्, ज्ञा + तवत्=ज्ञातवत्, वच+तवत्=उक्तवत्, भुज + तवत् = भुक्तवत्, चिन्त+ तवत्=चिन्तितवत् ॥ पुलिंग—जितवान् जितवन्तौ, जितवन्तः। नपुंसकलिंग—जितवत् जितवति जितवन्ति. स्त्रीलिंग — जितवती जितवत्यौ जितवत्यः इत्यादि.

११. अतीतकालमें धातुसे परे कर्मवाच्यमें त प्रत्यय होताहै यथा,—

जि + त = जितः, कृ + त = कृतः, ग्रह + त=गृहीतः, दा + त =दत्तः, दृश + त = दृष्टः, ज्ञा + त = ज्ञातः, श्रु + त = श्रुतः, वच् + त = उक्तः,

१२. कर्मवाच्यमें त प्रत्यय होनेसे जो शब्द सिद्ध होते हैं वह कर्मका विशेषण होता है, इसलिये कर्मके जो लिंगादि होते हैं वही लिंगादि उन शब्दोंके भी होते हैं यथा,—पठ + त = पठितः, तेन ग्रंथः पठितः, तेन पत्री पठिता, तेन पुस्तकम् पठितम्.

१३. अतीत कालमें अधिकरणवाच्यमें स्थिरार्थक और गत्यर्थक और भोजनार्थक धातुके उत्तर ते प्रत्यय होनेसे जो रूप सिद्ध होताहै उसके कर्त्तामें षष्ठी विभक्ति होजाती है. और, अधिकरणमें प्रथमा विभक्ति होती है.

शमकः, दम् + अक = दमकः, लम्भ् + अक = लम्भकः,
तृ = पक्तृ, हृ + तृ = हर्तृ, भृ + तृ = भर्तृ, ल + तृ =
पृ + तृ=पवित्र, दा + तृ = दातृ, धा + तृ = धातृ, पा + तृ
मा + तृ = मातृ, क्रीड् + तृ = क्रीडितृ, दरिद्रा + तृ = द

९अ. सब तृ प्रत्ययांत शब्दों के रूप दातृ श
समान होताहैं.

कुम्भ + कृ अ = कुम्भकारः, भार + हृ अ = भारहारः,
हृ अ = वस्त्रहारः, वारि + वाह अ + वारिवाहः, भार +
अ = भारवाहः, गो + दा + क = गोदः, कंबल + दा +
कंबलदः, बुद्धि + दा + क = बुद्धिदः, मति + दा + क = म
फल + दा + क = फलदः, ज्ञा + क = ज्ञः, घ्रा + श = जि
ध्मा + श = धमः, दृश + श = पश्यः.

१०. अतीत कालमें धातु से परे कर्तृवाच्य में त
प्रत्यय होता है. तवत् प्रत्यय करने से जो शब्द
होताहै वह कर्त्ता का विशेषण होताहै. कर्ता
जो लिंग, विभक्ति और वचन
त्ति और वचन उन शब्दों
रूप पुंलिंग और
होताहै, स्त्री लिंग में नद
नी + तवत् = नीतावत्,

यथा,—स्थिरार्थक आस् धातु. मुकुन्दस्यासितमिदम्
मुकुन्द इस स्थानमें बैठे थे, इदं यातं रमा पतेः=रमापति
इस मार्ग से गये, भुक्तमेतदनन्तस्य=अनन्त ने इसमें खाया

१४. अकर्मक धातु से परे, और गम्, रुह, आदि स
कर्मक धातु से परे कर्तृ वाच्यमें त प्रत्यय होताहै; कर्तृ
वाच्यमें त प्रत्यय करने से जो शब्द सिद्ध होताहै वह
कर्त्ता का विशेषण होताहै यथा; मृ धातु से मृतः होताहै.
पुरुषो मृतः, स्त्री मृता, अपत्यं मृतम्! भृ से भृतः, स्था
से स्थितः, लज्जसे लज्जितः, भी से भीतः, जागृसे जा-
गरितः गम् से गतः, रूह से रूढः बनते हैं.

१५. अकर्मक धातु से परे भाववाच्यमें त प्रत्यय
होताहै और भाववाच्यमें त प्रत्यय होनेसे जो शब्द सिद्ध
होताहै उन शब्दों का सर्वदा **नपुंसकलिंग** का प्रथमा
विभक्तिके **एकवचन** के समान रूप होताहै. यथा,—
मया जितं = मुजसे जीता गया = **तेन कुत्र स्थितम्**=
वह कहां रहा, **शिशुना रुदितम्** = लडका रोया, **स्त्रिया
लज्जितं**—स्त्री लज्जित हुई, **तेन जागरितम्** = वह जागा,
चौरेण पलायितम् = चोर भागा.

शतृ प्रत्यय.

वर्तमान काल में **परस्मैपदी** धातुओंसे **शतृ** प्रत्यय होताहै. पर **शतृ** के **श ऋ** का लोप होकर **अत्** रह जाताहै और **शतृ** प्रत्ययान्त शब्द क्रियाविशेषण होतेहैं. यथा,—

धातु	प्रत्यय	शब्द	धातु.	प्रत्यय	शब्द
भू	= शतृ =	भवत्.	स्था =	शतृ =	तिष्ठत्.
गम्	= शतृ =	गच्छत्.	दृश =	शतृ =	पश्यत्.
पा	= शतृ =	पिबत्.	घ्रा =	शतृ =	जिघ्रत्.
सद	= शतृ =	सीदत्.	दंश =	शतृ =	दशत्.
भ्रम	= शतृ =	भ्रमत्.	जि =	शतृ =	जयत्.
गै	= शतृ =	गायत्.	ध्यै =	शतृ =	ध्यायत्.
अद	= शतृ =	अदत्.	हन =	शतृ =	घ्नत्.
इ	= शतृ =	यत्.	या =	शतृ =	यात्
हु	= शतृ =	जुह्वत्.	भी =	शतृ =	बिभ्यत्.
हा	= शतृ =	जहत्.	दिव =	शतृ =	दीव्यत्
नश	= शतृ =	नश्यत्.	जॄ =	शतृ =	जीर्यत्.
व्यध	= शतृ =	व्यधत्,	शम =	शतृ =	शाम्यत्.
भ्रम	= शतृ =	भ्राम्यत्.	श्रु =	शतृ =	शृण्वत्.
आप्	= शतृ =	आप्नुवत्.	स्पृश =	शतृ =	स्पृशत्.
इष	= शतृ =	इच्छत्.	प्रच्छ =	शतृ =	पृच्छत्.
मस्ज	= शतृ =	मज्जत्,	हिंस =	शतृ =	हिंसत्.

			ज्ञा =	शतृ =	जानत्.
अश =	शतृ =	अश्नत्,	चिन्त =	शतृ =	चिन्तयत्.
भक्ष =	शतृ =	भक्षयत्,	ब्रू =	शतृ =	ब्रुवत्.
स्तु =	शतृ =	स्तुवत्,	धा =	शतृ =	दधत्.
दा =	शतृ =	ददत्,	चि =	शतृ =	चिन्वत्.
भृ =	शतृ =	बिभ्रत्,	मुष =	शतृ =	मुष्णत्.
कृ =	शतृ =	कुर्वन्,	तनु =	शतृ =	तन्वन्.
सिच् =	शतृ =	सिञ्चत्,	छिद =	शतृ =	छिन्दत्.
रुध् =	शतृ =	रुन्धत्,	क्री =	शतृ =	क्रीणन्.
भिद् =	शतृ =	भिन्दत्,			
ग्रह =	शतृ =	गृह्णत्.			

अस् से शतृ आनेसे अ का लोप होजाताहै. यथा,—
अस्—शतृ—सत्. विद् से यदि शतृ रहै तो पक्षमें वस् आ
श होता है. यथा,—वस्=शतृ=विद्वस्, विद्-शतृ-विद
आत्मनेपदी धातुओंसे शानच् प्रत्यय होताहै, पर-
न्तु शानच् के श्च् का लोप होकर आन रहताहै. परन्तु
भ्वादि, दिवादि, तुदादि, और चुरादि गणी धातुओंसे
आन को मान होजाता है. यथा,—

धातु.	प्रत्यय.	शब्द.	धातु.	प्रत्यय.	शब्द.
वन्द =	शानच् =	वन्दन,	शी =	शानच् =	शयान.
अधिइ	,,	अधियान,	भुज	,,	भुञ्जान.
मन	,,	मन्वान,	मा	,,	मिमान.

ष्टु	,,	स्तुवान,	ब्रू	,,	ब्रुवाण.
दा	,,	ददान,	धा	,,	दधान.
भृ	,,	बिभ्राण,	चि	,,	चिन्वान.
भुज	,,	भुञ्जान,	शिष	,,	शिष्यान.
तनु	,,	तन्वान,	कृ	,,	कुर्वाण.
रुध्	,,	रुन्धान,	छिद्	,,	छिन्दान.
भिद्	,,	भिन्दान,	क्री	,,	क्रीणान.
ग्रह	,,	गृह्णान.			

भू, दिव, तुद, चुरादि ४ गणोंके धातुओंके उदाहरण, सेव शानच् = सेवमान , वृत = शानच् = वर्त्तमान ,गृह=शानच् = ग्रमाण, ज्ञा = शानच् = ज्ञायमान, दृश = दृश्यमानः सूर्यः, श्यमानस्य जगतः ॥

शतृ, शानच् प्रत्ययान्त शब्द क्रियाविशेषण भी ते हैं, और कर्तृवाच्य स्थलमें कर्त्ता के अनुसार लिङ्ग, चन, कारक होते हैं, और कर्मवाच्यमें कर्म के अनुसार था,—स चन्द्र पश्यन् गच्छति । तौ चन्द्रं पश्यन्तौ गच्छतः । ते चन्द्रम् पश्यन्तो गच्छन्ति । सा चन्द्रं पश्यन्ती गच्छति । सोऽन्नम् भुञ्जानो जल्पति । सान्नम् भुञ्जाना जल्पति । पश्यन् पुरुषः । पश्यन्तं पुरुषम् । पश्यता पुरुषेण । गच्छन्ती नारी । गच्छन्तीम् नारीम् । ग-

च्छन्त्या नार्य्यां । पतत् फलम् । पतता फलेन । पत
तः फलस्य । शयानः पुरुषः । शयाना नारी । शयानं
मित्रम् । औरभी उदाहरण,—

धातु.	प्रत्यय.	शब्द.	धातु.	प्रत्यय.	शब्द.
वृध =	शानच् =	वर्धमान,	व्यध =	शानच्	व्यथमान.
सह	,,	सनमान,	स्था	,,	स्थापयमान.
चिकीर्ष	,,	चिकीर्षमान,	जन	,,	जायमान.
पद्	,,	पद्यमान,	मन्	,,	मन्यमान.
विद	,,	विद्यमान,	हृ	,,	ह्रियमाण.
धृ	,,	ध्रियमाण,	मृ	,,	म्रीयमाण.
अर्थ	,,	अर्थयमान,	मंत्र	,,	मन्त्रयमान.

आस धातुसे शानच् को ईन होता है,—आस = आ-
सीन । वर्त्तमान कालमें कर्म्मवाच्यमें भी सब धातु ओं
से शानच् प्रत्यय होता है, पर कर्म्म के अनुसार लिङ्ग,
वचन, कारक होते हैं. यथा,—श्रु = शानच् = श्रूयमाण,
कृ = शानच् = क्रियमाण, वच् = शानच् = उच्यमान,
वह् = शानच् = उह्यमान, दा = शानच् = दीयमान.

भूत कालमें परस्मैपदी धातुओंसे क्वसु प्रत्यय होता
है, क्वसु के क् उ का लोप हो जाता है और आत्मनेपदी

ब्रू = क्सु = ऊचिवस्, कानच् = ऊचानं.
कृ = क्सु = चकृवस्, कानच् = चक्राण.
भृ = क्सु = बभृवस्, कानच् = बभ्राण.
मुच् = क्सु = मुमुच्वस्, कानच् = मुमुचान.
सिच् = क्सु = सिषिच्वस्, कानच् = सिषिचान.

शतृ, शानच्, क्सु, कानच्, प्रत्ययान्त शब्द.

क्रिया के विशेषण भी होते हैं और क्रिया के अनुसार लिङ्ग, वचन आदि होताहै; यथा,—

स गानं शुश्रूषवान् जगाम। तौ गानं शुश्रुवांसौ जग्मतुः। ते गानं शुश्रुवांसः जग्मुः सा गानं शुश्रुवुषी। अन्नं बुभुजे। विदुषी कन्या। विदुषी कन्याम्.

भविष्य कालमें कर्तृवाच्यमें तथा कर्म्मवाच्यमें परस्मैपदी धातुओंसे स्यतृ और आत्मनेपदी धातुओंसे स्यमान और उभयपदी धातु ओंसे स्यतृ, स्यमान उभय होते हैं; परन्तु कर्तृवाच्य स्थलमें कर्ता के अनुसार और कर्म्मवाच्य स्थलमें कर्मके अनुसार लिङ्ग, वचन, कारक होते है और धातुओं के गण के अनुसार सर्वत्र विकरण भी होते हैं; और स्यतृ के ऋ का लोप होजाताहै स्यत रहताहै. यथा,—

परस्मैपदी.

धातु.	प्रत्यय.	शब्द.	धातु.	प्रत्यय.	शब्द.
भू =	स्यत् =	भविष्यत्,	गम् =	स्यत् =	गमिष्यत्.
दृश् =	,, =	द्रक्ष्यत्,	स्था =	,, =	स्थास्यत्.

आत्मनेपदी.

सेव् = स्यमान = सेविष्यमाण, वृत = ,, = वर्तिष्यमाण.
जन् = ,, = जनिष्यमाण, पद् = ,, = पत्स्यमान.

उभयपदी.

स्तु = स्यत् = स्तोष्यत्, स्यमान = स्तोष्यमाण.
दा = स्यत् = दास्यत्, ,, = दास्यमान.
ग्रह = ,, = ग्रहीष्यत्, ,, = ग्रहीष्यमाण.
कृ = ,, = करिष्यत्, ,, = करिष्यमाण.
कारि = ,, = कारिष्यत्, ,, = कारिष्यमाण.
दर्शि = ,, = दर्शिष्यत्, ,, = दर्शिष्यमाण.

स्यत् स्यमान प्रत्ययान्त शब्द क्रियाविशेषणभी होते हैं,—

स वेदं पठिष्यन् गुरुगृहं गच्छति। सा पितरम् सेविष्यमाणा सत्वरं व्रजति। गमिष्यन् पुरुषः। गमिष्यन्तौ पुरुषौ। गमिष्यन्तः पुरुषाः। जनिष्यमाणां कन्यां। जनिष्यमाणया कन्यया। पतिष्यत् फलम्। पतिष्यत्सु फलेषु.

इति कृदन्तप्रकरणम्॥

अथ तद्धित प्रकरण.

१. प्रातिपदिकसे परे जो प्रत्यय आते हैं उन्हें तद्धि
कहते हैं. और तद्धित प्रत्ययसे जो शब्द सिद्ध होते
उन्हें तद्धितान्त शब्द कहतेहैं.

२. अपत्य आदि अर्थमें प्रातिपदिकसे अ,इ,य,आ
यन प्रत्यय होतेहैं और आदि स्वरको वृद्धि होजातीहै यथा

अकाउदाहरण.

प्रातिपदिक.	प्रत्यय.	शब्द.	प्रातिपदिक.	प्रत्यय.	शब्द.
उपगु	+ अ	= औपगवः ।	कुशिक	+ अ	कौशिकः
वशिष्ठ	+ अ	= वाशिष्ठः ।	विश्वानर	+ अ	=वैश्वानरः
कुम्भकार	+ अ	= कौम्भकार ।	पुत्र	+ अ	= पौत्रः ।
देव	+ अ	= दैवः ।	दुहितृ	+ अ	= दौहित्रः।
विद	+ अ	= वैदः ।	शुनक	+ अ	=शौनकः।
शिब	+ अ	= शैवः ।			

इकाउदाहरण.

देव	+इ	= दैवि ।	उद्दालक	+ इ	= औद्दालकिः।
यज्ञदत्त	+इ	= याज्ञदत्ति ।	कृष्ण	+ इ	= कार्ष्णिः ।
विद	+इ	= [illegible] ।	चण्ड	+ इ	= चाण्डिः ।
[illegible]	+इ	[illegible] ।	कृ[illegible]	[illegible]	= कार्पणि ।
					शांकरिः ।

अथ तद्धित प्रकरण.

१. प्रातिपदिकसे परे जो प्रत्यय आते हैं उन्हें तद्धित कहते हैं. और तद्धित प्रत्ययसे जो शब्द सिद्ध होतेहैं उन्हें तद्धितान्त शब्द कहतेहैं.

२. अपत्य आदि अर्थमें प्रातिपदिकसे अ,इ,य,अ यन प्रत्यय होतेहैं और आदि स्वरको वृद्धि होजातीहै यथ

अकाउदाहरण.

प्रातिपदिक.	प्रत्यय.	शब्द.	प्रातिपदिक.	प्रत्यय.	शब्द
उपगु	+ अ	= औपगवः ।	कुशिक	+ अ	कौशिकः
वशिष्ठ	+ अ	= वाशिष्ठः ।	विश्वानर	+ अ	=वैश्वानर
कुम्भकार	+ अ	= कौम्भकार ।	पुत्र	+ अ	= पौत्रः ।
देव	+ अ	= दैवः ।	दुहितृ	+ अ	= दौहित्रः।
विद	+ अ	= वैदः ।	शुनक	+ अ	=शौनकः।
शिव	+ अ	= शैवः ।			

इकाउदाहरण.

देव	+इ	= दैवि ।	उद्दालक	+ इ	= औद्दालकिः ।
यज्ञदत्त	+इ	= याज्ञदत्ति ।	कृष्ण	+ इ	= कार्ष्णिः ।
विद	+इ	= वैदि ।	चण्ड	+ इ	= चाण्डिः ।
दशरथ	+इ	= दाशरथि ।	कृपण	+ इ	= कार्पणि ।
पुरन्दर	+इ	= पौरन्दरि ।	शंकर	+ इ	= शांकरिः ।

यकाउदाहरण.

गर्ग + य = गार्ग्यः ।	नड + आयन = नाडायनः ।
वत्स + य = वात्स्यः ।	चन्द्र + आयन = चान्द्रायणः ।
वामदेव + य = वामदेव्यः ।	पर्वत + आयन = पार्वतायणः ।
सोम + य = सौम्यः ।	द्रोण + आयन = द्रौणायनः ।
देव + य = दैव्यः ।	काश + आयन = काशायनः ।
मुद्गल + य = मौद्गल्यः ।	चर + आयन = चारायणः ।
मुत्सल + य = मौत्सल्यः ।	अमुष्य + आयन = आमुष्यायणः ।
जतूकर्ण + य = जातूकर्ण्यः ।	जिवन्त + आयन = जैवन्तायनः ।
कथक + य = काथक्यः ।	हरित + आयन = हारितायणः ।
सहित + य = साहित्यः ।	पवित्र + आयन = पावित्रायणः ।
रोहित + य = रौहित्यः ।	
पिङ्गल + य = पैङ्गल्यः ।	
चणक + य = चाणक्यः ।	
भिषज + य = भैषज्यः ।	

३. पितृ अर्थमें मातृ तथा पितृ शब्द से आमह प्रत्यय होताहै और मातृ पितृ शब्दोंके ऋ का लोप होताहै. यथा,—

मातृ + आमह = मातामह = माताका पिता ।
पितृ + आमह = पितामह = पिताका पिता ।

४. अग्नि, कलि और स्त्रीलिंग शब्दों से एय प्रत्यय होताहै, और आदि स्वरकों वृद्धि होतीहै. यथा,—

अग्नि + एय = आग्नेयः । नर्मदा + एय = नार्मदेयः ।
कलि + एय = कालेयः । शुभ्रा + एय = शौभ्रेयः ।
विनता + एय = वैनतेयः । मिला + एय = मैलेयः ।
सुपर्णा + एय = सौपर्णेयः । शुङ्गा + एय = शौङ्गेयः ।
मेनका + एय = मैनकेयः । कुलटा + एय = कौलटेयः ।
गङ्गा + एय = गाङ्गेयः । दत्ता + एय = दात्तेयः ।
यमुना + एय = यामुनेयः । गोधा + एय = गौधेयः ।
चटका + एय = चाटकेयः ।

५. जिव्हामूल, अंगुल और वर्गान्त शब्दोंसे ईय प्रत्यय होता है यथा,—

जिव्हामूल + ईय = जिह्वामूलीयम् ।
अङ्गुल + ईय = अङ्गुलीयम् ।
कवर्ग + ईय = कवर्गीयम् ।
चवर्ग + ईय = चवर्गीयम् ।
पवर्ग + ईय = पवर्गीयम् ।
टवर्ग + ईय = टवर्गीयम् ।
तवर्ग + ईय = तवर्गीयम् ।
मद्वर्ग + ईय = मद्वर्गीयः ।
त्वद्वर्ग + ईय = त्वद्वर्गीयः ।
युष्मद्वर्ग + ईय = युष्मद्वर्गीयः ।
अस्मद्वर्ग + ईय = अस्मद्वर्गीयः ।

६. तुल्य और सदृश अर्थमें प्रातिपदिक से वत् प्रत्यय होता है. यथा,—

चन्द्रवत्, घटवत्, पटवत्, ब्राह्मणवत्, अश्ववत्, गोवत्, क्षत्रियवत्, वैश्यवत्, शूद्रवत्, हरिवत्।

७. भावअर्थमें प्रातिपदिकसे इमन् प्रत्यय होता है और अन्त्य स्वरका लोप होजाताहै. यथा,—

लोहि + इमन् = लोहित् + इमन् = लोहितिमन्।
काल + इमन् = काल् + इमन् = कालिमन्।
लघु + इमन् = लघ् + इमन् = लघिमन्।
अणु + इमन् = अण् + इमन् = अणिमन्।
वर + इमन् = वर् + इमन् = वरिमन्।
ऋजु + इमन् = ऋज् + इमन् = ऋजिमन्।
कृष्ण + इमन् = कृष्ण् + इमन् = कृष्णिमन्।

इमन् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप लघिमन् शब्द के समान होते हैं.

उसको जो पढे अथवा जाने इस अर्थमें प्रातिपदिकसे इक प्रत्यय होताहै और स्वरको वृद्धि होती है. यथा,—

तर्क + इक = तार्किकः। अलङ्कार + इक = आलङ्कारिकः।
न्याय + इक = नैयायिकः। वेद + इक = वैदिकः।
काय + इक = कायिकम्।

९. अधिकृत्य अर्थमें भी ईय प्रत्यय होताहै,—
किरातार्जुन + ईय = किरातार्जुनीयम् । वाक्यपद + ईय = वाक्यपदीयम् । शास्त्र + ईय = शास्त्रीयम् । शिव + ईय = शैवीयम् ।

१०. श्रद्धा, तन्द्रा, कृपा, दया शब्दों से आलु प्रत्यय होता है. यथा,

श्रद्धालुः, दयालुः, तन्द्रालुः, कृपालुः ।

११. तपस्, यशस्, माया, मेधा, स्रक्, शब्दोंसे विन् प्रत्यय होताहै. यथा,—तपस्विन्, यशस्विन् मायाविन्, मेधाविन्, स्रग्विन् ।

तर, यदि, दोके मध्यमें एकका उत्कर्ष प्रकाश करना रहै तो प्रातिपदिक से तर प्रत्यय होताहै. यथा,—दृढतरः, गुरुतरः, मृदुतरः, कृष्णतरः, शुक्लतरः पटुतरः ।

यदि अनेक के मध्यमें एकका आधिक्य प्रकाश करना रहै तो प्रातिपदिक से तम प्रत्यय आताहै. यथा,—

पटुतमः, दृढतमः, शुक्लतमः, कृष्णतमः ।

किम् अव्यय और क्रियाबोधक पदोंसे तराम् और तमाम् प्रत्यय होते हैं. यथा,—

किमुतराम्, किमुतमाम्, उच्चैस्तराम्, उच्चैस्तमाम्, नीचैस्तराम्, नीचैस्तमाम्, पचतितराम्, पचतितमाम्, नमतितराम्, नमतितमाम्, सन्तुतराम्, सन्तुतमाम्, सन्तितराम्, सन्तितमाम् ।

१२. नान्त संख्यावाचक शब्दोंसे पूर्ण अर्थमें म प्रत्यय होता है, और अन्त्य न का लोप होता है. यथा, पञ्चमः, सप्तमः, अष्टमः, नवमः, दशमः ।

१३. एकदश आदि शब्दों से पूर्ण अर्थमें अ प्रत्यय होता है. यथा,—

एकादशः, द्वादशः, त्रयोदशः, चतुर्दशः, पञ्चदशः, सप्तदशः अष्टादशः ।

१४. विंशति आदि शब्दों से पूर्ण अर्थमें तम प्रत्यय होता है, अथवा ति का लोप होजाता है. यथा,—विंशतितमः, अथवा विंशः ।

१५. शत आदिसे नित्यही तम प्रत्यय होता है. यथा,—शततमः, सहस्रतमः ।

१६. प्रकार अर्थमें संख्यावाचक शब्दोंसे धा प्रत्यय होता है. यथा,—

द्विधा, त्रिधा, चतुर्धा, पञ्चधा, षड्धा, या विकल्पसे षोढा, सप्तधा, अष्टधा, नवधा, दशधा ।

१७. बहु आदि शब्दोंसे वारवार २ अर्थमें शस् प्रत्यय होता है. यथा,—

बहुशः, एकशः, अल्पशः, शतशः, सहस्रशः, लक्षशः, कोटिशः, इत्यादि.

१८. भाव अर्थमें त्वं, ता, अ, य प्रत्यय होते हैं, और अ, य परे रहते आदि स्वर को वृद्धि होती है. यथा,—

गोत्वं, ब्राह्मणत्वं, मूर्खत्वं, अश्वत्वं, शूद्रत्वं, ब्राह्मणता, शूद्रता, मधुरता, कटुता, दीर्घता, ह्रस्वता, नीलता, शुक्लता, कपिशता, चित्रता. उदाहरण,—अका कुमार + अ = कौमारम्. औरभी नीचे

शिशु + अ = शैशवम्, कुशल + अ = कौशलम्।
लघु + अ = लाघवम्, सुष्ठु + अ = सौष्ठवम्।
सुहृद् + अ = सौहृदम्, पिशाच + अ = पैशाचम्।
स्थिर + य = स्थैर्य्यम्, चतुर + य = चातुर्यम्।
वीर + य = वीर्य्यम्, गम्भीर + य = गाम्भीर्यम्।
मधुर + य = माधुर्य्यम्, उदार + य = औदार्य्यम्।
कृश + य = कार्श्यम्, सुभग + य = सौभाग्यम्।
चोर + य = चौर्य्यम्, सारथि + य = सारथ्यम्।
पण्डित+ य = पाण्डित्यम्, वणिज + य = वाणिज्यम्।

१९. परि, अभि उपसर्गसे तस् प्रत्यय होता है. यथा,—अभितः, परितः = चारों तरफ.

२०. सप्तमीके अर्थमें और किम् शब्दसे परे यदि त्र रहे तो किम् को कु आदेश होता है और काल अर्थमें दा प्रत्यय होता है. यस्मिन् = से यत्र, तस्मिन् + से तत्र,

ह्रस्व + इष्ठ = ह्रसिष्ठः	ह्रस्व + ईयस् = ह्रसीयस्
वृद्ध + इष्ठ = वर्षिष्ठः	वृद्ध + ईयस् = वर्षीयस्
अन्तिक + इष्ठ = नेदिष्ठः	अन्तिक + ईयस् = नेदीयस्
बाढ + इष्ठ = साधिष्ठः	बाढ + ईयस् = साधीयस्
दूर + इष्ठ = दविष्ठः	दूर + ईयस् = दवीयस्
युवन् + इष्ठ = यविष्ठः	युवन् + ईयस् = यवीयस्
अल्प + इष्ठ = कनिष्ठः	अल्प + ईयस् = कनीयस्
उत्तम + इष्ठ = वरिष्ठः	उत्तम + ईयस् = वरीयस्
दीर्घ + इष्ठ = द्राघिष्ठः	दीर्घ + ईयस् = द्राघीयस्
प्रशस्य + इष्ठ = ज्येष्ठः, श्रेष्ठः	प्रशस्य + ईयस् = ज्यायस्, श्रेयस्
क्षिप्र + इष्ठ = क्षेपिष्ठः	क्षिप्र + ईयस् = क्षेपीयस्
क्षुद्र + इष्ठ = क्षोदिष्ठः	क्षुद्र + ईयस् = क्षोदीयस्

ईयस् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप लघीयस् शब्द के समान होते हैं.

२२. प्रमाण अर्थमें द्वयस्, दघ्न और मात्र प्रत्यय होते हैं यथा,—

जानुद्वयसम्, जानुदघ्नम्, जानुमात्रम्; शिरोद्वयसम्, शिरोदघ्नम्, शिरोमात्रम्; पुरुषदघ्नम्, पुरुद्वयसम्, पुरुषमात्रम्; नाभिद्वयसम्, नाभिदघ्नम्, नाभिमात्रम्; कण्ठद्वयसम्, कण्ठदघ्नम्, कण्ठमात्रम्.

अनेक स्वरवान् अथवा आकारान्त प्रातिपदिकसे

प्रशस्त अर्थ में इन् और वन् प्रत्यय होते हैं, और इन्
परे रहते पूर्व स्वरका लोप होता है. यथा,—

ज्ञान = इन् = ज्ञानिन्   गुण = इन् = गुणिन्
माया = इन् = मायिन्   माला = इन् = मालिन्
ज्ञान = वत् = ज्ञानवत्, गुणवत्, मालावत्, मायावत्.

माया, मेधा, स्रज् और असन्त प्रातिपदिकसे विन्
और वत् प्रत्यय होते हैं. यथा,-स्वर्णस्य विकारः स्वर्णमयो
घटः । धूमेन व्याप्तम् धूममयं गृहम् । दारुणा निर्मिता
दारुमयी प्रतिमा। पञ्चम्यन्त, सप्तम्यन्त शब्दों से पञ्चमी
सप्तमी के स्थानमें सर्व व त्वन् का बोध व तस् होता है
· गृहात्, गृहाभ्याम्, गृहेभ्यः; के स्थानमें गृहतः । सर्वस्म
सर्वाभ्याम् सर्वेभ्यः के स्थानमें सर्वतः । सर्वस्मिन् सर्व..
सर्वेषु के स्थानमें सर्वतः यत् = यतः, । तत् = ततः,
एतत् = अतः, किम् = कुतः, इदम् = इतः, अदम् =
अमुतः, अस्मत्, युष्मत्.

था प्रत्यय का विवरण.

भवत् से अन्य सर्वनाम से, प्रकार अर्थमें, था प्रत्यय
होताहै. यथा,—अन्येन प्रकारेण अन्यथा, उभये
प्रकारेण उभयथा, सर्वैः प्रकारैः सर्वथा, पूर्व, ऊर्द्ध ।

तन ॥

उपरि, अधस् और समयवाचक अव्ययों को भव अर्थमें तन प्रत्यय होते हैं. यथा,—पूर्वे भवः पूर्वतनः, ऊर्ध्वतनः, उपरितनः, अधस्तनः, पुरातनः प्राक्तनः, सनातनः, चिरंतनः, सायंतनः, अधुनातनः, इदानीतनः अद्यतनः ह्यस्तनः।

चित्=चन.

अनिश्चय अर्थमें विभक्त्यन्त किम् शब्दसे चित्, चन, प्रत्यय होते हैं, और चित्, चन प्रत्ययान्त शब्द अव्ययसमान होते हैं. यथा,—किम् + चित् = किञ्चित् कश्चित्, कश्चन, कञ्चन, किञ्चन, केचित्, केचन, केनचित्, कयाचित्, कस्यचित्, कस्याश्चित, केषाञ्चित, कस्मिंश्चित्, कस्याञ्चित्, कुतश्चित्, कुतश्चन, क्वचित्, क्वचन, कुत्रचित्, कुत्रचन।

इति तद्धितप्रकरणम् ॥

अथ कारक ॥

कारक छः प्रकार के हैं. यथा,—कर्त्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण।

कर्त्ता कारक ॥

जो कोई काम करे वह कर्त्ता कहाता है; कर्त्ता प्रथमा विभक्ति होती है यथा,—देवदत्तो गच्छति: देवदत्त जाता है। बालको रोदिति = बालक रोता है मृगो धावति = मृग दौडता है। मृगौधावतः = दो मृग दौडते हैं। मृगाः धावन्ति = अनेक मृग दौडते हैं

कर्म्मकारक ॥

जो किया जावै, जो देखा जावै, जो खाया जावै और जो पिया जावै, जो दान किया जावै अथवा जो स्पर्श किया जावै, वह कर्म्मकारक कहलाताहै; कर्म्मकारक में द्वितीया विभक्ति होती है. यथा,—घटङ्करोति = घट बनाता है। चन्द्रम्पश्यति = चन्द्रमा को देखता है। अन्नम्भुंक्ते = अन्न खाता है। दुग्धं पिबति = दुग्धपान करता है। धनं ददाति = धन देता है। गात्रं स्पृशति = शरीर को स्पर्श करता है। शत्रुञ्जयति = शत्रु को जीतता है। शास्त्रं अधीते = शास्त्र पढता है। पुष्पं चिनोति= फूल को बटोरता है। गुरुम् पृच्छति = गुरुको पूछता है। ग्रामम् गच्छति = गांवको जाता है।

करण ॥

जिससे कार्य्य सिद्ध होता है, उसको करण कारक कहते हैं; करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है. यथा,—हस्तेन गृह्णाति=हाथ से लेता है। चक्षुषा पश्यति= नेत्र से देखता है। दन्तेन चर्वति = दांत से चवाता है। दण्डेन ताडयति = दण्ड से ताडन करता है । जलेन अग्निं निर्वापयति = जल से अग्नि को बुझाता है ।

सम्प्रदान ॥

जिसको कोई वस्तु दान कियी जावे उसको सम्प्रदान कारक कहते हैं. सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है. यथा,—दरिद्राय धनं दीयताम् = दरिद्रको धन दो। मह्यं पुस्तकं देहि = मुझको पुस्तक दो। दीनेभ्योऽन्नं देहि = दुखियों को अन्न दो ।

अपादान ॥

जिससे कोई वस्तु अथवा व्यक्ति चले, डरे, ग्रहण करे अथवा उत्पन्न होवे उसको अपादान, कारक कहते हैं. अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है. यथा,— वृक्षात्पत्रम्पतति = वृक्षसे पत्र गिरता है । व्याघ्रात्

बिभ्यति = व्याघ्रसे डरता है । सरोवरात् जलं गृह्णाति= सरोवर से जल लेता है । दुग्धात् घृतमुत्पद्यते = दूध से घी उत्पन्न होता है ।

अधिकरण ॥

क्रिया का जो आधार है वह अधिकरण कहा जाता है,—अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है. यथा,— शय्यायां शेते = बिस्तरे पर सोता है । आसने उपविशति = आसन पर बैठता है । गृहे तिष्ठति = घरमें रहता है । विद्यायां अनुरागो विद्यते = विद्या में प्रीति है । सुखेऽभिलाषाऽस्ति = सुख में अभिलाषा है । दुग्धे माधुर्यमस्ति = दूध में मधुरता है । कलशे जलमस्ति= कलशमें जल है । तिलेषु तैलमस्ति=तिलमें तेल है । पात्रे दुग्धं स्थापयति = पात्र में दूध रखता है । वर्षासु वृष्टिर्भवति = वर्षा काल में वृष्टि होती है । सायङ्काले सूर्य्योऽस्तं याति = संध्या के समय सूर्य्य का अस्त होता है । रात्रौ चंद्र उदेति = रात्रि में चंद्रमा का उदय होता है ।

इति सामान्यकारकप्रकरणम् ॥

विशेष शब्द के सम्बन्धमें तथा विशेष अर्थमें विभक्ति

सह वनम् जगाम = रामः लक्ष्मण के सहित वन गये। केनापि सार्द्धं विरोधो न कर्तव्यः = किसी के साथ विरोध करना उचित नहीं है। विवादेन अलम् = विवाद मत करो । कलहेन किम् = कलह से कुच्छ प्रयोजन नहीं। निमित्त अर्थमें और नमस् शब्द के योगमें चतुर्थ विभक्ति होती है. यथा,—ज्ञानाय अध्ययनम् = ज्ञान के वास्ते पढना। सुखाय धनोपार्जनम् = सुख के वास्ते धन बटोरना। परोपकाराय सतां जीवनम् = पराये के उपकार के लिये सज्जनों का जीवन। गुरवे नमः = गुरु को प्रणाम । पित्रे नमः = पिता को प्रणाम । हेतु अर्थ में तृतीया और पञ्चमी विभक्ति होती है. यथा,—भयेन कम्पते = डर से कम्पताहै। क्रोधेन ताडयति = क्रोध से ताडन करता है । हर्षाद् नृत्यति = हर्ष से नाचता है। दुःखात् रोदिति = दुःख से रोता है। अन्य, पृथक् आदि शब्दों के योगमें और अपेक्षा अर्थमें पञ्चमी विभक्ति होती है. यथा,—मित्रात् अन्यः कः परित्रातुं समर्थः =मित्र के विना कौन रक्षा कर सक्ता है। इदमस्मात् पृथक्=यह इससे जुदा है। धनात् विद्या गरीयसी= धनसे विद्या श्रेष्ठहै।

विना शब्दके योगमें द्वितीया, तृतीया और पञ्चमी विभक्ति होती है. यथा,—श्रमम् विना विद्या नभवति= विना परिश्रम विद्या नहीं होती है । यत्नेन विना किमपि न सिध्यति = यत्न विना कुच्छ सिद्ध नहीं होता । पापात् विना दुःखं न भवति = पाप के विना दुःख नहीं होता ।

ऋते शब्द के योगमें द्वितीया और पञ्चमी विभक्ति होती है. यथा,— श्रमम् ऋते विद्या न भवति = श्रम के विना विद्या नहीं होती है। धर्म्मात् ऋते सुखं नहि भवति= धर्म के विना सुख नहीं होता है ।

सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है. यथा,— मम हस्तः = मेरा हाथ । तव पुत्रः=तुह्मारा पुत्र । नद्याः जलम् = नदी का जल । वृक्षस्य शाखा = वृक्षकी शाखा । कोकिलस्य कलरवः = कोकिल का शब्द । प्रभोरादेशः = प्रभुकी आज्ञा ।

सम, तुल्य, समान, सदृश, इत्यादि शब्दों के योग में तृतीया और षष्ठी विभक्ति होती है. यथा,—विद्यया समम् धनं नास्ति = विद्या के समान धन नहीं । विनयस्य तुल्यं गुणो नास्ति = विनय के समान गुण नहीं ।

समुदाय से जाति, गुण, क्रिया से जुदा करने को निर्धारण कहते हैं,— और निर्धारण अर्थमें षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होती है. यथा,—नृणाम् नृषु वा विप्रः श्रेष्ठः = मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है। कवीनां कविषु वा कालिदासः श्रेष्ठः = कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है। गवाम् गोषु वा कृष्णा गौः बहुक्षीरा = गौवों में कृष्ण गौ बहुत दूधवाली है । गच्छताम् गच्छत्सु वा धावन् शीघ्रः = चलनेवालोंमें दौडनेवाला शीघ्र है।

कर्त्ता कर्म च करणं संप्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट्॥

इति कारकप्रकरणम्॥

अथ स्त्रीप्रत्ययाः।

अकारान्त शब्द को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिये अथवा आ ई प्रत्यय होता है; यथा,—सर्व, सर्वा। स्थिर स्थिरा। प्रबल, प्रबला। कृश, कृशा। वैश्य, वैश्या। शूद्र, शूद्रा। दृढ, दृढा। इत्यादि। वैष्णव, वैष्णवी। नद, नदी। हंस, हंसी। मृग, मृगी। गौर, गौरी। कुमार, कुमारी। सुन्दर, सुन्दरी। इत्यादि। यदि शब्दके अन्तमें मत

वत् रहैं, तो उन्ह शब्दों को स्त्रीलिङ्ग करने के अथवा लिये अन्तमें ईकार होता है. यथा,—बुद्धिमत्, बुद्धिमती। श्रीमत्, श्रीमती। भक्तिमत्, भक्तिमती। बलवत्, बलवती। लज्जावत्, लज्जावती। विद्यावत्, विद्यावती। गुणवत्, गुणवती इत्यादि॥ यदि शब्द के अन्तमें अत् रहे तो उन्ह शब्दोंके अन्तमें बहुधा ईकार होता है, तिसके मध्यमें कुच्छ शब्दों के त् को न्ती होता है. यथा,—गच्छत् गच्छन्ती। तिष्ठत्, तिष्ठन्ती। पश्यत्, पश्यन्ती। पतत्, पतन्ती। नृत्यत्, नृत्यन्ती। वदत्, वदन्ती। गायत्' गायन्ती। ध्यायत्, ध्यायन्ती। रुदत्, रुदन्ती। कुर्वत्, कुर्वन्ती। गृह्णत्, गृह्णन्ती। द्विषत्, द्विषन्ती। स्तुवत्, स्तुवन्ती इत्यादि॥ यदि स्त्रीलिङ्ग शब्दोंके अन्तमें इन् रहे तो अन्तमें ई होता है. यथा,—कमलिन्, कमलिनी। मालिन्, मालिनी। मानिन्, मानिनी। शुभदायिन्, शुभदायिनी। मनोहारिन्, मनोहारिणी। चमत्कारिन्' चमत्कारिणी। मेधाविन्, मेधाविनी। मायाविन्, मायाविनी इत्यादि। यदि स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्त में ह्रस्व उ होय तो उकार के आगे ई विकल्प करके होता

है. यथा,—मृदु मृद्वी, मृदुः। साधु साध्वी, साधुः। गुरु गुर्वी, गुरुः। लघु लघ्वी, लघुः इत्यादि ॥ यदि स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्त में ऋ रहे तो ऋकार के आगे ई होता है. यथा,—कर्तृ, कर्त्री। धातृ, धात्री। जनयितृ, जनयित्री। प्रसवितृ, प्रसवित्री इत्यादि ॥

इति स्त्रीप्रत्ययाः ॥

अथ समासप्रकरणम् ॥

१. अनेक पदों से मिलकर जो पद बनता है उसे समास कहते हैं. समास छः प्रकारके होते हैं (१) तत्पुरुष, (२) कर्मधारय, (३) बहुव्रीहि, (४) द्विगु, (५) द्वन्द्व, (६) अव्ययीभाव.

२. तत्पुरुष समास के आठ भेद हैं; कर्मधारय और बहुव्रीही के सात २ भेद हैं; द्विगु और द्वन्द्व समास के दो २ भेद हैं; अव्ययीभाव भी दोही प्रकार का है.

३. इन छः समासों में ४ समास मुख्य हैं. यथा,— अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि और द्वन्द्व. द्विगु और कर्मधारय, तत्पुरुष के भेद, हैं.

४. इन चारों में से तीन्हों का सामान्य विग्रह ये

हैं,— स, च, असौ ये पदघटित समासको कर्मधारय कहते हैं, यस्य येषाम् इत्यादि घटितसमास को बहुव्रीहि कहते हैं, वहुत चकारघटित समास को द्वन्द्व कहते हैं.

५. समासों के विशेष लक्षण ये हैं. यथा,—जिस पदमें उत्तर पद का अर्थ, मुख्य होवे उस समास को तत्पुरुष कहते हैं. जिस समास में अन्यही पद का अर्थ प्रधान हो उसे बहुव्रीहि कहते हैं. जिस समासमें दोनों पदोंके अर्थ प्रधान हों उसे द्वन्द्व कहते हैं. जिस समास में पूर्व पदका अर्थ प्रधान हो उसे अव्ययीभाव कहते हैं.

६. जिस पदसे कोई वस्तु या व्यक्ति का बोध हो, उसे विशेष्य कहते हैं, और जो पद विशेष्य का गुण व अवस्था, बतलावे उसे विशेषण कहते हैं, और विशेषण विशेष्यके पहिले आता है. जो लिङ्ग, सख्या कारक आदि विशेष्यमें रहता है वही विशेषण में भी होता है. यथा,— नीलं वस्त्रम्, शीतं जलम्, नूतना शाटी, भग्ना नौका, फलवान् वृक्षः।

७. तत्पुरुष समासके ८ प्रकार हैं. यथा,—

प्रथमा तत्पुरुष, द्वितीया तत्पुरुष, तृतीया तत्पुरुष, चतुर्थी

तत्पुरुष, पंचमी तत्पुरुष, षष्ठी तत्पुरुष, सप्तमी तत्पुरुष, और नञ् तत्पुरुष.

प्रथमा तत्पुरुषो यथा,—अर्धं पिप्पल्याः = अर्धपिप्पली, पूर्वं कायस्य = पूर्वकायः

द्वितीया तत्पुरुषो यथा,—कृष्णं श्रितः, =कृष्णश्रितः, ग्रामं गतो =ग्रामगतः, कांतारम् अतीतः = कांतारातीतः

तृतीया तत्पुरुषो यथा,—शंकुलया खंडः = शंकुलाखंडः, धान्येन अर्थः =धान्यार्थः, मासेन पूर्वः =मासपूर्वः

चतुर्थी तत्पुरुषो यथा,—यूपाय दारु=यूपदारु, कुंडलाय हिरण्यम् =कुंडलहिरण्यम् , गुरवे दक्षिणा = गुरुदक्षिणा.

पंचमी तत्पुरुषो यथा.—अर्थात् अपेतः = अर्थापेतः, सिंहात् भयम् =सिंहभयम् , = वृश्चिकात् भीः = वृश्चिकभीः

षष्ठी तत्पुरुषो यथा,—कृष्णस्य भक्तः = कृष्णभक्तः, आम्रस्य फलम् =आम्रफलम् , राज्ञः पुरुषः =राजपुरुषः

सप्तमी तत्पुरुषो यथा,—अक्षेषु शौंडः = अक्षशौण्डः, कर्मणि कुशलः =कर्मकुशलः, विद्यायाम् निपुणः= विद्यानिपुणः

नञ् तत्पुरुषो यथा,—न ब्राह्मणः = अब्राह्मणः, न वृषभः = अवृषभः, पापाभावः= अपापम् , धर्मविरुद्धः= अधर्मः

यदि स्वरादि पद उत्तर पद में रहे न को अन् होता है.—न अश्वः = अनश्वः, न अर्घ्यः = अनर्घ्यः, न अर्घः = अनर्घः ।

इति तत्पुरुषः ॥

८. कर्मधारय समास ८ प्रकार का होता है. यथा,— विशेषणपूर्वपदक, विशेष्यपूर्वपदक, विशेषणोभयपदक, उपमानपूर्वपदक, उपमानोत्तरपदक, संभावनापूर्वपदक। अवधारणापूर्वपदक और मध्यपदलोपी।

विशेषणपूर्वपदः कर्मधारयो यथा,—कृष्णश्चासौ सर्पश्च = कृष्णसर्पः, कृष्णौ च तौ सर्पौ च = कृष्णसर्पौ, कृष्णाश्च ते सर्पाश्च = कृष्णसर्पाः। रक्ता चासौ लता च = रक्तलता, । रक्ते च ते लते च = रक्तलते, रक्ताश्च ताः लताश्च = रक्तलताः नीलं । च = तत् उत्पलंच = नीलोत्पलम्, नीले च ते उत्पलेच = नीलोत्पले, नीलानि च तानि उत्पलानि च = नीलोत्पलानि।

विशेष्यपूर्वपदः कर्मधारयो यथा,—वैयाकरणश्चासौ खसूचिश्च = वैयाकरणखसूचिः, गोपालश्चासौ बालश्च = गोपालबालः

विशेषणोभयपदः कर्मधारयो यथा.—शीतं च तत् उष्णं च = शीतोष्णम्.

उपमानपूर्वपदः कर्मधारयो यथा; मेघ इव श्यामः = मेघश्यामः, कंबुवत् ग्रीवा = कंबुग्रीवा. चंद्रवत् मुखं = चंद्रमुखम्.

उपमानोत्तरपदः कर्मधारयो यथा,— पुरुषः व्याघ्र इव = पुरुषव्याघ्रः। नरः सिंह इव = नरसिंहः।

संभावनापूर्वपदः कर्मधारयो यथा,—गुणः इति बुद्धिः = गुणबुद्धिः।

अवधारणपूर्वपदः कर्मधारयो यथा–विद्यैव धनं = विद्याधनम्. अविद्यैव शृंखला = अविद्याशृंखला.

मध्यपदलोपी समासो यथा,–शाकप्रियः पार्थिवः शाकपार्थिव देवपूजको ब्राह्मणः = देवब्राह्मणः ।

इति कर्मधारयः ॥

९. बहुव्रीहि समासके ७ भेद हैं. यथा,–

द्विपदक, बहुपदक, सहपूर्वपदक, संख्योत्तरपदक, संख्योभयपदक, व्यतिहरलक्षणोपपदक, दिगंतराललक्षणपदक ।

द्विपदबहुव्रीहिर्यथा; चित्राः गावो यस्य सः चित्रगुः=गोपः। प्राप्तं उदकं यं सः प्राप्तोदकः= ग्रामः। भुक्तं ओदनं येन सः भुक्तौदनः =भूपः। निर्जितः कामो येन सः = निर्जितकामः शिवः। विभक्तं धनं येः ते विभक्तधनाः= बंधवः। दत्तः सूपो यस्मै सः दत्तसूपः =ब्राह्मणः। उद्धृतं धनं यस्मात् तत् =उद्धृतधनं कुडम्। चक्रं पाणौ यस्य सः चक्रपाणिः=हरिः। करे स्थितं धनं यस्य सः करास्थितधनः= वणिक्। पुष्पिताः द्रुमाः यस्मिन् सः पुष्पितद्रुमः =आरामः। बहवो यज्वानो यस्यां सा बहुयज्वा = शाला। पुष्पिताः द्रुमाः यस्मिन् तत् पुष्पितद्रुमं=वनम्। खरस्य मुखम् इव मुखं यस्य सः खरमुखः= तुरगः। उष्ट्रस्य मुखम् इव मुखं यस्य सः उष्ट्रमुखः= यक्षः। उच्चैः घटो यस्याः सा उच्चैर्घटा = नारी।

१०. अंग, गात्र, उदर, स्तन, कण्ठ, ओष्ठ, दन्त,

मुख, अक्षि, और केश इन शब्दों का यदि स्त्रीलिंग शब्दों के साथ बहुव्रीहि समास करें तो उक्त शब्दों में ई लग जाता है. यथा,—सुंदरं अंगं यस्याः सा=सुंदरांगी। शोभनं गात्रं यस्याः सा=सुगात्री। कृशं उदरं यस्याः सा=कृशोदरी। चारु स्तनौ यस्याः सा=चारुस्तनी। इंदीवरे इव अक्षिणी यस्याः सा=इंदीवराक्षी। कंबुः इव कण्ठो यस्याः सा=कंबुकंठी। कुटीलाः केशाः यस्याः सा=कुटिल केशी।

११. अंगवाचक शब्दों को स्त्रीलिंग विशेषण रहते आ लग जाता है. यथा,—चारुदेहा, विस्तृतालका, आवृतकुचा, कुंददशना, इत्यादि।

१२. उरु, पृथु, लघु, बहु, पटु, ऋजु, स्वादु, चारु और मृदु, इन शब्दों को स्त्रीलिंग विशेषण रहते ई लगजाता है. यथा,—मृद्वी, शाटी, लघ्वी भाषा, इत्यादि।

इति द्विपद्बहुव्रीहिः॥

बहुपदो यथा,—अधिकः उन्नतः अंसः यस्य सः= अधिकोन्नतांसः।

सह पूर्वपदो यथा,—सह कृष्णेन वर्तते इति=सकृष्णः। सह पुत्रेण वर्तते इति=सपुत्रः। रामेण सह वर्तते इति=सरामः।

संख्योत्तरपदो यथा,—दशानां समीपे ये सन्ति ते=उपदशाः।

संख्योभयपदो यथा,– द्वौ वा त्रयो वा = द्वित्राः ।

व्यतिहारलक्षणो यथा,–केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवर्तते इति =केशाकेशि युद्धम् । दंडैः दंडैःकृत्वा इदं युद्धं प्रवर्तते इति=दंडादंडि ।

दिगंतराललक्षणो यथा,– दक्षिणस्याः पूर्वस्याः च दिशोर्यदंतरालं सा = दक्षिणपूर्वा ।

इति बहुव्रीहिः ॥

१३. द्विगु समास के दो भेद होते हैं. यथा,–एकवद्भावी और अनेकवद्भावी ।

एकवद्भावी द्विगुर्यथा,–त्रयाणाम् शृंगाणाम् समाहारः=त्रिशृंगम् । पंचानां फलानां समाहरः=पंचफली।

अनेकवद्भावी द्विगुर्यथा,–सप्त च ते ऋषयश्च = सप्तर्षयः ।

१४. द्वंद्व समास दो प्रकार का होता है. यथा,–इतरेतर और समाहार । इतरेतरद्वंद्वो यथा,–प्लक्षश्च न्यग्रोधश्च=प्लक्षन्यग्रोधौ । रामश्च कृष्णश्च=रामकृष्णौ ।

समाहारद्वंद्वो यथा,–हरिश्च हरश्च गुरुश्च एषां समाहारः=हरिहरगुरवः।

१५. यदि प्राणि के अंगवाची अथवा बाजा के अंगवाची, सेनाके अंगवाची शब्दों के साथ द्वंद्व समास करें तब नित्य नपुंसकलिंग और एकवचनही होताहै. यथा- प्राण्यंगो यथा,– पाणी च पादौ च मुखं च, पाणिपादमुखं ।

तूर्यांगो यथा,— मार्दंगिकश्च वैणविकश्च = मार्दंगिकवैणविकम्
शंखश्च पटहश्च = शंखपटहम्।

सेनांगो यथा,— राजन्याश्च रथाश्च अश्वाश्च = राजन्यरथाश्वम्।

१६. अथाव्ययीभावो यथा,—तटं तटं प्रति=अनुतटम्। गिरिं गिरिं प्रति=अनुगिरिम्। क्रमम् अनतिक्रम्य वर्तते =इति यथाक्रमम्। वेलायाम् वेलायां इति=अधिवेलम्। कुंभस्य समीपे वर्तते इति=उपकुंभम्। मक्षिकाणाम् अभावो=निर्मक्षिकम्। हिमस्य अत्ययः=अतिहिमम्।

१७. अव्ययीभाव समास अव्यय कहाता है। इस लिये तीनों लिंग और सब वचनों में उसके रूप एकसे हीहोते हैं.

१८. उक्त सब समासों के दो भेद और भी होते हैं. यथा,—लुक् और अलुक्=अर्थात् विभक्ति का लोप हो जाना, वा विभक्ति बनी रहना.

लुक् समासो यथा,—तनुरेव लता=तनुलता। कृष्णः एव मेघाः=कृष्णमेघाः।

अलुक्समासोयथा, वनेचरतीति=वनेचरः। पंकेरोहतीति=पंकेरुहम्।

मत्वर्थीयो यथा,— बुद्धिः अस्य अस्ति इति= बुद्धिमान्। धनम् अस्य अस्ति इति = धनवान्। धीरस्य भावो = धीरता। जनानां समूहो = जनता। पटस्य भावो = पटत्वम्।

वृक्षशाखा तत्पुरुषः श्वेताश्वः कर्मधारयः॥

रक्तपक्षो मधुर्मीढिदिंद्दन्द्रदिवाकरौ ॥ इति समासप्रकरणम् ॥

अथ श्लोकान्वयक्रमः ॥

आदौ कर्तृपदं वाच्यं द्वितीयादि पदं ततः ।
क्त्वात्वानुपूर्व्यप् च मध्ये तु कुर्यादंते क्रियापदम् ॥ १ ॥
यल्लिंगं यद्वचनं या च विभक्तिर्विशेष्यस्य ।
तल्लिंगं तद्वचनं सैव विभक्तिर्विशेषणस्यापि ॥ २ ॥
विशेषणं पुरस्कृत्य विशेष्यं तदनंतरम् ।
कर्तृकर्मक्रियायुक्तमेतदन्वयलक्षणम् ॥ ३ ॥ इति ॥

अथ वाचनपाठमाला । प्रथमः पाठः ॥

ईश्वरो जयति । शिष्यः पृच्छति । गुरुः उपदिशति । देवम् भज । नारायणम् स्मर । धर्म्मम् चिनुहि । पितरम् सेवय । मातरम् पालय । ऋतम् वद । अनृतम् त्यज । नीतिम् चर । विद्याम् अर्जय । बुद्धिम् वर्द्धय । कामम् जय । शत्रुम् जहि । दयाम् कुरु । शास्त्रम् पठ । सुसुखम् चिन्तय । मित्रम् प्रमोदय । यशः लभस्व । पयः पिब । आचार्यम् पूजय । सन्ध्या भवति । रात्रिरायाति । दीपो ज्वलति । मेघो गर्जति । विद्युत् दृश्यते । मयूरो नृत्यति । शृगालो रौति । चन्द्र उदेति । नटी नर्त्तति । गायको गायति । शिशुः क्रीडति । श्वा क्रोशति । चौराः पलायन्ते । युवा हसति । वृद्धो निद्राति । सूर्यः प्रकाशते । पतङ्गाः उड्डीयन्ते । मक्षिकाः दशन्ति । वायुर्वाति । वृक्षाः कंपन्ति । पत्राणि चलन्ति पुष्पम् सुशोभते । फलानि पतन्ति । व्याधयः नश्यन्ति । सुखम् अनुभवामि । सः गच्छति । त्वम् पश्यसि । अहम् कथयामि । गौः धावति । हरिः क्रीडति । इति प्रथमः पाठः ॥

द्वितीयः पाठः ॥

गुरुः शिष्यम् बोधयति । सदा सत्यम् ब्रूयाः । श्रमेण विद्या भवति । विद्यया यशो लभ्यते । वृद्धसेवनात् बुद्धिर्वर्द्धते । दुष्टसंगात् ज्ञानं नश्यति । ऋषिकुमाराः आचार्यम् प्रणमन्ति । छात्राः रविम् पूजयन्ति । बालाः पादाभ्याम् धावन्ति । ऋषयः पुण्येन हरिम् पश्यन्ति । कवयः हरिम् श्लोकैः स्तुवन्ति । गुरुः शिष्याय शास्त्रम् कथयति । षष्ट्या पलैरेको दण्डः स्यात् । षष्ट्या दण्डैरेकम् दिनम्भवति । सप्त वासरैरेकः सप्ताहम् जायते । द्वाभ्यां सप्ताहाभ्याम् एकः पक्षः भवति । त्रिंशत् दिनैरेको मासः स्यात् । द्वादशभिर्मासैरेको वर्षो भवति । ऋतवः षट् स्युः । द्वाभ्याम् द्वाभ्याम् मासाभ्याम् एको ऋतुर्जायते । यथा,–(१) ज्येष्ठाषाढौ ग्रीष्मः, (२) श्रावणभाद्रौ वर्षा, (३) आश्विनकार्तिकौ शरत् , (४) आग्रहायणपौषौ हिमः, (५) माघफाल्गुनौ शिशिरः (६) चैत्रवैशाखौ वसन्तः । वसन्तकालो रमणीयः । वसन्ते वृक्षाः सपुष्पपल्लवाः जायन्ते । दिशः प्रसन्नाः दृश्यन्ते । तिर्यञ्चः शावकाञ्जनयन्ति । दिनरात्रिश्च समं भवति । पवनो मन्दसुगन्धो वाति । शिशिरे महा निशा जायते । उष्णजले स्पृहा भवति । कामः प्रदीप्तो भवति । फाल्गुनपञ्चदश्याम् बालाः होलिकोत्सवम् कुर्वन्ति । हिमे हिमानी जायते । हिमे जठराग्निः प्रदीप्तो भवति । शरदि चन्द्रमाः प्रसन्नउदेति । जलम् मधुरम् स्वच्छञ्च दृश्यते । रमणीया चन्द्रिका च दृश्यते । वर्षासु गगनम् मेघैराव्रीयते। दिङ्मण्डलं सदा तमोभिराच्छायते । मेघा गर्जन्ति । वारीणिवर्षन्ति । सूर्यचंद्रौ च न दृश्येते । खे खद्योताः सुशोभन्ते । सौदामिनी नयनं स्थगयति । विद्युत् विद्योतते । वज्रम् पतति । मनः

उद्विजते। पन्थाः कर्दमितो भवति। धरा जलैरापूर्यते। नद्यः महास्रोताः प्रवहन्ति। जलं मलिनं जायते। वृक्षाः शीतलाः हरिताश्च जायन्ते। सकणः पवनः वाति। ग्रीष्मे सूर्यातपः प्रचण्डो भवति। जीवनश्च उष्णम्भवति। दिवसो वृद्धिं याति निशा क्षीणा भवति। धूलीपटलम् गगनमाच्छादयति वातास्सततमाश्चलन्ति। चित्तमस्वास्थ्यं लभते। जलेन विना पक्षिण रुदन्ति। वृक्षाः शुष्कपर्णाः भवन्ति। वनम् दावानलेन दह्यते। नदी हीनजला तिष्ठति। जले विशेषतः स्पृहा जायते। रसनया रसं स्वादयति। श्रोत्रेण शब्दम् शृणोति। नेत्राभ्याम् रूपम् पश्यति। नासिकया गन्धम् जिघ्रति। त्वचा वायुं स्पृशति। वदनेन कथयति। पाणिना गृह्णाति। पादेन गच्छति। कायेन चेष्टते। मनसा स्मरति। आत्मा सर्वाधिष्ठाता वर्त्तते।

संकटे धीरो धृतिं न मुञ्चति। पुत्रः पितरम् प्रणमति। पिता पुत्रम् आह्वयति। त्वम् कथम् रोदिषि। तन्तुवायः वस्त्रं वयति। गौः सस्यान्यत्ति। बीजादङ्कुरो जायते। केनापि साकं कलहो न विधेयः। साधवः सर्वभूतेषु दयां कुर्वन्ति। पक्षिणो रात्रौ वृक्षशाखायाम् निवसन्ति। प्रभुः भृत्याय वेतनं ददाति। सुज्ञशिशुः यत्नेन विद्यामर्जयति। का पुरुष एव दैवमवलम्बते। उद्योगी पुरुषो लक्ष्मीमुपैति। विद्या विनयं, धनं, धर्मञ्च ददाति। परशुरामः पृथिवीं निःक्षत्रियामकरोत्। धृतराष्ट्रो जन्मान्ध आसीत्। भीमः गदाघातेन दुर्योधनस्य ऊरू बभञ्ज। चन्द्रं दृष्ट्वा मनसि महान् अल्हादो जायते। रजन्याम् आकाशे असंख्यानि नक्षत्राणि दृश्यन्ते। रामः पितुरादेशात् सीतया लक्ष्मणेन च सह वनं जगाम। यो बाल्ये विद्याम् नोपार्जयति स चिराय मूर्खो

विष्यति, किन्तु बालकस्यात्र कश्चन रक्षको नास्ति, तत् किम् करोमि भवतु। चिरकालपालितमिमं नकुलं पुत्रनिर्विशेषं बालकरक्षार्थे व्यवस्थाप्य गच्छामि।तथा कृत्वा गतः।ततः तत्र दैवात् कश्चित् कृष्णसर्पः समायातः। अथ नकुलः तं सर्पं बालकसमीपम् आगच्छन्तं दृष्ट्वा कोपात् व्यापाद्य खण्डं खण्डं चकार। अथ किञ्चित् कालानन्तरं यदा नकुलो ब्राह्मणमायान्तं ददर्श, तदा सत्वरम् उपगम्य तच्चरणयोर्लुलोठ. ततः स विप्रः रक्तविलुप्तपादं नकुलं दृष्ट्वा, बालकोऽनेन खादित इत्यवधार्य्य, नकुलं लगुडेन व्यापादितवान्। अनन्तरं गृहं प्रविश्य स्वसुतं स्वस्थं सर्पञ्च व्यापादितम् दृष्ट्वा, अहो अत्युपकारकम् जन्तुर्मया मन्दबुद्धिनाऽविचार्य हत इति परमं विषादमाप। अतोऽहं ब्रवीमि अविचारितं कर्म कदापि न कार्यम्।

२ कथा ॥

नीचाय श्लाघ्यपदं कदापि न देयम्।

यथा,—आसीत् गौतममहर्षेस्तपोवने महत्तपा नामा मुनिः। तत्रैकदा कश्चित् काको मूषिकशावकम् निनाय। ततः स्वभावदयालुरसो मुनिः तम् शावकम् काकान्मोचयित्वा पालयामास। अथैकदा तत्राश्रमे कश्चित् मार्जारमाजगाम। तस्मात् भीतो मूषिकस्तस्य मुनेरङ्कं प्रविवेश। ततो मुनिनोक्तं मूषिक, मार्जारान् मा भैषीः त्वमपि मार्जारो भव। ततः कश्चित् कुक्कुरः समायातः तं दृष्ट्वा मार्जारात्यो मूषिकः पलायते स्म। तदा मुनिना पुनरुक्तम्, कुक्कुराद् बिभेषि त्वमेव कुक्कुरो भव। ततश्च कुक्कुरो भूत्वापि सः व्याघ्रं दृष्ट्वा भयात् मुनेस्सकाशमागच्छतीति मुनिस्तमपि व्याघ्रं चकार। अथ तं मुनिं दृष्ट्वा सर्वे कथयन्ति अनेन मुनिना मूषिको व्याघ्रतां नीतः। तच्छ्रुत्वा स व्याघ्रोऽचिन्तयत्, यावदनेन मुनिना स्यातव्यम् तावदिदं मे स्व-

गत्वा तस्य आह्वानाय शब्दश्चकार, भो उपमन्यो क्वासि वत्सेहि। स उपाध्यायवचनं श्रुत्वा उच्चैः प्रत्युवाच, अयमस्मिन् कूपे पतितोऽहम्। तच्छ्रुत्वा शिष्यैः सह उपाध्यायः कूपात् तं निस्सार्य्य प्रत्युवाच कथं त्वमस्मिन् कूपे पतितः? स उपाध्यायम् प्रति जगाद अर्कपत्राणि भक्षयित्वा अन्धीभूतः अतः कूपे पतितोऽस्मि। एतच्छ्रुत्वा उपाध्यायः तं उपदिदेश अश्विनौ स्तुहि तौ देवभिषजौ त्वाम् चक्षुष्मन्तम् कर्त्तारौ। उपाध्यायेन एवमुपदिष्टः स ऋग्भिर्देववश्विनौ तुष्टाव, तेनाभिष्टुतावश्विनावाजग्मतुः आहतुश्चैनम्। वत्स प्रीतावावाम् एष अपूपो अशान् स एवमुक्तः जगाद भगवन्तौ गुरवे अनिवेद्य अहम् एनम् अपूपम् उपभोक्तुम् नोत्सहे तदा तम् अश्विनावाहतुः तव अनया गुरुभक्त्या प्रीतौ स्वः, भवतः हिरण्मया दन्ताः भविष्यन्ति, चक्षुष्मान् च भविष्यसि, श्रेयश्चावाप्स्यसीति। अथ तस्यैव अयोधौम्यस्य अपरः शिष्यः वेदो नाम तमुपाध्यायः समादिदेश वत्स वेद इहास्यताम् तावत् मम गृहे कश्चित् कालं शुश्रूषुणा च भवितव्यम् श्रेयस्ते भविष्यति, स तथेत्युक्त्वा गुरुकुले दीर्घकालं शुश्रूषणपरोऽवसन् गौरिव नित्यं गुरुणा धूर्षु नियोज्यमानः शीतोष्णक्षुत्तृष्णा दुःखसहः सर्वत्राप्रतिकूलः तस्य महता कालेन गुरुः परितोषम् जगाम, तत्परितोषाच्च श्रेयः सर्वज्ञताञ्च अवाप, वेदस्यापि एषा परीक्षा गुरुणा कृता। तदनन्तरम् स उपाध्यायेनानुज्ञातः समावृतः गुरुकुलवासात् गृहाश्रमम् प्रतिपद्यत। तस्यापि स्वगृहे वसतः त्रयः शिष्याः बभूवुः सः गुरुः शिष्यान् न किञ्चित् उवाच कर्म्म वा क्रियताम् गुरुशुश्रूषा वा, गुरुकुलवासस्य दुःखाभिज्ञो हि शिष्यान् परिक्लेशेन योजयितुम् न इयेष, किन्तु श्रीलक्ष्मीरमणचरणकमलेषु प्रीतिश्च इयेषति।

वस्वङ्ग्यङ्के धरावर्षे आश्विने दशमी रवौ ॥
चक्रे प्रवेशिकामेताम् दत्तान्तः परमेश्वरः ॥ १ ॥

सं० १९४८ में आश्विन शुक्ल विजयादशमी रविवारको पाण्डेय श्रीपरमेश्वरदत्तने इस प्रवेशिका की रचना कर, सकलशास्त्रपारङ्गत, सर्वतन्त्रव्यवस्थापक, नानानिबन्धप्रचारक, नानाग्रन्थप्रकाशक धर्म्ममार्गप्रवर्त्तक, वैराग्यमार्गनिदर्शक, श्रीमत् परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य योगिराज पूज्यपाद जगद्गुरु श्री १०८ मनीष्यानन्द तीर्थपादपद्म में उपहार किया.

इति ॥

श्रीगणेशाय नमः।

अथ भूगोलनामावली ॥

प्राचीन नाम.	नवीन नाम.	प्राचीन नाम.	नवीन नाम.
अश्वक्रान्त	यूरोप.	विष्णुक्रान्त, असेचनक.	एशिया.
रथक्रान्त, सूर्यारिका.	आफ्रिका.	कुमारद्वीप, माहेय, स्वर्णभूमि.	अमेरिका.
रमनक	आस्ट्रेलेशिया.		
स्वर्णप्रस्थद्वीप, स्वर्णस्थान.	पालिनेशिया.		

अश्वक्रांत (यूरोप) सम्बन्धी.

प्राचीन नाम.	नवीन नाम.	प्राचीन नाम.	नवीन नाम.
आवर्तन	ब्रिटन.	रोम, रूम.	रोम.
इन्द्रद्वीप, इन्दुद्वीप.	इङ्गलैन्ड	पट्टपर, रोमान्तः, पातदेश.	इटाली.

प्राचीन नाम.	नवीन नाम.	प्राचीन नाम.	नवीन नाम.
पशुशील, भावकच्छ.	पोर्त्तुगाल.	क्रमथ, कामल, क्रौञ्च.	—जर्म्मनी.
सैनिक—	हालेन्ड.	प्रलीया, कुहक.	—फ्रान्स.
कुक्कट—	बेलजियम.	मारक—	डेन्मार्क.
अश्वक, अश्वीया.	आष्ट्रिया.	युरोपियनटरकी.	
तामसदेश—स्पेन.		शशिलीना—सिसिली.	
माठक,स्केनडिने-मिया,अर्णियक,तुरुस्क.			

रथक्रान्त (आफ्रिका) संम्बन्धी

मिश्र—मिसर, ईजिप्ट.

बर्बर—बारबरी.

वारुण उपद्वीप, राक्षसावास,वारिधान. } — आफ्रिका का उपद्वीप बोरबन.

कानिवल—केनिवल.

विष्णुक्रान्त (एशिया) संम्बन्धी.

प्राचीन नाम.	नवीन नाम.	प्राचीन नाम.	नवीन नाम.
शक, तुरुष्क, ग्रामिकतुरुष्क.	—टरकी.	मुसल—मुषक.	
		वासुक—बसुरा.	
		रुप—रशिया, रूस.	
नैकपृष्ठ, युगन्धर.	—लापलेन्ड.	हौरब—साइबीरिया.	
तुखरा—	बुखारा.	पारद, चीन, महाचीन.	—चीन.
तालतोपक, तीर्वत.	—तिब्बत.	काम्बोज, आवर्त.	—अरब.
शौलराज्य, पार्वत.	—तातार.		

प्राचीन नाम.	नवीन नाम.
स्यश	ईरान.
शूद्र, यवन	मक्का.
अपवाह, अपरान्त.	मसकत.
पारसी	फारस.
केकय	हिरात.
सुमित्राद्वीप	सुमात्राद्वीप.
सिंहलद्वीप, गान्धर्व.	सिंहलद्वीप लंका.
स्कलावास	सीलोन.
चन्द्रशंक, सौम्य, तारकट, मारीचावास.	न्यूहालंड.
ब्रह्मोत्तर, ब्रह्मदेश.	बम्र्मा.
भारतवर्ष	इंडिया.
कर्मभूमि, कुमारिका.	
नेपाल	नैपाल.
दरद	भुटान.

प्राचीन नाम.	नवीन नाम.
पारस्य	पारस.
पारसीक	फारस.
नार्द्दिनाश, कारस्कार.	मदीना.
पह्लव	काबूल.
गान्धार	कन्धार.
मणिद्वीप	जापान.
पश्चजन्यद्वीप	हेनानद्वीप.
गभस्तिमान, मरीचिद्वीप.	मिरचद्वीप
नाकरद्वीप,	नाकद्वीप.
उपमल्वका	मलकाद्वीप.
नर्त्तक, पृष्ठ.	चिरापुंजी.
प्राविजया	जंतिया.
शुर्मा शृङ्गदेश.	सिंगापुर.
द्वारका	द्वारका.
नाभिवर्ष, हिंदुस्थान.	
मानवदेश	माडवार.
दरदलिंग	दार्जलिंग.

प्राचीन नाम.	नवीन नाम.	प्राचीन नाम.	नवीन नाम.
महोदय, कान्यकुब्ज.	—लखनौ आदिदेश.	मगध, कीकट, जरासन्धराज्य.	—गयाप्रदेश.
पाटलपुत्र, बौधराजधानी.	—पटना.	तमोलिप्त, मालनी.	तम्लोलुकदेश, कर्णद्वितीय राजधानी.
अंग, चम्पा, कर्णराजधानी.	—भागलपूर, राजमहल.		
कर्णराज्य	—आराप्रभृतिदेश.	पुण्ड्र	—मेदनीपुरप्रदेश.
		उपवंग	—मैमनसिंगप्रदेश.
वंग, गौड.	मालदह, मुरशिदाबाद, नदिया, कलकत्ता, जसोर, ढाका, पावना, बगुडा, राजशाही, फरीदपुर.	वर्द्धमान	—बर्दवान.
		सुह्म	—चाटगांव.
प्राग्ज्योतिष, कामरूप.	आसाम.	चेदि	—टिपुरा.

कुमारद्वीप—(अमेरिका) सम्बन्धी.

प्राचीन नाम.	नवीन नाम.	प्राचीन नाम.	नवीन नाम.
उत्तरकुमार	—उत्तरअमेरिका.	तलह	—ब्राजिल.
दक्षिणकुमार	—दक्षिणअमेरिका.	हिरण्यपुर	—पेरू.
मुनिदेश, तावस देश, ताम्रद्वीप.	—ग्रीनलेन्ड.		

इति भूगोलनामावली, भारत आदि ग्रंथोंसे निकालकर संग्रह किया.

॥ इति ॥